



कागा सब तन खाइयो,  
मेरा चुन चुन खाइयो मास,  
दो नैना मत खाइयो,  
इन्हें पिया मिलन की आस,  
नी मैं जाना .....,  
नी मैं जाना जोगी दे नाल ।

राझां राझां करदी नी,  
मैं आपे राझां होई,  
राझां मैं विच, मैं राझें विच,  
होर ख्याल न कोई,  
नी मैं जाना जोगी दे नाल ।

हाजी लोग मक्के नू जांदे,  
मैं जांदा तख्त हजारे,  
जित वल यार उत वल काबा,  
भांवे खोल किताबां चार,  
नी मैं जाना जोगी दे नाल ।



कहे भगवन तुम्हें पाकर,  
हृदय मंदिर में लाऊं मैं,  
करूं परदा मैं पलको का,  
तुम्हें अंदर छुपाऊं मैं,  
कहे साजन तुम्हें पाकर  
हृदय मंदिर में लाऊं मैं.....

तुम्हें फूलों में है पाया,  
तुम्हें अंगों में है देखा,  
उलझ जाते हो दामन से,  
तुम्हें कांटों में पाऊं मैं। कहे साजन.

हंसी बनकर लबों पर हो,  
खुशी दिल की तुम्हीं तो हो,  
छलक जाते हो आंखों से,  
अभी मिलना भी चाहूं मैं। कहे साजन.

अमर ज्योति हो तुम भगवन,  
तुम्हीं से है जगत रोशन,  
तुम्हीं बनते हो परवाने,  
अगर दीपक जलाऊं मैं ।  
कहे भगवन..



कौन कहता है कि, दीदार नहीं होता है,  
आदमी खुद ही तलबदार नहीं होता है,

तुम उसे प्यार करो, वो न तुम्हें प्यार करे,  
बेखबर इतना तो, करतार नहीं होता है।  
आदमी.....

तुम पुकारो तो सही, हृदय से इक बार उसे,  
देखना कैसे वो साकार नहीं होता है।  
आदमी .....

जब बुलाते हैं भक्त, अपनी खुदी को मिटाकर  
तो फिर भगवान से इन्कार नहीं होता है।  
आदमी.....

अगर तू अपनी खुदी को नहीं मिटाएगा,  
तो फिर भगवान का दीदार नहीं होता है।  
आदमी.....



क्या कहें कौन-सी दौलत है गुरु,  
मेरा जीवन, मेरी दुनिया, मेरी जन्मत है गुरु।

बनाया इसी ने जीवन हमारा  
अंग-अंग में है इसी का ही साया  
साया ही नहीं, काया है मेरी  
उपकार है इनका श्वांसों पर,  
मेरी बरकत, मेरी पूजा है गुरु, मेरा...

हम सबको इक प्यार से सींचा  
ना कोई ऊँचा, ना कोई नीचा  
महिमा ही नहीं, गरिमा है तेरी  
करे प्रेम शमा संग परवाना  
जन्मों-जन्मों की इबादत है गुरु, मेरा...

अंश में सारी सृष्टि समेटी  
सुख-दुख को सम करके दिखाया  
आँचल के तले, कई जीव पले  
वो नर नहीं, नारायण है,  
शव को शिव करने की ताकत है गुरु, मेरा...



क्या जाने दम कोई को यार,  
क्या जाने दम कोई  
सपने अंदर साजन मिलया,  
खुशियां भर भर सोई,  
उठ बाहर मैं नजर न आवे,  
मैं दूढन शहर सबोई। क्या जाने....  
चौले अंदर जो कोई बोले,  
साजन था मेरा सोई  
जिंदे नाल मैं नेहा लाया,  
मैं भी जोगिन होई। क्या जाने ....  
बुल्लेशाह नू शाह इनायत,  
शौक शराब बितोई,  
मैं भी पीवन मस्त जो थीवन,  
सांफो साफ जो होई। क्या .....  
सपने अंदर सेज सजाई,  
प्रीतम संग में सोई  
प्रीतम ने मैंने अंग लगाया,  
सुध बुध सारी खोई। क्या जाने.....



कुछ लेना न देना मग्न रहना

कबीरा तेरी झोपडी गल कटियन के पास  
जो करेगा सो भरेगा तू क्यों भयो उदास

पांच तत्व का बना है पिंजरा  
जा मैं बोले मेरी मैना, कुछ.....

गहरी नदिया नाव पुरानी  
खेवटिया से मिल रहना, कुछ.....

तेरा साहिब है तुझ माहीं  
खोल के देखो सखी नैना, कुछ.....

सब कुछ तेरे है धर माही  
आनन्द में तू मग्न रहना, कुछ.....

कहत कबीर सुनो भई साधो  
गुरू चरणों से लिपट रहना, कुछ.....



कान्हा खो गया दिल मेरा तेरे वृन्दावन में,  
मोहनां.....

ये जो मथुरा के तेरे ग्वाले हैं,  
बड़े सीधे हैं भोले भाले हैं,  
ऐसा अमृत भरा इनकी बातों में, कान्हा....

ये जो यमुना के तेरे धारें हैं  
इसमें लाखों ही पापी तारें हैं,  
ऐसा अमृत भरा इन धारों में, कान्हा....

ये जो मुरली की तेरी ताने हैं,  
इसके लाखों ही दीवाने हैं,  
कैसा जादू भरा, इन तानों में, कान्हा....

ये जो बरसाने वाली राधा है,  
पूरा करती ये अपना वादा है,  
कैसी करूणा भरी इनकी आंखों में, कान्हा....

ये जो मोहन है, मुरली वाला है,  
बड़ा नटखट है, बड़ा प्यारा है,  
कैसा तन, मन रंगा, इसकी बातों में, कान्हा....



कोई आन मिलाये, मेरा प्रीतम प्यारा ...  
हो तिस पे आप विक जायीं, मेरा ...

दर्शन हर देखण के ताई — हर  
कृपा करे तां सतगुरू मेले  
हर—२ नाम ध्याई .. मेरा प्रीतम ...

जे सुखदे तां तुझे अराध्ये  
दुख वी तुझे ध्याही  
जे भुख दे तां इती रजा  
दुख विच सुख मनाई — कोई आन..

तन मन काट—२ सब अर्पित  
विच अग्नि आप जलाई — कोई ...

पखा फेरी पानी ढोवां  
जो देवें सोई खाई  
नानक गरीब ढह पया द्वारे  
हर मेल लयो वडियाई — कोई ...





किया मैंने संतों से व्यापार  
किया मैंने साधो से व्यापार  
किया मैंने सतगुरू से व्यापार

हो मैं दे के नाम लिया चिंता दे आराम  
झूठा धन कर भेंट लिया है धन संतोष अपार

मैं—२ दे के तू—तू लिया है हाय—२ दे वाह—२  
भय कर भेंट मिली निर्भयता दान देकर दातार

छोटे घर के बदले मिला है घर सारा संसार  
पिछला घाटा पूरा करके नफा पाया है अपार

एक से प्यार कर मैंने जीता जगता सारे का प्यार  
सिर देके मैंने साजन पाया मुफ्त में मुक्तिद्वार



कलयुग विच तेरा अवतार हो गया  
सोहने स्वरूप अंदर, ओ मोहने स्वरूप अंदर  
दुखी जीवा उत्ते तेरा उपकार हो गया...

न्यारी ज्योत जगत विच एहां आई ए  
त्रिलोकी विच धूम मचाई ए हां मचाई ए  
कौन—कौन विच तेरा अवतार हो गया ...

बैठे प्रेम के भण्डारे खोलके हां खोलके  
देन्दे श्रद्धा ते भाव नाल तोल के हां तोल के  
प्रेम भक्ति वाला सच्चा व्यापार हो गया

शोभा सुन जीव शरणी आंवदे हां आंवदे  
पान्दे दर्शन ते खुशियां मनावदे हां मनावदे  
कौड़ी छड़ के ते हीरे दा व्यापार हो गया  
सोहने .....



गुड नालो इश्क मीठा ओए होए  
रब्बा लग ए सब नू जावे, गुड नालों इश्क मीठा ।  
मेरी भावे जिंद कढ लै ओए होए  
मेरे यार नू मंदा न बोली, मेरी भावे....  
रब ते रूसदा नहीं ओए होए  
रूसया यार मुश्किल नाल मनदा, रब ते ....  
दूरो दूरो वेखी जा ओए होए  
दूरो दूरो वेखी पर न छेडी, दूरो दूरो वेखी जा  
प्यार विच शर्ता नहीं ओए होए  
सिर घर तली गली मेरी आज्ञा, प्यार विच  
सिर चढ इश्क बोले ओए होए  
इश्क जनु जद हद तो बधदा, सिर चढ  
तू सूली भावे टंग ले ओए होए  
भावे लाख लगा ले पहेरे, तू सूली .....

तेरे बिना जीना नहीं ओए होए  
तेरे बिन जीना है खुदगर्जी, तेरे बिन  
ऐ जान लुटा दागे, ओए होए  
जे तू मेहर करे मेरे सांझया ऐ जान  
शराबियां दे पैसे बच गए ओए होए  
ओ सोहनिया अंखा विच अंखा पाके तकया शराबियां..  
तू किन्ना किन्हा सोहना लगदा ओए होए  
दिल करे साहिबा वेखी तैनु जावां, तू किन्ना...  
खैर तेरी मंगदी हां ओए होए  
दुआ न कोई होर कदी मंगदी, खैर .....

जददा सहारा मिलया ओए होए  
सतगुरू भुल गया मैनु जग सारा, जग दा .....  
तू मिलया खुदाई मिल गई ओए होए  
हुन न पावी तु कदी जुदाई, तू मिल्या....  
जडदो नगीने विच ओए होए  
पर तू चीज है ओ मेरे साहिबा  
जो रखी जावे सीने विच, जड दो....  
तेरे विच वारी वारी जांवा ओए होए  
चुन्नी नू रंग देवन वालेया साहिबा, तेरे तो .....  
ऐ नशा अनोखा है ओए होए  
जो है दर्द गली विच विकदा, ऐ नशा .....  
जद तक है ऐ जी ओए होए  
जी भर भर के पी ओए होए  
जद नहीं रहेगा तेरा ऐ जी कौन कहेगा पी, जद  
तू मिल्या ते काज हो गया ओए होए  
दर्शन जददा मिलया साहिबा, मेरा इलाज हो गया, तू  
सदा तेरी रजा रहे ओए होए  
न मैं रवां न मेरी कोई आरजू, सदा तेरी .....  
किसी नक कन विच हीरा ओए होए  
मैनु हीरेया नाल की है लैना, मेरे लई तू हीरा....  
कुर्बान साडी यारी है ओए होए  
असां तेनू याद बहुत है कीता,  
हुन तेरी बारी है, कुर्बान .....



गुरु ऐसो जीया में समाये गए रे,  
के मैं तन मन की सुध बुध गवां बैठी,  
हर आहट पे समझी वो आ गया रे,  
झट राहों में पलके बिछा बैठी ।  
गुरु ...

गुरु ज्ञान की जब पुरवइया चले,  
तो विवेक की खुल गई किवड़िया,  
ऐसा अनुभव हुआ, गुरु हृदय बसे,  
झट बाहों के हार चढ़ा बैठी।  
गुरु ...

मैंने गुरु रज से मांग अपनी भरी,  
श्रद्धा भक्ति से तन मन सजाया,  
इस डर से माया की नजर न लगे  
झट ज्ञान का कजरा लगा बैठी।  
गुरु ....



गुरू ब्रह्मज्ञान वाले तीर मारदे,  
नी सइयो सचमुच  
जिन्हूं लगदे, उन्हादे मन नहीं डोलदे,  
नी सइयो सचमुच

गुरू अचरज युक्ति बतावदे, हां बतावदे  
विच गृहस्थ दे मस्त बनावदे, हां बनावदे  
वो तो चिद—जड ग्रंथी नू तोड दे,  
नी सइयो सचमुच

इक तमाशा है ये दुनिया, ये दुनिया,  
जिसदा अंत न पाइया मुनिया ऋषियां,  
ज्ञानी उसदी गहराई विचो रोल दे,  
नी सइयो सचमुच

ब्रह्म विद्या दा गहना पा लो, हां पा लो,  
राग द्वेष नू मार निकालो, हां निकालो,  
फिर बोलदे जीव वना विच शेर बोलदे,  
नी सइयो सचमुच



गुरुदेव मेरे घर आए, मिल गईयां मोज बहारा,  
मैं क्यों न वारी जावां, मिल गईया मोज बहारा।

ऐदी मीठी मीठी वाणी,  
ऐदा रूप है नूरानी,  
ऐदा मुखडा ऐवें चमके,  
जीवे चमके चन असमानी। मैं क्यों .....

ऐदे वचना उते चलके,  
मैं जीवन सफल बनावा,  
नाल साध संगत विच बैके,  
मैं भव सागर तर जावां। मैं क्यों .....

मैं दर तेरे ते आवां,  
मुंह मंगिया मुरादां पावां,  
तेरा दर्श मनोहर पाके,  
मैं दिलदा हाल सुनावा। मैं क्यों .....

मैं इक वारी तेरे तो मंगा,  
मेरे सतगुरू दिलवर जानी,  
मैनू चरणां दे विच रखलो,  
जब तक मेरी जिदंगानी। मैं क्यों .....

ऐ ऊंचें सिहांसन सजदा,  
ऐनू वेख के मन नहीं रजदा,  
तेरे दर ते आके जमाना,  
है खाली झोलियां भरदा। मैं क्यों .....



गुरू चरणा दे नाल मथा जदो टेकया,  
नूरी नूरी अखा नाल गुरू मैनु वेख्या,  
तन मन मेंरा ठरया नी, जदो नशा नाम दा चढया जी —२  
भोला भाला मुखडा, जलवा नूरानी चेहरा है,  
दर्शन करके मै, हो गई दीवानी है,  
रूप न लख्या जाये जी, जदो नशा नाम दा चढया जी  
सोना मन मोना मेरे दिल विच वसदा,  
दिल लुट लैदा जदो, होले होले हसदा,  
ऐसा जादू चढया नी, जदो नशा नाम दा चढया जी  
नाम जपन दी रीत सिखादे ने  
सुरती शब्द दे, नाल मिलादें ने  
इक—इक दे विच रख दिखादें ने  
भव सागर तो तरया नी, जदो नशा नाम दा चढया जी  
वेख गुराजी दी उचीं करनी,  
दासन, दासी डिग पयी चरणी,  
गुरू हाथ मेरे दा फडया जी, जदो नशा नाम दा चढया जी  
प्रेम तेरे विच हो गई चूर जी,  
जेडे पासे वेखा मैनु दिसदे हजूर जी,  
जदो पला उसदा फडया जी,  
मैनु नशा नाम दा चढया जी.....  
नूरी नूरी मुखडे ते प्यारी प्यारी लाली  
रोज दशहरा साडी रोज दिवाली है  
रूप न लख्या जाय जी, जदो नशा नाम दा चढया जी





गुरा दे घर आन वालयां दी बेडी कदे न अडी  
ओ बेडी कदे न अडी भव सागर तरी गुरां दे घर ..

जदो राना ने मीरा नू सर्प भेजया  
मीरा रख भरोसा गल पा छडया,  
ओ बन गई—३ वो तो फूलां दी लडी। गुरां दे घर..

जदो राना ने मीरा नू जहर भेजया,  
मीरा रख भरोसा ओनू पी छडया,  
ओ पी गई—३ जहर जरा ना चढी। गुरां दे घर ...

जदो राना ने मीरा नू घरों कडया,  
मीरा रख भरोसा दिल नइयों छडया  
ओ टूर गई—२ वृन्दावन दी गली। गुरां दे घर ....

जेडे गुरां दे द्वारे उते आजादे  
मुंह मंगिया मुरादा पाव दे ने  
वो तो झोलियां भर ले जादे ने  
ओ बन गई—३ वो तां मुक्ता दी लडी। गुरां दे घर..



गुरू मेरी पूजा गुरू गोविन्दा  
गुरू मेरा पारब्रह्म, गुरू भगवन्ता।

गुरू मेरा देव अलख अभेद  
सर्व पूज्य चरणं गुरू देव।

गुरू मेरा ज्ञान गुरू मेरा ध्यान  
जाको सिमरे मिटे अज्ञान।

गुरू बिन अपना नहीं कोई और  
सतगुरू बिन नहीं कोई ठौर।

गुरू मेरा रत्न असली वतन  
गुरू के सत्य वचन।

गुरू का वचन हृदय का हीरा  
परख—परख मिटओ पीड़ा।



गुरू ज्योत से ज्योत जलाए  
हर रूप में आए नारायण हरि ओम्.....  
गुरू करूणा कल्याण ही जाने—२  
जाति कुल और भेद न माने—२  
हर सत्य को वो अपनाए, हर रूप में ....  
अविद्या मिटे गुरू वचनों से—२  
आनन्द अनुभव हो दर्शन से—२  
हर घर में अलख जगाए, हर रूप में .....  
योग शेम का भार उठाए  
अपना सुख और चैन लुटाएं  
हर जीव को ब्रह्म बनाए, हर रूप में ....  
साथ न छोड़े, हाथ न छोड़े,  
झूठी कल्पना बंधन तोड़े,  
साईं सम सहना सिखलाए, हर रूप में .....  
शरणागत हो कुछ नहीं करना  
गुरू वाणी में जीना मरना,  
साईं अपना लक्ष्य बनाए, हर रूप में ....  
जो चाहोगे होने लगेगा,  
ध्यान भजन में लगने लगेगा,  
साईं गुरूवर को अपना लो, हर रूप में .....  
अनुभव वो जो सुना ना देखा  
जन्म—मरण का मिट गया लेखा  
जब से गुरू अपनाए, हर रूप में .....



गमां वाला चरखा, ते दुखां दियां पुणियां  
ज्यों—२ कतती जावां, ते होण पाइया दूरियां  
कत सकती ना ऐ बुलिये, कुडिये  
नी दे, तेरियां पुणियां ते भरियां चिंगार

मक्के गया गल मुकदी नाही,  
भावे सो—२ जुमां पड़ आइये।  
गंगा गया गल मुकदी नाही  
भावे सो सो गोते खाइये।  
बुल्लेशाह गल ताईयों मुकदी—२  
जद मै नू दिलों गवाइये।

इबादत कर, इबादत करने दे नाल गल बनदी ए  
किसी दी आज बनदी ए, किसी दी कल बनदी ए  
पढ—२ इलम किताबें सबे, नाम रखा लया काजी  
मक्के जा हज गुजारा, (नाम रखा लया हाजी/काजी)—३

पर—अजे तू बुलया कुछ नही बनया, जे तू  
(यार न कीता राजी)—२



गल सुन मनवा मेरे, वे सतगुरू अंग संग तेरे  
वे लाई चरणी तेरे, वे गल सुन मनवा मेरे

वे गुरू मेरे हीरे मोती, के उस थाह जगदी  
ज्योति—२, वे दर्शन पांदे लोकी,  
वे गल— —

वे गुरां दे दर ते जाइये, के चरणी शीष  
झुकाइये—२, वे रब नू सामने पाइये,  
वे गल—

वे गुरां दिया उचियां थावां, के संगतां देन  
दुवायां—२, वे गुरां दे द्वारे जावां,  
वे गल—

वे गुरू मेरे अंतर्दामी, के सच्चे मन नाल  
ध्यावी—२, वे गुरां दीयां मेहरा पावीं,  
वे गल—

वे ओ थां करमा वाली, के जिथे संत पधारे—२  
वे महिमा रब दियां गांवे, वे गल सुन मनवा मेरे



गली प्रेम वाली अज कतल गाह बन गई,  
जान देवन दी साडी वी सलाह बन गई।

असां शाम दे द्वारे उते डेरा पा लया,  
लोक लाज वाला पल्ला नी मैं मुंह तो ला लया  
नी मैं बृज दे ग्वाले नाल प्यार पा लया  
मेरी जान गई ऐदी ते अदा बन गई, गली .....

असां होली अज खेलनी मुरारी नाल जी,  
रंग रंगे जाने रंगले ललारी नाल जी,  
होनी हार जीत प्रेम दे पुजारी नाल जी,  
मेरी चुन्नी ते रंग दी ग्वाह बन गई, गली .....

असां देखने हुजूर दे गरूर केडे ने  
गली प्रेम वाली आन दे दस्तूर केडे ने  
कत्ल करन विच कातिल मशहूर केडे ने  
मेरी चुन्नी ते रंग दी ग्वाह बन गई, गली .....



गा मेरे मन गा—२, गा हरि गुण गा—२  
मन में बसाएगा नाम हरि का—२  
गा मेरे मन गा .. आ ... ओ...

प्रियतम है अब मिला, बनता गया सिलसिला,  
जीवन है अब खिला,  
बजे मन में ये वीणा, प्रभु प्रेम में जीना  
अमृत ही है पीना, आहा.. चैन कहीं अब ना .  
गा मेरे ...

प्रियतम अब छा गया, हर दिल को भा गया,  
मेरा मन अब गा गया, आ.. हो...  
रही कोई न बात है, तेरा मिल गया साथ है  
तेरे हाथ में हाथ है, तो प्रेम जा अब मिला  
गा मेरे ....

हर रंग में तू है, मेरे संग में तू है  
अंग—२ में तू है आ .. हा.. ओ .. हो..  
रोम—२ गाये, हर श्वांस गाये तू ही तू  
हर हाल में तू ही तू  
हर तरफ तू ही बसा ... गा मेरे ....



गुरु ने दिया आत्म ज्ञान,  
बना मन मंदिर आलीशान  
गुरु ने जल में, गुरु ने थल में  
गुरु ने डाल के हर पातन में  
लखया अपना रूप महान

गुरु ने प्रेम अमृत बरसाया  
कर्त्ता अहं का भाव मिटाया  
कराया निज स्वरूप का ज्ञान

गुरु ने सारा भ्रम मिटाया  
बेअंत का अंत समझ तब आया  
घट—२ वसदा राम ही राम

गुरु ने अजर—अमर बतलाया  
बंधन से मुक्त तभी हो गया  
मिला गुरु चरणों में आनन्द धाम।





गुरां इक देह बुझाई  
सबनां जीआ दा इको धाता, सो मैं

यापेया नां जाए कीता ना होये  
आपे आप निरंजन सोये  
जिन सेवेया तिन पाया मान  
नानक गाविये गुणी निधान। गुरां..

गाविये सुनिये मन रखिये भाओ  
दुख पर हर सुख घर ले जाओ  
गुरूमुख नादं, गुरूमुख वेदे  
गुरूमुख रैया समाई  
गुरू ईसर गुरू गोरख ब्रह्मा  
गुरू पारवती माई  
जे हो जानां आखां नाहि,  
कहनां कथन नां जाई।  
गुरां .....



चारों पासे सुख होवे, किसे नू न दुख होवे,  
तू आवीं बाबा नानका, ऐ हो जईयां

ऐहो जइयां खुशियां ले आई बाबा नानका—२  
जिदे घर छांव हो नहीं, उस घर तेरा रूख होवे  
तार—२ जुड़ी रहे, न ही भुल चुक होवे  
चारों पासे ठंड बरसाई बाबा नानका,  
ऐहो—

किसे घर विच बाबा, कोई न कलेश होवे  
सब घर विच तेरी पूजा ही हमेशा होवे  
ऐहो जया रस्ता विखाई बाबा नानका,  
ऐहो—

माला तेरे नाम वाली सबना ने फड़ी होवे,  
मीरा वांगू मस्ती वी, सबनी नू चढ़ी होवे,  
ऐहो जयी कोई कला वी, वखाई बाबा नानका,  
ऐहो—

तेरे चरणां ते दाता, हर कोई करीब होवे  
ऐसा ना कोई होवे जिनू प्यार न नसीब होवे,  
सबनां दी झोली भर जाई बाबा नानका,  
ऐहो—



चरणां विच बिठाया ऐ, चरणां विच रूल जाना,  
कीता है जो मेरे ते, उपकार न भुल जाना।

तू मान निमाने दा, बिगड़े दा सहारा तू  
असी पल—२ भुलदे हां, ते बक्शनहारा तू  
तेरी इक—२ तकनी दा, किस तरह मैं भुल पावां। चरणां..

असी गलियां विच रूलदे सां, तुसां गल नाल लाया है—२  
सुखा नू तरसदे सां, तुसां तख्त बिठाया ऐ  
पाके तेरी रहमत, किथे तेनूं ना भुल जावां। चरणां.....

निका जया कतरां हां, सागर दी सार नहीं  
नहीं मेरी कोई हस्ती, आंदा सत्कार नहीं  
जीवन ऐ बना ऐसा, तेरे चरणां ते तुल जावां। चरणां...

हर पल गुरू तेरे अगे, अरदास ऐ कहदे हां  
हुन तोड निभा देवीं, एक आस ऐ रखदे हां,  
सतगुरू तेरी याद कदी, भुल के वी न भुल जावां। चरणां.



चरण कमल तेरे धोये—२ पीवां मेरे सतगुरू दीन दयाला  
सिमर—२ सिमर नाम जीवां, तन मन होये निहाला

पार ब्रह्म परमेश्वर सतगुरू, आपे करने हारा  
चरण कमल तेरे सेवक मांगे, तेरे दर्शन तो बलिहारा  
चरण कमल...

मेरे राम राय ज्यूं रखाये, ज्यों रखायें तिहु रहिये  
तु भाव ता नाम जपावे, सुख तेरा दीता लहिये  
चरण कमल...

मुक्त भुगत जुगत तेरी सेवा, जिस से तू आप कराइये  
ताहां वैकुण्ठ जहां कीर्तन तेरा तू आपे श्रद्धा लाइये  
चरण कमल...

कुर्बान जाये उस बेला सुभागी, जब तुमरे द्वारे आइयां  
नानक कहे प्रभु भये कृपाला सतगुरू पूरा पाइयां  
चरण कमल...



जीवन की धड़िया वृथा न खो,  
ओम भजो हरि ओम भजो।

ओम ही सुख का सार है,  
ओम ही जीवन आधार है,  
वृत्ति न इसकी मन से तजो। ओम भजो....

साथी बना ले ओम को  
मन में बिठा ले ओम को  
चादर लंबी तान न सो। ओम भजो.....

चौला यही है कर्म का  
करने को सौदा धर्म का,  
धोना जो चाहे जीवन को धो। ओम भजो....

मन की शांति संभालिए,  
भक्ति की ओर डालिए,  
इसके सिवा मार्ग न कोई। ओम भजो.....

घट में हरि पहचान ले,  
श्वासों की कीमत जान ले,  
नरतन को पाना हो न हो। ओम भजो.....



जरा तो इतना बता दो भगवान  
लगी ये कैसी लगा रहे हो,  
मुझी में रहकर मुझी से अपनी,  
ये खोज कैसी करा रहे हो।

हृदय भी तुम हो, तुम्ही हो प्रीतम,  
प्रेम भी तुम हो, तुम्हीं हो प्रेमी,  
पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर,  
तुम्हीं जो मन में समा रहे हो। जरा.....

प्राण भी तुम हो, तुम्हीं हो संपदन,  
नयन भी तुम हो, तुम्हीं हो ज्योति,  
तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को दूढ़,  
नयी ये लीला बता रहे हो । जरा.....

भाव भी तुम हो, तुम्हीं हो रचना,  
संगीत भी तुम हो, तुम्हीं हो रसना,  
स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊं  
नयी ये रीति बता रहे हों । जरा.....

कर्म भी तुम हो, तुम्हीं हो करता,  
धर्म भी तुम हो, तुम्ही, हो धरता,  
निमित्त कारण मुझे बनाकर,  
ये नाच कैसा रचा रहे हो। जरा.....



जो डूबे तेरे प्यार में,  
न डूबे संसार में,  
कि सच्ची तेरी प्रीति है,  
ये ही तो तेरी रीति है  
आए जो तेरे द्वार में, ना डूबे संसार में।  
आए जो तेरी छांव में,  
बैठे जो तेरी नाव में?  
खोए न संसार में,  
ना डूबे मझदार में । कि सच्ची ...  
फैलाना खुशबू सदा,  
फूलों का यही सिलसिला,  
घिरे हो चाहे खार में,  
ना डूबे संसार में । कि सच्ची .....  
मिल ये रह बर गया,  
अब तो मैं तर गया,  
जा पहुंचा उस पार में,  
ना डूबे संसार में। कि सच्ची .....



जिनूं चन्न चन्न कहके वाजां मारदी फिरां  
जिदे हर साह दे उतते जिंद वारदी फिरां  
मैनू मेरी जिंदगी का दा हुण, ओइयो ही सहारा लगदा,  
खैर औदी जान दी मांगा, जेडा जान तो वी प्यारा लगदा।

औदे बिना चैन इक पल भी न आवे मैनू  
हर वेले राहां वल तकदी फिरा  
चित्त नहियों करदा, ना खान नूं, न पीन नूं  
याद तेरी विच पइयां मरदी  
बांगा ते बहारा विच वी ओदे बिन न गुजारा लगदा।

जिनूं .....  
मुश्किल हो गया है, तेरे बिना जीना हुण  
तेरे बिछोइयां ने खा लया  
वैधा ते हकीमां कोल कोई न इलाज ऐदा  
रोग जेडा चंदा, मै ला लया  
कमली जई होई फिरदी, हुण कित्थे न गुजारा लगदा।

जिनूं .....  
सांब—सांब रखां तेरे खत मेरे सोणया  
वे जदौं दिल करदा मै पढदी  
तूं की जाने दसी मैनू मेरे सतगुरू प्यारया  
प्यार तैनू किन्ना हो मै करदी  
मंजिल मै तनू जानया  
मैनू तू ही है किनारा लगदा।      जिनूं .....





जी मैं तेरा तेरा तेरा सच्चे बादशाह  
रख लो गरीब जान के

पखा फेरा पानी ढोवां, वो जो देवे सा पावां  
रख लो गरीब जान के

नानक गरीब है पया द्वारे, हरि मेल लयो वडियाई  
रख लो गरीब जान के

सकल द्वार को छोड के, पयो द्वारे तेरे  
रख लो गरीब जान के

बांह गयो की लाज राख, गोविंद दास तुम्हारे  
रख लो गरीब जान के

उच्च अपार बेअंत स्वामी, कौन जाने गुण तेरे  
रख लो गरीब जान के

गावत उधरे सुनते उधरे, विनसे पाप घनेरे  
रख लो गरीब जान के



जुडी रहे जुडी रहे, मेरी तार गुरां नाल जुडी रहे  
जुडी रहे .....

जद तारां नाल तार है जुडदी  
सुरति अपने घर वल मुडदी  
हो जादा दीदार, गुरां नाल जुडी रहे .....

तारां नू तुसी जोड के देखो  
सुरति अंदर मोड के देखो  
तवानु मिल जाये करतार, गुरां नाल.....

जद तारां नाल तार है जुडदी  
अंदर ही अंदर मुरली वजदी,  
मधुर—२ झंकार, गुरां नाल जुडी रहे .....

सतगुरू इतनी कृपा कर दो  
ऐ झोली भक्ति नाल भर दो  
मेरे सतगुरू दीन—दयाल, गुरां नाल .....



जे तू बेलियां, तन मन दे नाल सेवा करदा जावेंगा  
सतनाम वाहेगुरू करदा भवसागर तो तरदां जायेगा  
सतनाम वाहेगुरू.....

सेवा है स्वर्गा दी पोढी, कर सेवा लखवार  
बिना गुरां दी सेवा कीते, नइयो मिलदा करतार  
जे बाबे दे, हुक्म नू साथी मथे धरदा जावेगा  
सतनाम वाहेगुरू.....

वेला बैके फेर न ऐवें, तू माला दे मनके  
गुरां दी महिमा तकनी ऐ ता, तक ले चाकर बनके  
जे तू हानियां, गुरू चरणां विच, शीश झुकांदा जावेगा  
सतनाम वाहेगुरू.....

साला दे पिछो मिलयाई, सेवा दा ऐ मेला  
ख कहदां हुन फिर लगनाई, संगता दा ऐ मेला,  
जे झोली विच, सेवा वाला, मेवां पादां जावेगा  
सतनाम वाहेगुरू.....

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे  
एक नूर से सब जग उपजे, कौन भले कौन मंदे  
जे झोली विच सेवा वाला, मेवा पांदा जावेगा।  
सतनाम वाहेगुरू.....



जे तूं ना फड़दा साडी बांह, असां रूल जाना सी  
सानू किदरे ना मिलदी थांह, असां.....

पन्तया बांग असी दर—२ रूलदे सी  
गल—२ ते अंखा विचों हंजु रूलदे सी, सानू.....

इक नजर जद मुर्शिद दी होई ए  
ए खाक दी ढेरी जा अम्बरां नू दौड़ी ए  
तूं लान्दा ना चरणी असां रूल.....

ना हंसदी खेड़दी जिंदगी होणी सी  
इस जीवन दी कुछ होर कहानी होणी सी  
तेरी मिलदी ना ठंडी छा, असा .....

लख ढोकरा खाके जग दीया, दर तेरे आ बैठी  
मेरी तोड निभा हुण प्रीत तेरे नाल ला बैठी  
जे तू देंदा ना खुशियांए असां.....

लखां होन जुबाना, गुण तेरे नहीं गा सकदे  
सतगुरू तेरा कर्ज कदे नहीं ला सकदे  
जे तू गल नाल ना लांदा, असां .....

इक नजर खाली सतगुरू दी जी हो जाए  
औदी लख—चौरासी मिंटा विच कट जाए  
जे तू गल—नाल न लांदा असां रूल जाना सी  
सानू किथे न मिलदी थांह असां रूल जाना सी.....



जब गम का गुबार दिल से—३ (मिट्टा)  
तो मस्ती दिल में आने लगी  
दूर हुआ फिर दुख का अंधेरा  
इस घर में रोशनी आने लगी  
झूम उठा फिर दिल ये मेरा  
और लब पर हंसी सी आने लगी  
दूर हुआ फिर दुख का अंधेरा,  
इस घर में रोशनी आने लगी।

ये मस्ती की हालत छाई हुई है  
हर दिल में खुशी समाई हुई है  
देखा है जब से भ० को दिल में  
हर जगह उसकी मूरत समाई हुई है  
करता हूं प्यार सत० इसलिये  
हर दिल में तुझको पाया हुआ है  
हर दिल में तू समाया हुआ है  
ये मस्ती की हालत छाई हुई है  
हर जगह उसकी खुशबू समाई हुई है।



जे इक तेरा प्यार, मेरे दिलदार, सावल यार  
मैनु मिल जाये, मैं दुनिया तो की लेना—२

सारे छड़े सहारे तेरा दर लिया मल  
तेरे बिना न गुजारा, मेरी सखी सुन गल  
ये तेरा दरबार, ओ मेरे यार, मैंनू मिल जाये,  
मैं दुनिया तो की लेना—२

तेरे चंद जये मुखड़े तो वारी—२ जावां  
तेरे चरणां विच सर रख, मैं मर जावां  
ये तेरा दीदार, ओ मेरे यार, मैनु मिल जाये  
मैं दुनिया तो की लेना——२——

मेरी अंत समय विच फड़ लई बांह—२  
मेरी इस वृंदावन विच थोड़ी जई थांह—२  
ये तेरा उपकार, ओ मेरे यार,  
मैनु मिल जाये,  
मैं दुनिया तो की लेना——

ओ बांकेयार——



जैसे राधा ने माला जपी श्याम की,  
मैंने ओढ़ी चुनरिया तेरे नाम की,  
तेरे नाम की ओ पीया, तेरे ही नाम की,  
जैसे—

प्रीत क्या जुड़ी, डोर क्या बंधी,  
बिना जतन, बिना यतन, हो गई मैं नयी  
बिना तोल की मैं बिकी, बिना दाम की—  
जैसे—

क्या तरंग है, क्या उमंग है,  
मोरे अंग—र रचा, पी का रंग है,  
शर्म आये कैसे कहूं, बात श्याम की—  
जैसे—

पा लिया तुझे, पाई हर खुशी,  
चाहू बार—र चढ़ू तेरी पालकी,  
सुबह शाम की ये प्यास बड़े काम की—  
जैसे—



जेड़े इश्क तेरे विच रंगे नें  
ओ चंगे ने ओ चंगे ने ...

नित यार दा मलमा पढ़दे ने  
ओ यार नू सजदा करदे ने  
ओ इश्क दी अग विच सड़दे ने  
ना मौत कोलों ओ डरदे नें  
भावे सूली उते टंगें नें .. ओ ...

जेड़े रोगी अपने यार दे ने  
हंस रो के वक्त गुजार दे नें ..  
जिंद जान सजन तो वारदें नें ...  
ओ जिति बाजी हारदें नें ...  
ओ फिर—२ लेंदे पंगे नें, ओ ...

ओ दिल दिया दिल विच रखदें नें  
ना पीढ़ किसे नू दसदे नें  
कदी रेंदें ने कदी हंसदे नें,  
ओ वांग पपीहा रटदें नें...  
दुख दर्दा विच वी चंगे ने .. ओ ...





जो तू है सो मैं हूं, जो मैं हूं सो तू है  
ना कुछ आरजू है, न कुछ जुस्तजू है।

बसा राम मुझमें और मैं राम में हूं  
ना इक है ना दो है, सदा तू ही तू है।

उठा जग की माया का परदा ये सारा  
किया गम—खुशी ने भी मुझसे किनारा

जुबा को न ताकत न मन को रसाई  
मुझे मिल गई है मेरी बादशाई

मिला जब से हमको गुरु का सहारा  
किया मौत ने भी है मुझसे किनारा



जो मस्ती की मस्ती को पहचानता है  
वही मस्त रहना भी खुद जानता है।

सहारा मिला जिसको आलम गुरू का  
वह खुद ही खुदी को खुदा जानता है।

ये सब जी रहे हैं तेरे ही रहम पर  
तू रोते हुए को हंसा जानता है।

तुम्हें कुछ भी बनना बनाना नहीं है  
जो तू है उसे प्रभु जानतके । है।

खुदा तेरा तुझे से जुदा ही नहीं है  
असल भेद सारा तू ही जानता है।



तू तो डूबा हुआ तर जायेगा  
प्यारे ओम ओम गाये जा  
बंदे मत कर किसी की बुराई,  
कौन देगा ये झूठी गवाई  
हरि पूछेगा क्या बतलाएगा । प्यारे ओम ....  
पंछी मर कर भी सौ काम आये,  
तेरा नामो निशान मिटा जाए,  
फिर अंत समय पछताएगा, प्यारे ओम ..  
ओम नाम का भर ले खजाना,  
अपना जीवन सफल बनाना,  
आत्म मस्ती में फिर झूम जायेगा प्यारे ओम..  
राम नाम की महिमा है भारी,  
अहिल्या पत्थर से बन गई नारी,  
तू भी गाता हुआ तर जाएगा। प्यारे ओम.  
ओम नाम की ऊंची दीवारें,  
संसार के झूठे सहारे,  
संग साथी न कोई जाएगा, प्यारे ओम .....  
ओम नाम से प्रीति लगा ले,  
सतसंग से नाता बढा ले,  
फिर हर पल तू मुस्कराएगा प्यारे ओम ...



तेरया चरणा नाल मेरा जो प्यार है,  
होर वधे सतगुरू होर बधे  
तेरया वचना दी जगी दिल विच प्यास है  
होर वधे सतगुरू होर वधे।

दिन रात मेरे सतगुरू मैं तेरी पूजा ही करां  
तेनू याद सदा रखा, न दिल विच इना रखा,  
जन्मा जन्मा दा मेरा जो प्यार है होर वधे .....

ओ काम कराई तू जो तेरे मन नू भा जाए  
ओ गल गराई तू जो तेरे कम विच आ जाए  
संता नाल नाम वाला मेरा जो प्यार है होर वधे .....

मन तेरे विच रहे, तू श्रद्धा प्यार नू जगा,  
बस तेरी याद रहे, ऐसी अगन तू लगा,  
कदी धटे न सतगुरू तेरे नाल जो प्यार है होर वधे ....

तेरे दर ते जो मेरा कदी एतबार न धटे,  
एना संता दा दिल विच जो है सतकार न धटे,  
तेरे सतां दा सोडा परिवार है होर वधे .....

सिर रखया रहे चरणा, दास ही दास ही रखी,  
मैं तेरी हा सतगुरू, तू अपने पास ही रखी,  
अपने भक्ता नाल, तेरा जो प्यार है होर वधे .....



तेरे दर ते आ गईयां दर छडया नहीं जांदा,  
पल्ला फडया तेरा दाता, पीछे हटया नहीं जांदा।

बिगडी तकदीरां नू तुसी आप संवारदे हो,  
हथ दे के कशती नूं तुसी पार लगादे हो,  
ए जीवन हुन मेरा, चरणा विच लग जाये।

पल्ला.....

ए जाम मोहब्बत दा, इक वार जो पी लेंदा,  
भुल जादें ने गम सारे, मस्ती विच जी लेंदा,  
ए मस्ती उतर दी नहीं, नशा चढ के उतर जांदा।

पल्ला.....

तस्वीर तेरी दाता, मेरे दिल विच वस गई ए,  
मैं कढ ना सकदी हां रोम—रोम विच वस गई ए  
जदों तारां खडकदियां ने साथो रूकिया नहीं जांदा।

पल्ला.....

ऐ प्रेम दा सौदा ए, सिर धड दी बाजी ए,  
असां दुनिया तो की लैना साडा सतगुरू राजी ए,  
असां दिल विच वसा लिया, सोथो कडिया नहीं जादां।

पल्ला.....



तुम शरणाई आया ठाकुर,  
तुम शरणाई आया  
उतर गया मेरे मन का संशय,  
जब तेरा दर्शन पाया, ठाकुर—२।

दुख नाटे सुख सहज समाए,  
आनंद—२ गाया, ठाकुर—२।

अनबोलत मेरी वृथा जानी,  
अपना नाम जपाया, ठाकुर—२।

बांह पकड कढ लीनी आपने,  
गृह अंध कूप ते माया, ठाकुर—२।

कहे नानक गुरू बंधन काटे,  
बिछडत आन मिलाया, ठाकुर—२।



तुम्हें दिल्लगी भूल जानी पड़ेगी,  
मोहब्बत की राहों में आकर तो देखो,  
तडपने पे मेरे ना फिर तुम हंसोगे,  
कभी दिल किसी से लगाकर तो देखो  
जमाने को अपना बनाकर तो देखो  
हमें भी तो अपना बना के तो देखो  
होठों के पास आए हंसी, क्या मजाल है  
ये दिल का मामला है कोई दिल्लगी नहीं.....  
जख्म पे जख्म खाकर भी, अपने लहू के घूंट पी  
आह न कर लबों को सी, इश्क है ये दिल्लगी नहीं....  
कुछ खेल नहीं है ये, इश्क भी आग है,  
पानी न समझ, ये आग है आग  
खूब रूलाएगी ये दिल की लगी  
खेल ना समझो ये लगी है दिल की लगी। तुम्हें...  
ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लिजिए  
इक आग का दरिया है बस डूबते जाना है । तुम्हें..  
वफाओं को हमसे शिकायत नहीं है  
मगर इक बार मुस्करा कर तो देखो  
जमाने को अपना बनाकर तो देखो  
हमें भी तुम अपना बनाकर तो देखो, तुम्हें.....  
खुदा के लिए छोड दो अब ये पर्दा  
मुख से नकाब हटा कर तो देखो, तुम्हें.....



तेरे बिना ए दिलदार  
हाय मेरा दिल नहीं लगदा  
प्रभुजी मेरा दिल नहीं लगदा  
गुरुजी ..... प्रभुजी .....

ओ सपनों में आने वाले, निंदिया चुराने वाले  
चैन चुराने वाले, रातों को जगाने वाले  
सांवरिया सरकार, हाय मेरा दिल नहीं .....

ओ, दर्शन की अखियाँ प्यासी  
दिखला दो झलक जरा सी  
दर्शन का हूँ अभिलाषी, सुनलो ऐ घट-घट वासी  
ओ, सुन लो मेरी पुकार, हाय मेरा दिल नहीं .....

मोहन मुरलिया वाले, जीवन है तेरे हवाले  
सुन लो मेरे दर्द के नाले, मुझ को भी गले लगा ले  
ओ, तडफे मेरा प्यार, हाय मेरा दिल नहीं .....

छिप गए कहां प्राण प्यारे, भक्तन के नैनन तारे  
तेरे बिन नयन विचारे, तडफे दिन-रात हमारे  
ओ पागल के यार, हाय मेरा दिल नहीं .....





तेरे प्रेम में, विश्वास में, और मन रहे तेरे  
प्यार में, मेरे सतगुरू—२—२—२  
तेरा साथ है मेरी जिदंगी—२  
तेरा सजदा मेरी बंदगी—२  
रहे मन में तेरी ही मूर्ति—२  
और मन रहे तेरे साथ में, मेरे.....  
हृदय में हो सदभावना —२  
किसी भाव का अहं न हो—२  
रहूं छल कपट से दूर मैं—२  
शीतल रहूं हर हाल में — मेरे.....  
तू जो मुस्कराया चमन खिला—२  
हर राय हसीं जीवन खिला—२  
हुआ जब से तेरा ये कर्म—२  
जन्नत है मेरे पास में — मेरे.....  
तेरा नूर साया बहार का—२



तू माने या ना माने दिलदारा  
असां ते तेनू रब मनया  
दसो होर केडा रब दा द्वारा — असां ते तेनू .....  
तुझ बिन जीना भी क्या जीना  
तेरी चौखट मेरा मदीना . २  
नहीं और कहीं सजदा गवारां — असां ते तेनू ....  
जब इस तन दी खाक उडाई  
तब इस इश्क दी मंजिल पाई  
मेरी सांसो का बोले इक तारा — असां ते तेनू ....  
तू मिल्या ते मिल गई खुदाई वे  
हथ जोड के मैं कोल तेरे आई वे  
मैं तां मर जांगी, ओ मैं तां मर जांगी  
न अख मेरे जो मोडी — असां ते तेनू .....  
दिता जदो दा तूं मेनू ऐ सहारा  
मैं तां भूल गई आं जग सारा  
ऐ हो खुशी है मैंनू बहुतेरी — असां ते तेनू .....  
दसों होर केडा रब ता द्वारा असां ते तेनू .....  
ओ किते होर होवे रब दा द्वारा .....  
ओ कहीं होर नहीं सजदा गवारां,  
नहीं ओर कहीं सजदा गवारां असां ते तेनू .....



तेरे दर आके गुरूजी, हरि ओम गाके गुरूजी,  
रब नाल होइया मुलाकातां...—२, तेरे दर....

अंदर होवां बाहर होवां, गुरू मेरे नाल वे  
सखियों मैं की—२ दसां, ऐना दे कमाल वे,  
के हुन तां शाम सवेरे, ने दिल विच सतगुरू मेरे,  
करदे ने मेरे नाल बातां, तेरे दर....

मीरा वागूं, धन्ने वागूं, नाल मेरे हंसदे  
रोम—२ विच मेरे सतगुरू वसदे,  
के चरणा दी धूल जो पावे, कदी ना शीश उठावे  
पा जादा कीमती सौगातां, तेरे दर....

कीमती है हीरा लबा, रखा साम्भ—२ के,  
कुर्बानि ए रूह होंदी, सतगुरू आपने  
के हुन ते तन मन वारा, के नाले जीवन संवारा  
खुशी च गुजारां दिन रातां, तेरे दर....

खिडियां ने रूहां दाता, इस दर आके  
मन वी सकून पाये, दर्शन तेरा पाके  
के हर पल शुक्र मनावं, तेरी ही सिफ्ता पावां,  
प्यार दी होइयां ने बरसाता, तेरे दर....

जेडा तेरे दर ते आवे, अनमोल दात ओ पावे  
उसदा वजूद ना रहदां — होश तो बेहोश हो जावे  
दिल दी लगी न करदा, बंदगी दे मार्ग चलता,  
साहिब दीया करदां गुलामाता, तेरे दर....



तमाशा तुझ में होता है तमाशे में क्यों रोता है?

- १ जानना रूप है तेरा जानने से है वो मेरा,  
जाने और आने वाले में,  
क्यों व्यर्थ जन्म खोता है।
- २ हुआ जब जानना अपना,  
न माला है न है जपना,  
मिटा मैं मेरे का सपना,  
गाफिल क्यों नींद सोता है।
- ३ कोई काबे में कहता है,  
कोई काशी में जाने का,  
वो अपने आप को भूला,  
दीवाना पाप धोता है।
- ४ नहीं परलोक की आशा,  
नहीं कुछ चाह बनने की,  
परमानन्द को पाकर के,  
पूरण—पूरण में होता है।



तुम्हारी भी जय-जय, हमारी भी जय-जय,  
न तुम हारे न हम हारे,  
शरण तेरी लेके चला हूं मैं जग में,  
जो हम हारे तो कैसे हारे?

नाम तेरा लेता है हर कोई, पर दिल से न भजता है,  
जब दुख आए तो रोता है बचा लो-२  
जो तुम उनसे पूछो अभी तक हां थे,  
जो अब आए, न पहले आए।

लीला देख के रोया, जग का हर एक प्राणी,  
अंत में तेरी शरण को लेके, अपनी हार ही मानी है,  
ओ दुनिया वालो, ऐसा न कोई होगा जग में,  
जो गिरे को उठाये, दुखों से बचाये।

आज तलक कोई न समझा, है जग में कब तक जिंदा,  
फिर भी देखो राम का भजनर, ही समझी अपनी निंदा,  
ओ जागो दुनिया वालो, अभी तक तुम नहीं जागे,  
तुम्हारा ही मालिक, जब राजी है तुम से,  
तो तुम पाओ तो सहजे पाओ।



तेरे संग में रहेंगे ओ मोहना—२  
तेरे संग—संग चलेगें ओ मोहना—२  
तुम दीपक बनो मैं बाती बनूं  
ज्योति में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—  
  
तुम चंदन बनो मैं पानी बनूं,  
मस्तक पर मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—  
  
तुम मोती बनो मैं धागा बनूं  
माला में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—  
  
तुम मुरली बनो मैं तान बनूं—  
अधरो पे मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—  
  
तुम वक्ता (ज्ञान) बनो मैं श्रोता (वाणी) बनूं—  
सतसंग में मिलेंगे ओ मोहना— तेरे संग—  
  
मैं गोपी बनूं तुम श्याम मेरे  
रास रचेंगे ओ मोहना— तेरे संग  
  
तुम ओम् बनो मैं सोहम् बनूं आनन्द  
तेरे बनके रहेंगे ओ मोहना— तेरे संग



तू ही तू ही तू ही तू ही  
साहिब मेरा, साहिब मेरा, साहिब मेरा

तू सजन मेरा, तू प्रीतम मेरा—२  
तू मेरा मीत, सखा हरि मेरा—२, तू—

तन मन मेरा, धन वी तेरा, २  
तू ठाकुर स्वामी, तू प्रभु मेरा—२ तू—

तू मेरी ओट, तू मेरा सहारा—२  
तू मेरी शोभा, तू मेरा प्यारा—२ तू—

तू मेरा दरिया, हम मीन तुम्हारो—२  
तू मेरा ठाकुर, हम तेरे द्वारे—२ तू—

जहां देखूं तूम ही बसना—२  
निर्पो नाम, जपे हर रसना—२ तू—

तू मेरा प्राण, प्राणाधार—२  
तू मेरा जीवन, पालनहार—२ तू—

सिमर सिमर, सिमर सुख पांवा—२  
आठ पहर तेरे गुण गावां—२ तू—



तेरे प्यार दा चढ़ गया रंग मैं  
उस रब तो इक्को मंग मैं—२  
मैं पाई जावां दात इश्क दी—२  
तैयों भरे हुंगारे जा ..  
मैं एने ही सां चाहिदे,  
जो मेरे नाल गुजारे जां ..  
तू पींग ते मैं हुलारा नीं  
तू नदी ते मैं किनारा नीं  
रब वरगा तेरा सहारा नीं  
मैं जान तेरे तो वारां नीं  
एह नाता तेरे नाल रवे,  
मेरे दिन ते रात सवारे जां  
नाल गुडडी दे डोर वांगू  
ते नाता चन्न चकोर वांगू  
जे सावन दे विच मोर वांगू  
इश्के दी चढ़ गई लोड वांगू  
रब अगगे दुवा सजना,  
है मेरी रूह दुवा सजना  
नित मिले लए नजारे जान ... मैं...  
जीवें दिल धड़कन दे नाल होवे,  
ते महीने दे नाल साल  
जीवें शायर दे नाल ख्याल होवे,  
जीवें तबले दे नाल ताल है  
मेरा ते दिल एह चाहदा, वफा





तन वारा तेरे तो मन वारा  
समझ ना आवे तेरे तो की वारा

सूरत तेरी वेख के निहाल हो गई  
पाके तेरा दर्शन मालोमाल हो गई  
दर्शन पावां तेरे तो मैं हार पावां  
समझ ...

रूप तेरे ने पागल किता है  
कमली दा मन अज हर लिता है  
राम आखां के तेनू श्याम आखां  
समझ ....

दासन दासी श्याम अज तेरी हो गई  
प्रेम तेरे विच सुध बुध खो गई  
जिद वारा, तेरे तो जान वारा  
समझ ....



तुमको मांगते हैं तुमसे  
मेरे सतगुरू मुझको ये सौगात दे दो,  
तुमको .....

तुमको ना मांगा तो मांगा भला क्या,  
तुमको जो मांगा तो बाकी रहा क्या  
मांगा तुमको, मांगा सारे जगत को।  
तुमको...

मीरा ने जैसे अपने श्याम को मांगा  
शबरी ने जैसे अपने राम को मांगा  
मांगे पल—पल, जैसे प्रेमी प्रीतम।  
तुमको...

भवरे ने जैसे पल—पल फूल को मांगा  
पपीहे ने जैसे स्वाति बूंद को मांगा  
मांगे पल—पल, जैसे मछली जल को।  
तुमको...



तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूंद के प्यासे हम  
बरसा जो तेरा अमृत, तो तर जाएंगे जहां से हम

पर वश था मन पंछी पहले इन्द्रियों के अधीन  
गुरू वचनों से मुक्त हुआ मैं आत्म पद आसीन

तेरी कृपा है भगवान हुए हैं सतचित आनंद हम  
गुरूमुख को ना यम का डर है, काल की क्या हस्ति

गुरू के चरणों में आए आनंद, जगत है मौत खड़ी  
तेरे नयनों से ये जाना, अमर है आदिकाल से हम।



दादा के ज्ञान में वो शक्ति है,  
वो ही दर्पण को साफ करती है,  
दादा ने बीज जो उगाए हैं,  
इक दिन उनसे फल निकलते हैं।

जब से डोरी गुरु से जोड़ी है,  
तब से जीवन गुरु से तेरा है,  
अब तो दूजा नजर नहीं आता,  
सबमें तेरी ही झलक दिखती है।

देह में सब विकार होते हैं,  
गुरु देह से भी मुक्त करते हैं,  
एक अहंकार जब निकल जाता,  
सब विकार खुद ब खुद निकलते हैं।

रंग लायेगी सच की ये महफिल,  
मिल गई, सतगुरु से है मंजिल,  
अब तो सच ही हमारा जीवन है,  
जिंदगी सच में ही गुजरती है।



दिलकश है तेरा नशा, सूरत ही निराली है,  
हो नजरें करम जिस पर, वो जां से वाली है।

क्या पेश करे तुमको,  
क्या चीज हमारी है,  
ये दिल भी तुम्हारा है,  
ये जां भी तुम्हारी है।

तुम पीर हमारे हो,  
हम मुरशित तुम्हारे है,  
हम लाख बुरे ही सही,  
पर कहलाते तुम्हारे है,  
इक नजरे करम कर दो,  
क्या शान तुम्हारी है। दिलकश.....

साये में तुम्हारे हैं,  
किस्मत ये हमारी है,  
हमें दिल में सजाये रखना,  
आरजू ये हमारी है। दिलकश.....



दर्शन पादियां ही चढ गई खुमारी,  
निराला कोई, पीर आ गया—२  
दर्शन पादियां ही मिट गई बीमारी  
निराला कोई पीर आ गया—२

जग तो निराला मेरा हारा वाला पीर है,  
बदल दीती संईयों जिसने मेरी तकदीर है,  
जावां चरणां तो सदा बलिहारी, निराला .....

सानू विश्वास ऐना, मन लेना कहना है  
असां गुरू चरणां विच बैठे ही रहना है,  
भावे रूस जावें दुनियां सारी, निराला .....

सतगुरू तेरे कोलो ऐहो दिल मंगदा,  
पाप ऐने किते दिलों कहदियां नी संगदा,  
कीति पापियां ते मेहर वारो वारी, निराला .....

अज तक दुनियां दे कोलो की मिलिया,  
सत्संग विच आके सुख चैन मिलिया,  
सारी दुनियां नू वारो वारी वारी, निराला .....



दिल दे सिंहासन उते कौन आकै बै गया,  
मैं मेरी मुक गई, तू ही तू रह गया।

दिखा के नजारे मैंनू, इक नजर नाल लुटया,  
झलक दिखा के सोनी, मैंनू मार सुटया,  
तेरे ही भरोसे जीना, तेरे जोगा रह गया।  
मैं .....

सतगुरू मेरा प्यारा, चंद सूरज तो न्यारा है,  
मिट्या ने गला ते, गुप्त इशारा है,  
प्रेम वाली नजर नाल, नैना विच वस गया।  
मैं .....

तीरे जिगर लगा के, कर गया दिवाना ए,  
वाह मेरे सतगुरू, अजब निशाना है,  
वैद बन निराकार, आप देखो आ गया।  
मैं .....

प्यार दा की जादू तेरा, साडी दशा निराली है,  
रोम—रोम रंग तेरा, अंखा विच लाली है,  
तुआंनु पाके सतगुरूजी, मूल जिदंगी दा पा लिया।  
मैं .....



दीवानों का मेला, है सतसंग वेला  
ये जन्नत नहीं है तो फिर और क्या है  
यहां तेरा आना, आके न जाना  
यह किस्मत नहीं है तो फिर और क्या है  
मिली जब ये महफिल कहने लगा दिल  
यहां से मुझे उठके जाना नहीं है  
जिसे दूढता था यही है वो मंजिल  
कहीं और मेरा ठिकाना नहीं है  
ये तुमसे हमारी, ये हमसे तुम्हारी  
मोहब्बत नहीं है तो फिर और क्या है। दीवानों....  
नहीं था नहीं था, तुम्हारे मैं काबिल  
किया फिर भी मुझको अपनों में शामिल  
मिला जबसे मुझको दामन तुम्हारा  
न मरने का डर है ना जीना है मुश्किल  
कहे दुनिया सारी ये मुझपर तुम्हारी  
जो रहमत नहीं है तो फिर और क्या है दीवानों....  
इन आंखों को ऐसा जलवा दिखाया  
मुझे तुमने अपना दीवाना बनाया  
तुम्हारे सिवा अब नजर कुछ ना आये  
यू रंग मुझपर अपना चढाया  
ये ऐसी खुमारी, मुझपे तुम्हारी  
इनायत नहीं है तो फिर और क्या है । दीवानों....





दाता तेरा नाम लिखिया, ऐ मेरी साहां ते,  
नाम लिखिया ऐ, दिल ते, निगाहां ते,  
दाता तेरा.....

गुरू चरणा विच हर खुशी मेरी,  
आसरा तेरा जिदंगी मेरी—२  
ऐहो चर्चा ऐ चारां दिशावां ते, दाता तेरा.....

दीद तेरी जे सानूं मिल जावे—२  
दिल दी क्यारी वी, आये खिल जावे—२  
गौर फरमाई, मेरियां दुआवां ते, दाता तेरा....

गलतियां करके माफियां मंगियां—२  
दितियां दाता ने, नेमतां चंगियां.२  
परदे पाये ने मेरियां गुनाहां ते, दाता तेरा....

सेवा संगता दी हरदम करदां रहां—२  
मस्तक चरणां ते हरदम धरदां रहां—२  
निगाहां पाई तू मेरियां, चाहवां ते, दाता तेरा..

जद होवे अंधेरा शुकर करां	जद होवे सवेरा शुकर करां
सुख—दुख सब तेरा शुकर करां	कुछ वी नई मेरा शुकर करां
कण कण विच तेरा शुकर करां	जिस दां बसेरा

तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२	
मैं देने सवाली शुकर करां	रूतबा तेरा आली शुकर करां
दुनिया दा वाली शुकर करां	तेरी शान निराली शुकर करां
मोड़े ना भाली शुकर करां	कर जगदावाली शुकर करां
वंडे खुशहाली शुकर करां	इबदे तू सभाली
तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२	
दुखिया दा सहारा शुकर करां	सुखियां नू वीं प्यारा शुकर करां
जद—जद दिल हारा शुकर करां	तेनू ही पुकारा शुकर करां
संसारे ये सारा शुकर करां	दिल जान वेहारा शुकर करां
शिरडी दा नजारा शुकर करां	स्वर्गा तू वी प्यारा
तेरा शुकर करा वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२	
संगता दे कारज आप खलौया—२,	हर कम करावन आया राम,
संगता दे कारज आप खलोता—२	
सतगुरू सुख दायी शुकर करां	कीत्ती सुनवाई शुकर करां
तूसा देर ना लायी शुकर करां	हर पीड़ मुकायी शुकर करां
किस्मत चमकाई शुकर करां	औकात बनाई शुकर करां
इज्जत वी गंवाई शुकर करां	झोली विच पायी
तेरा शुकर करा वे साइयां मैं तेरा शुकर करां मेरे साइयां—२	
हर आस अधूरी शुकर करां,	कि थी इक दूरी शुकर करां
श्रद्धा ते सबूरी शुकर करां	देना ऐ जरूरी शुकर करां
रखदा नई दूरी शुकर करां	कट दा मजबूरी शुकर करां
हर वक्त हजूरी शुकर करां	की थी मंजूरी
तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२	
मंगया सो पाया शुकर करां	लारा नहीं लाया शुकर करां
बदियां तो बचाया शुकर करां,	नेकी वल लाया शुकर करां
सम्मान वधाया शुकर करां	रज—रज के रजाया शुकर करां
समझा ना पराया शुकर करां	हर वचन निभाया,
तेरा शुकर करां वे साइयां मैं तेरा शुकर करां—२	
चंगया नू मिलाया शुकर करां	मेहनत दा खवाया शुकर करां

तेरा शुकर करां।

विश्वास जगाया शुकर करां	धन धन तेरी माया शुकर करां
हर कम्म बढ़ाया शुकर करां	झुकना वी सिखाया शुकर करां
अशकां दा सहारा शुकर करां	कीवे फल पाया
तेरा शुकर करां वे साइयां मैं	तेरा शुकर करा—२
सतगुरू प्यारा मेरे नाल है	
सतगुरू प्यारा मेरे नाल है	
सतगुरू प्यारा मेरे नाल है	
सतगुरू प्यारा मेरे नाल है	
तेरा शुकर करा वें साइया मैं	तेरा शुकर करां—२
हर रसना ते साई—२	हर दिल विच वी साई—२
हर सुख विच वी साई—२	हर दुख विच वी साई—२
चारें पासे साई—२	उन्दे चरचे साई—२
कण—कण विच वी साई—२	तन मन विच वी साई—२
मिल के बोलो साई—२	अमृत घोलो साई—२
सच दी सूरत साई—२	रब दी मूरत साई—२
चिंता कजिये साई—२	हरदम जपिये साई—२
परदे कजदा साई—२	दुखड़े हरदा साई—२
बांह फड़ लैंदा साई—२	अंग संग रहंदा साई—२
अनमोल रतन साई—२	सजना दा सजन साई—२
हरदम रक्षक साई—२	करूणा दायक साई—२
जग तो न्यारा साई—२	रब तो प्यारा साई—२
खुशियां स्वर साई—२	हर स्वर अंदर साई—२
भक्ति दे दां साई—२	शक्ति दें दां साई—२
मस्ती दें दां साई—२	मुक्ति दें दां साई—२
चुकैयां दां वे साई—२	डिगया दां वी साई—२
दुखियां दां वीं साई—२	सुखियां दां वी साई—२
सब रूह वेखे साई—२	रख दा लेखे साई—२
दुख दर्द हरे साई—२	इंसाफ करे साई—२
नित्य ध्यान करो साई—२	गुणगान करो साई—२
एहसास करो साई—२	कुज खास करो
तेरा शुकर करां वे साइयां मैं	तेरा शुकर करां—२
तुसां लगिया तोड़ निभाइयां मैं	तेरा शुकर करां वे साइयां मैं



देखो संतो दिन सुहाना आ गया  
खुद खुदा रहमत बरसाने आ गया।

ढूंढते थे हम जिसे वीराने में  
घट में ही हमको खुदा दिखला दिया।

धर्म कहते हैं जिसे मजहब है क्या  
राज रूहानी बताने आ गया।

जल रहे थे अहमता की आग में  
समता का अमृत पिलाने आ गया।

इसकी वाणी में है संतों वो असर  
मुर्दा भी श्वांसो की पूंजी पा गया।



दसो जी गुरूजी दी झौली विच की  
गुरू वंडदा सबनू प्यार, ते देंदा लाड दुलार,  
गुरू दी झौली विच प्यार ही प्यार।  
दसो जी गुरूजी दी अंखा विच की  
गुरू मेहर नजर दी करदा,  
ते दिलां विच प्यार है भरदें  
गुरू दी अंखा विच मेहर ही मेहर।  
दसो जी गुरूजी दे चरणां विच की  
जन्नत है गुरू दी चरणीं  
रूह खिलदी वै के चरणी  
गुरां दे चरणां विच जन्नत है।  
दसो जी गुरूजी दे हृदय विच की  
गुरू तू ही तू ही बोले  
ते तेरा—२बोले  
गुरू दे हृदय विच तू ही तू।  
दसो जी गुरूजी दे रोम—२ की  
दादा भगवान है रहदें  
हर पल हो नाल ए कहदें  
गुरू दे रोम—२ दादा दा प्यार



निका जया काम श्यामा,  
तेरे तो कराना है,  
पहले तेरे चरणा विच शीष झुकाना है  
बहुत बड़ा काम नहीं श्यामा घबराई ना  
लोक—परलोक दा साथी बनाना है।

पहला काम श्यामा मेरे मन विच वस जा,  
जिधर वी वेखा मैनु नजर आए हंसदा,  
तन मन विच नाले, अखा विच वसाना है। निका ..

दूजा काम श्यामा परवा नईयो मोक्ष दी,  
सानू वी चाइदी तेरे संता नाल दोस्ती,  
तू ही दाता भव तो पार लगाना है। निका .....

तीजा काम श्याम जग—जंजाला तो वचा लो,  
संता की टोली विच, नाम मेरा ले लवो,  
सूनो हारा वाले, मैनु दिलो न भुलाना ऐ। निका ...

चौथा काम श्यामा मन—विषया तो निकाल दो,  
मन विच नाम वाली ज्योति सची बाल दो,  
अज तेरे रंग विच रंग ही जाना है। निका .....

पंजवा काम श्यामा सब तो छोटा है  
अंत वेला आवे होवे कोल तू खडोता ऐ  
हथ फड नाल मैनु अपने ले जाना है। निका .....

सब तो आखिर दासी ऐइयो मंग मंगदी,  
सानू वी देवी दाता संगत सतसंग दी,  
चक्र चौरासी तू यू ही मिटाना है। निका .....



न पूछो ये मुझसे मैं क्या देखता हूं  
मैं तेरी नजर में खुदा देखता हूं।

तेरी मुस्कारहट मेरी जिंदगी है  
यही जिंदगी खुशनुमा देखता हूं।  
समझता हूं खुद को गुनहगार लेकिन,  
तुम्हीं एक को पारसा देखता हूं।

भले और बुरे की पहचान कैसे,  
हर एक को एकसा देखता हूं।  
खुशी और गमी सब बराबर है मुझको,  
मैं सबमें ही तेरी रजा देखता हूं।

किसी से भी नफरत करूं किस तरह मैं  
मैं गैरों में भी आशियां देखता हूं।  
कहूं क्या कहां पर है तेरा ठिकाना  
मैं हर शह में तुझको छिपा देखता हूं।

न दो बुत परस्ती का इल्जाम मुझपर,  
मैं हर बुत में नूरे खुदा देखता हूं।  
बिना जात तेरी सब कुछ है पानी,  
तुम्हीं एक को एकसा देखता हूं।





नहियों जिदंगी दा कोई वसा,  
के नीवा होके चल बंदया  
के निवियां नू रब मिलदा,  
के नीवां होके चल बंदया।

माया दे गुमान विच रब नू भूलाई ना  
कामी क्रोधी लालची, भक्ति न पावेना  
तू छड दे मोह माया, के .....

नींवा होके गज न सदया कन्हारि नू  
भिलनी दे बेरां ने रिझाया रधुरारि नू  
हुन तू वी ना देर लगा के .....

धीयां पुत्र कोई वी नाल नहीं जान्दे ने  
छड के मसाना तक वापस आ जान्दे ने  
बंदे कोई वी नाल ना गया के .....

माया दे गुमान विच बडे—२ टुर गए  
भर के तिजोरियां, सब ऐथे ही छड गए  
बंदे कुछ वी नाल ना गया, के नीवां.....



नाकर अब तू मेरा मेरा  
टूटेगा अभिमान जो तेरा

दिल में प्रभु का प्यार नहीं है,  
जीवन में कुछ सार नहीं है  
धर्म कर्म से पार हो तेरा

ये जग इक झूठा सपना,  
फिर क्यों इसको माना अपना  
छोडने पर पडेगा रोना

ये धन पाप से कमाया जो तूने,  
ये समाज बनाया  
जो तूने, सब है प० की अमानत का देना

इस जग की तू प्रीत छोड दे, सतगुरू आगे  
शीष नवा दे, काट ले जन्म मरण का फेरा



नित खैर मंगा सोनिया मैं तेरी,  
(दुआ न कोई होर मंगदी)—२  
तेरे पैरां च अखीर होवे मेरी,  
दुआ.....

तेरे प्यार दिता जदो दा सहारा वे  
माईया भूल गया, मैंनू जग सारा वे—२  
खुशी ऐहो मैंनू  
खुशी ऐहो मैंनू सजना बथेरी,  
दुआ ने कोई...

तू मिलया ते मिल गई खुदाई वे  
हाथ जोड अखां पावी न जुदाई वे  
मर जावांगी मैं अख जे तू फेरी,  
दुआ ने कोई...



नाम खुमारी नानका चढी रहे दिन रात.  
इस नशे दे सामने, होर नशे सब मात, नाम .....  
सतनाम—२—२ जी वाहे गुरू—२—२ जी जपो.....

हाथ जोड के गुरां तो—२ मंगा मैं खैरात  
दे दुनियां दे मालिका, नाम दान दी दात—२  
रात है उजली नाम जप के—२ उजली है प्रभात  
नाम खुमारी ..... सतनाम्.....

सुरत गुरू दे चरणा च, चढदी जाए आकाश—२  
शब्द हजारां करन पये, दुख हजारां नाश—२  
कीर्तन सिमरन करदियां, जम तो मिले निजात—२  
नाम खुमारी ..... सतनाम्.....

गुरू वाणी विच सैकडें, है सुखां दा वास—२  
वचन गुरू दे पढदेयां, जीवन आवे रास—२  
हल हो जावे मुश्किल, जेकर सतगुरू पावे ज्ञात  
नाम खुमारी ..... सतनाम्.....

नामदेव ने नाम दा—२ पीता निर्मल नीर—२  
जपेया नाम कबीर ने, होई कबीर—२  
सतगुरू कृपा दे नाल बनदी—२, सबदी बिगडी बात.....  
इस नशे दे सामने, होर नशे सब मात, नाम .....  
सतनाम—२—२ जी वाहे गुरू—२—२ जी जपो.....



नी मैं तेरे रंग रंगया, रांझन यार, ओ रांझन यार—  
मिट्टी दा इक बुत बनाया,  
फेर विच वड बैठा आये—२  
आपें धीयां, आपे पुत्र,  
ते आपे बनया मां पे, ओ—  
जिथे—किथे तू है रहदा,  
हर दिल विच तू है वैदा—२  
तेरी गोदी ही होंदी,  
न कुछ न कुछ कहंदा, ओ—  
तेरी गली विच दो न समाये,  
मैं रह पावां या तू रह जावे—२  
तेरे रंग विच ऐसी रंगी,  
भुल गई खुद नू तू ही भाये, ओ—  
तेरी याद विच खोंदी जावां,  
न तू रह पाया, न मैं रह जावां  
गुमसुम इक महल दे अंदर,  
ऐसी गूढ़ी नींद सो जावां—२, ओ रांझन —



निराकार जया सजया सवारो  
के तेरे विचो रब बोलदा,  
रज लेंदिया ने अंखिया प्यासियां—२  
जदो दा ऐदा भेद खोलया, नि० ...  
तेरा नाल सोड़ा होर चंद नहियो सजना  
कोई तेरे तो वखरा पसंद नहियो  
रब विट—२ तकदा है तेनू  
जदोदा ऐदा भेद खोलया, नि० .....  
दिल दी सितार उते गीत तेरा वजदा  
सारी कायनात तेरा करदी ऐ सजदा  
ओ आ जांदिया ने हवा नू करेलियां  
जदो दा सचो — सच बोलदा, नि०...  
जमाने दी जमीं तेरा भार नहियों सावदी  
फिर भी ऐ मेहर तेरी, दुनिया नूं तारदी  
ओ हार जांदिया ने तुफां दियां ताकतां  
तेरा नहियों वजूद डोलदां, नि०.....  
रब—२ कर दी रब दी हो गई,  
तेरे प्यार दे रंग विच खो  
तेरे रंग विच सुध बुध खो गई,  
सुध बुध खोकर कमली हो गई  
तेरे प्यार विच सब कुछ खो गई,  
लौकी कैदें कमली हो गई  
सारी सुध बुध मैनूं भूल गई जदों दा तेरा



पिला दे ओ साहिबा राम नाम की मस्ती  
इस मस्ती दी खातिर साहिबा असां मिटाई हस्ती।

इक बूंद की खातिर साहिबा, सीस मांगे ता देवां,  
जे सिर दित्या बूंद मिले, तावी जान्या सस्ती।

रंग मेरे दी रीस ना होवे, कोई वी रंग पिला दे,  
पीवन वाले मुल नहीं पुछदे, मेंहणी हो या सस्ती।

ऐसी मस्ती पिला दे साहिबा, होश बेहोश तू कर दे,  
जे तेरे कोलो प्याला न ही, बुका नाल पिला दे।

नाम प्याला पीवण वाले, नहीं मौत तो डरदे,  
रब दी रजा विच राजी रहदें, शिकवा कदी न करदे।

सारे द्वारे छोड के साहिबा, मल्या तेरा द्वारा,  
वसदा रहे तेरा मेहखाना, बनी रहे तेरी हस्ती।

सदके तेरे मेहखाने तो रज—रज आज पिला दे,  
पीके मैं सुध—बुध भुल जावां, ऐसी चढ जाए मस्ती।



पूरा ध्यान लगा गुरूवर दौड़े-दौड़े आएंगें  
तुम्हें गले से लगाएंगे,  
मन की आंखें खोल, तुमको दर्शन वो कराएंगें  
तुम्हें गले से लगाएंगें।

है राम रमैया वो, है कृष्ण कन्हैया वो  
वो ही तो ईश्वर हैं  
सत् की राह पर चलना सिखा दे जो  
वो ही तो ईश्वर है,  
प्रेम से पुकार—२ तेरे पास चले आयेंगे.....

कृपा की छाया में, बिठाएंगें तुमको,  
जहां तुम जाओगे,  
उनकी दया दृष्टि जब तब पड़े तुम पर,  
भव से तर जाओगे,  
ऐसा है विश्वास—२ मन में ज्योत वो जलाएंगें.....

ऋषियों, मुनियों ने, गुरूओं की महिमा का  
किया गुणगान है,  
गुरूवर के चरणों में, झुके जो सृष्टि है  
वो ही तो भगवान है,  
महिमा है अपार—२ बेडा पार वो लगाएंगे.....





प्रीत की लत मोहे ऐसी लागी,  
हो गई मैं मतवारी,  
बल बल जाऊं अपने पिया को,  
के मैं जाऊं वारी वारी,  
मोहे सुध बुध ना रही तन मन की  
ये तो जाने दुनिया सारी,  
बेबस और लाचार फिरू मैं  
हारी मैं दिल हारी

तेरे नाम से जी लूं , तेरे नाम से मर जाऊं—२  
तेरी जान के सदर्क मैं, कुछ ऐसा कर जाऊं  
तूने क्या कर डाला, मर गई मैं  
मिट गई मैं, हो री हा री हो गई मैं  
तेरी दिवानी दीवानी.....

इश्क जनु जब हद से बढ जाए  
हंसते हंसते आशिक सूली चढ जाये  
इश्क का जादू सर चढकर बोले  
खूब लगाओ पहरे रस्ते रब खोले  
यही इश्क की मर्जी है,  
यही रब की मर्जी है,

तेरा बिन जीना कैसा, हां यही खुदगर्जी है।  
तूने .....

एक मैं रंग रंगीली दीवानी  
एक मैं अलबेली मैं मस्तानी,  
गाऊं बजाऊं सबको रिझाऊं  
हां मैं दीन धर्म से अंजानी



पीता भी रहूं और प्यास भी हो  
कुछ ऐसी हमारी किस्मत हो...

परदे में छिपा हो लाख मगर  
जलवा भी दिखाई देता रहे  
इस आंख मिचौली खेल में  
कुछ दूर भी हो कुछ पास भी हो  
कुछ इश्क खुदा में चुप भी रहूं  
कुछ इश्क खुदा में बात भी हो  
धरती तो बसे आंखों में  
प्यारा ये खुला आकाश भी हो। पीता .....

मस्ती में महकता दिल भी रहे  
और होश भरा उल्लास भी हो  
मिट जाए मेरी हस्ती के निशा  
मौजूद भी लेकिन पूरा रहूं  
ये घर ही मंदिर बन जाये  
संसार भी हो संयास भी हो। पीता.....

जीवन का सफर यूंही बीते अगर,  
कुछ धूप भी हो कुछ छांव भी हो,  
मिलता तो रहे चलने का मजा  
मंजिल का सदा एहसास भी हो  
हो चुपी मगर गाती सी हो  
संगीत हो मौन में डूबा हुआ  
रोदन भी जले कुछ मुस्कराता  
कुछ अश्रूनू बहाता हास भी हो, पीता.....

सन्नाटा कभी तूफान सा हो  
चुपचाप से गुजरे आंधी कभी,  
मझदार भी हो साहिल जैसा,  
जो डूब सके वो पार भी हो, पीता.....

अतीत से होकर शून्य जहां  
संकल्प सहित हम चलते चले  
लेकिन जब मंजिल मिल जाए  
प्रभु कृपा हुई एहसास भी हो



पहचान सके तो पहचान,  
कण कण में छिपा है भगवान

सूरज में रोशनी, चंदा में चांदनी  
तारों में झिलमिल छाया  
पर्वत पहाड और नदी ये झरने  
सबमें उसी की माया  
मिला सृष्टि का यह वरदान, कण—कण....

अदभूत जगत की लीला देखकर  
होता नहीं विश्वास  
बिन आधार के धरती खडी है  
खंभ बिना आकाश  
कैसी लीला प्रभु की है महान, कण—कण..

जन्म से पहले जीव—मात्र का  
तू ही पालनहारा  
हाड मास और रूधिर के अंदर  
शुद्ध दूध की घारा  
डाली माटी के पुतले में जान, कण—कण...



प्रेम सुधा बरसा रहा, अमृत वाणी दे रहा  
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल

तन से हो सेवा सबकी, दिल में प्रेम प्यार हो  
यही है संदेशा गुरु का, निष्कामी हो, उद्धार हो,  
सतसंग में नित्य आएजा, सत सत वचन उठाए जा  
मस्त करे दिन—रैन और कहीं न सुख चैन  
मन की आंखे.....

हस्ती एक साईं की है, तेरी है न मेरी है  
उसकी रजा में राजी, फिर नहीं फकीरी है  
जागे तो सब अपना ह, नहीं तो झूठा सपना है  
वृथा रहा क्यों डोल, हर पल है अनमोल  
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल

सबके ही दिल में रहता, हाजरा हजूर है  
सच्ची लगन हो दिल में, देता भरपूर है  
कण—कण में वो रम रहा, झोली भर—भर दे रहा,  
कोई न खाली जाए, सच्चा है दरबार,  
मन की आंखे खोल, सतगुरु वचन अनमोल



प्रभु के दर पे आना चाहता हूं  
लौट के फिर ना जाना चाहता हूं  
मुझे इक बूंद अमृत की पिला दो  
मैं सब कुछ भूल जाना चाहता हूं, प्रभु ....

तेरी ही याद में मेरा जीवन बीते  
तेरे ही प्यार में मेरे आंसू निकले  
मैं सिर्फ तुझको रिझाना चाहता हूं, प्रभु ....

बंदा सच्चा मैं आशिक तेरे दर का  
करूं सजदा हमेशा तेरे दर का  
मैं तन मन धन लुटाना चाहता हूं, प्रभु ...

लग्न गुरुवर मुझे ऐसी लगा दो  
प्रभु के चरणों में मुझको बिठा दो  
मैं धर वापिस न जाना चाहता हूं, प्रभु ....

करो अज्ञानता को दूर दिल से  
जला दूं ज्योति ज्ञान की हृदय में  
मैं सीधे पथ पे चलना चाहता हूं, प्रभु .....



प्रेम जब अनंत हो गया,  
रोम—रोम संत हो गया—२  
देवालय बन गया बदन  
संत तो महंत हो गया, प्रेम.....

पोथी पढ पढ जग मुआ, पर पंडित भया न कोय  
ढाई अक्षर प्रेम का, पढे से पंडित होए।  
प्रेम.....

कागा सब तन खाइयो, मेरा चुन—चुन खाइयो मास  
दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस।  
प्रेम.....

लाली मेरे लाल की, जिथ देखूं तिथ लाल  
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।  
प्रेम.....

हस—हस कुंत न पाया, जिन पाया तिन रोय  
हंसी खेडे पिया मिले, तो कौन सुहागन होए।  
प्रेम.....



प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है,  
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

प्रेम मंदिर, प्रेम मूरत, प्रेम ही भगवान है  
प्रेम ही के थाल में, सब पूजा का सामान है  
प्रेम दीपक, प्रेम बाती, प्रेम पावन मंत्र है  
जो भरा हो प्रेम.....

वेद हो या वीर वाणी, रामायण हो या गीता हो,  
वो न समझेगा इसे, जो प्रेम से अंजान हो  
प्रेम का जो पाठ पढाये, वो ही सच्चा ग्रन्थ है।  
जो भरा हो प्रेम.....

प्रेम के बल पे टिके, यह धरती आसमान है  
ढाई अक्षर सीखा जिसने, उसका रूप महान है  
प्रेम की महिमा सनातन, आदि है न अंत है  
जो भरा हो प्रेम.....





पूर्ण मांहि रहना साधो, पूर्ण मांहि रहना,  
यही गुरु का कहना रे साधो, यही.....

१ पूर्ण ज्ञान स्वयं प्रकाशी,  
काटे नाम रूप की फांसी,  
सहज समाधी धरना रे साधो, यही.....

२ पूर्ण में परिछंता भागे ना,  
कुछ ग्रहण ना कुछ त्यागे,  
नहीं करना, नहीं भरना रे साधो, यही....

३ पूर्ण में नहीं लोक पाल है,  
पूर्ण में नहीं जगत जाल है,  
नहीं डूबना, नहीं तरना है साधो, यही...

४ पूर्ण परमानन्द को पाया,  
आदि अंत का भेद मिटाया,  
नहीं जाप, नहीं जपना रे साधो, यही....



पल दो पल की क्यों है जिंदगी  
इस प्यार को है सदियां काफी नहीं  
तो खुदा से मांग लूं  
मोहब्बत मैं इक नई  
रहना है बस यहां, अब दूर तुझसे जाना नहीं  
जो तू मेरा हमदर्द है —२ सुहाना हर दर्द है—२

तेरी मुस्कराहटें हैं ताकत मेरी  
मुझको इन्हीं से उम्मीद मिली  
चाहे करे कोई सितम ये जहां  
इनमें ही है सदा हिफाजत मेरी  
जिंदगानी बड़ी खूबसूरत हुई  
जन्नत अब और क्या होगी कहीं। जो तू...

तेरी धड़कनों से है जिंदगी मेरी  
ख्वाइशें मेरी अब दुआएं मेरी  
कितना अनोखा बंधन है ये  
तेरी—मेरी जान जो एक हुई,  
लौटूंगा यहीं तेरे पास सदा  
वादा है मेरा, मर भी जाऊं कहीं।  
जो तू.....



- प्रीतम मतवाले हो...., भगता दी आत्मा दे,  
तुसी रखवाले हो।
- बस रूप वटाया ऐ... सजना,  
गोविंद गोकूल दा, सतगुरू बन आया ऐ।
- मेरे मीत मेरे सजना, हाणियां  
विनती करां ऐहो(२) हर श्वांस विच तुसी वसना..२
- कुछ ऐसा कर जावां माहिया,, .२  
मेरेया साहिबा दे, चरणां च ही मर जावां . २
- बस इश्क तेरा ही रहिये  
नजरां तू ही रहे, रूह मेरी ऐहो कहे ....
- जन्नत सानू मिल गई ए, माहिया.  
तेनू पाके मेरे साहिबा, रूह मेरी खिल गई ए....
- तेरी प्रीत प्यारी ऐ,  
तेरे उतो मेरे हाणियां, रूह जांदी वारी ऐ...
- ऐ रहमत तेरी ऐ सजना ..  
पीड़ मेरी तेरे इश्क दी, जागीर ऐ तेरी ऐ...
- तुसी प्रीतम प्यारे हो..  
हुण असी तैनूं दसदे हां . रूहां दे लशकारे हो
- तेरी प्रीत दे मारे हां  
मेरे वडे साहिबा वे — तेरी अख दे तारे हां...
- दो तारां लिशकदियां रांझना  
तेरी मैं नब्ज देखी — तेनूं मर्जा इश्क दियां सजनां...
- दीवा बलदा बनेरे ते हाणियां  
तेरी गली मैं फिरदा, वे मैं आशिक तेरे रे ते
- पींगा प्यार दियां पावांगे (प्रीतम)  
हुण असी मिल गयेआं, गीत प्रेम दे गावां गे....

- तेरे नाल ही बोलांगे.  
इकवारी सामने तां वे, दुख जुदाइयां वाले खोलेगें...
- प्रेमी जो मिलदे ने  
गुरां दे प्यार अंदर, फुलां वागू खिलदे ने ...
- ऐ बीमारी पुरानी ए.२  
सजना वे तक—२ के, चढ़ी नाम खुमारी ए ...
- यादां सांभ—२ रखिया ने, इक तेरे दर्शन बिना  
साढ़ी रोंदिया अखियां ने...
- दिन भागा वाला आया ए  
सतगुरां दे चरणां च, साड़ी सूरत समा जावे
- गुरू मेरा उचा ए,  
खोल दिता भेद सारा, सब प्यार सुचा ए..
- रोम—२ तो शुकुराना है  
प्रभु तेरे प्यार दे नाल, जग बन गया मस्ताना ए...
- साड़ी दुनिया रूखी ए  
यार नू वेखन लई, रूह रैन्दी भुखी ऐ....
- मैनु प्रभु दा नशा चढ़या,  
उस रंग अगे सब फीका, मन मस्ती विच भरया ऐ।
- वाली प्रेम नगर दा ऐ,  
संदेशा लैके नगरी—२ फिरदे हां.....
- सोणा साज बजादे हो,  
हर इक प्रेमी नू, हृदय नाल नादे हो....
- गुरू सबना नू जांदे ने  
पर सच्चे सतगुरू नू, कोई विरले पहचानदे ने.....
- पोला मन ए भुलान वाला,  
तेरे बिना वडे साहिबा, केढा दस ए पहचान वाला,

- तेरा द्वारा वसदा रहे,  
सतगुरू मेरा प्यारा, संगता नाल हसदा रहे....
- माला प्रेम दी या लईये  
गुरां दे द्वारे उते, असां
- साडे सिर देया साइयां वे  
साडे नाल प्यार पाके, मेहरां वरसाइयां ने
- दिती अमृत वाणी ए, मिली तेरी मेहर सदका,  
तेरी मेहरबानी ए....
- मेरा साहिब सजदा रहे— बनी रहे तेरी हस्ती,  
मैखाना वसदा रहे ...
- तेरे नाम दी मैं पीवां, पी पी मस्त रहवां,  
संग तेरे मैं जीवां
- तेरी होके खां गी मैं (सजना)  
तू वी मेरा हो गया, जग नू कहांगी मैं.....
- तेरे रहम बहुतेरे ने,  
दर्श दिखा देवी, नई ते हुन बहुतेरे ने..
- इस जिंदगी दा कि कहनां.२  
जे दर्श न होया तेरा, फिर जिंदगी तो की लैना
- तू प्यार दा सागर ए, बूंद—२ भर—२ के,  
भर लई असां गागर ए.
- हकीकत में हकीकत का यही तो दौर होता है  
यहां तो हर दौर में, हर दम नया दौर होता है
- तेरे दरबार में स०, ये जन्नत झुकती है  
यहां पे सर झुकाने का मजा कोई ओर होता है
- सुन दिल दी गल मीता—२  
तेरे विचो रब दिसदा, असां सजदा ताइयों किता
- आपे दुनिया पसारी ए — आपे ही वेखया पया,  
ए लीला न्यारी ए।



बार बार बोलो ओम, हर पल बोलो ओम,  
ओम ही ओम है, शांति का सार, बार—२ ...

जीवन है कुछ पल का, वृथा यूँ न गवां,  
श्वासों की ये लडिया, प्रेम के दीप जला,  
ऐसी हो मेरी उसको पुकार, बार—२ .....

भूल हुई जो तुझसे, सपना सा उसको जान,  
मान न मान ओ प्राणी, तू तो है भगवान,  
ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार—२ .....

सतगुरु चरणों में आके, अपना शीष झुका,  
तेरे अंदर ज्योति, उसको तू आज जगा,  
फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार—२ .....

साफ कर दिल का दर्पण, फिर होगा दीदार,  
ज्योत जगेगी अपरमपार, बार—२ .....

ऐसी हो मेरी उसको पुकार, बार—२ .....

ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार—२ .....

फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार—२ .....



बुएं बारियां ते नाले कंधा टपके,  
आवांगी हवा बनके, बुए बारियां होए.....  
बाजी इश्क दी जीत लवांगी मैं हंसके  
रब तो दुआ बनके, बुए बारियां.....

दिल दियां राहां उते पैर नहींयो लंगदे  
मुकदरां दे लेखे कदी मिट नहीं सकदे  
मैनू रब ने, हां मैनू रब ने बनाया तेरे लई  
मत्थे तेरा नाम लिख के, बुए बारियां.....

चन्न चडया ते सारे लौकी पये तकदे  
डूंगे पानियां च, फेर दीवे पये जलदे  
कण्डे लग जावांगी, कच्चा कडा बनके  
मैं आवांगी हवा बनके ....



बृज के नंद लाला, राधाजी के सांवरिया  
सब दुख दुर हुए, जब तेरा नाम लिया

मीरा पुकारे प्रभु गिरधर गोपाला  
ढल गया अमृत में विष का भरा प्याला  
कौन मिटाए उसको, जिसे बचाए नंदलाला  
सब दुख .....

जब तेरे गोकुल पर आया दुख भारी  
इक इशारे से सब विपदा टारी  
मुड गया गोवर्धन, जहां तूने मोड दिया  
सब दुख .....

नैनों में श्याम बसे, मन में बनवारी  
सुध बिसराए गई, मुरली की धुन प्यारी  
मन के मधुबन मे रास रचाए रसिया  
सब दुख .....





बिना राम के तू किसी नाल प्यार न करी,  
ओ मना याद रखी,  
सोना छड़ के तू मिट्टी दा व्यापार ना करीं,  
ओ—

कोई मंदा बोल बोले, अगो बोली ना, हां बोली ना  
देखी बंदा होके गंदगी फरोली न, हां फरोली ना  
कोड़ी तकदीर नाल तकरार ना करी,  
ओ मना—

जे तू नेड़े जाना चाहे भ० दे, हां भ० दे,  
पंजा पैरियां नू नेड़े वी ना आन दे, हां ना आन दे,  
काम, क्रोध, लोभ, मोह ते अहं न करीं,  
ओ मना—

मुड़ के चौरासियां दे खाई ना, हो खाई ना,  
यही वेला है सुनहरा चुक जाई ना, हा चुक जाई ना,  
देखी अपने उद्धार दा उधार न करीं,  
ओ मना—



बहुत जन्म बिछड़े थे माधो  
एह जन्म तुम्हारे लेखे—२

हम सर दीन, दयाल न तुम सर  
अब पतियार क्या कीजै, —२  
बहुत————

बचनी लोर, मोर मन माने  
जन को पूरन कीजै, —२  
बहुत————

हउ बलि जाउं, रमैयया कारने  
कारण कवल अबोल, —२  
बहुत————

कहे रविदास आस लग जीवों  
चिर भयो दर्शन देखे —२  
बहुत————



ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों पे कोई—२ विरला चढ़े,  
जो चढ़ जाये सीढ़ियां चौरासी लख उस दी कटे।

मानुष तन मिला अनमोला, मैंने माटी में उसको रोला  
सतगुरु ने कृपा करके, विवेक का ताला खोला  
कि माटी से कंचन करे, जो चढ़ जाये....

मैं जब से जगत में आया था अपना आप भुलाया  
गुरु ने मेरे मन मंदिर में, है ज्ञान का दीप जलाया  
कि कागा से हंसा करे, जो चढ़ जाए....

गुरु काम क्रोध से बचाए, और राम द्वेष को मिटाए  
ये प्रेम का सागर बनके, खुद पिए और सबको पिलाए  
कि सबसे प्रेम करे, जो चढ़ जाए....

मैं गुरु पर जाऊं वारी जाऊं लाख—२ बलिहारी  
स्वरूप का पता बताके, मेरी डूबती नैया तारी  
कि आत्म रूप लखे, चढ़ जाए...

गुरु आया बन अवतार है, इसकी महिमा अपरंपार है  
कोई माने या न माने, ये तो वो ही कृष्ण मुरार है  
कि गोपियों के भाग्य जगे, जो चढ़ जाए ...



बरसा बरसा सुख बरसा  
सतगुरू प्यारे सुख बरसा  
आंगन—२ सुख बरसा, सतगुरू प्यारे....  
चुन—२ कांटे नफरत के,  
प्यार अमन के फूल खिला ... बरसा...

तन का कोई है दुखी, मन का कोई है दुखी  
हे प्रभु दया करो, तुम हो नूर जहांन के  
सबके दुखो की तुम हो दवा, सतगुरू...

राग—द्वैष को मिटा, तुम सकल संसार से  
नाम का सिमरण करो, मिलके सारे प्यार से  
मानव से मानव हो ना जुदा, सतगुरू....

झोलियां सुखो आनन्द से तुम  
चाहे सतगुरू भर भी दो  
पर मझे मेरे प्रभु, तुम सदा ही दर्श दो  
हर पल—२ मांगे बस ये ही दुआ, सतगुरू....  
आंगन ....., बरसा .....



बक्श दैयो गुरू मौजा,  
दसवें द्वार दियां....  
नौ द्वार विच उमर गुजारी  
दसवें दी गई सुध बुध मारी  
सतगुरू खोलियां कुड़िया बंद किवाड़ दियां  
द्वार दिया ....। बक्श दैयो ....

गगन मंडल विच अनहद बाजा  
सतगुरू पूरा कहदां आ जा  
आके लुट ले मौजा इस दरबार दियां  
बक्श....

गगन मंडल विच अमृत विच  
गुरू दा रूप नूरानी चमके  
मैं तो हो गईयां आशिक तेरे दीदार दियां  
बक्श ....

ओथे जग—मग ज्योत उजाला  
सतगुरू दा ए रूप निराला  
रोम—२ दियां किरणां, चमका मारदियां  
बक्श....

अरज करदा दास तुम्हारा  
सत्संगियां नू सतगुरू प्यारा  
बक्श दैयों तकदीरां अपने प्यार दियां  
बक्श ....



मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ , ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो

ये चंचल मन संकल्पो का, इक जाल बिछाए रहता है  
है सत्चित् आनंद रूप प्रभु, मेरे चित को चेतन कर दो।

मन चिंता करता रात दिवस, विषयों में आनंद पाने की  
इक झांकी अपनी दिखा के प्रभु, मेरे मन को सोडम कर दो।

दोष न देखूँ आंखों से, न सुनु बुराई कानों से  
सारा जग आत्म रूप लगे, ऐसी मेरी दृष्टि कर दो।

मुख से गुणगान करू तेरा, सदा मीठे वचन उचारा करूँ  
अमृत की धार पिला कर के, इस वाणी में अमृत भर दो।

ये अंग प्रतिअंग जो हैं मेरे, लग जाए सेवा में तेरे  
जीवन अर्पण हो चरणों में, हे नाथ कृपा ऐसी कर दो।



मना सावरे नू किस तरह पाइदा  
पहले अपना आप गवाइदा  
फूल कैहदा मैनु माली ने तोडया  
सुई धागे विच पाके पिरोलिया  
मैं फिर भी मुंह नहीं बोलया  
हार बनके ते श्याम अगे जाइदा  
मैनु सावरे ने गले विच पा लिया  
मैनु सावरे ने हां नाल ला लिया। मना .....

दूध कैहदा मैनु ग्वाले ने चो लिया  
चाटी विच पा के बिलो लिया  
मैं फिर भी मुंह नहीं बोलया  
मक्खन बनके ते श्याम अगे जाइदा  
मैनु सावरे ने भोग लगा लिया  
मैनु सावरे ने प्यार नाल खा लिया। मना .....

बांस कैहदा मैनु जंगल विच पुटया  
छेद करके ते खाली कर सुटया  
मैं फिर भी मुंह नहीं बोलया  
बंसरी बनके ते श्याम अगे जाइदा  
मैनु सावरे ने होठों नाल ला लिया  
मैनु सावरे ने प्यार नाल बजा लिया। मना .....

सोना कहदा मैनु भटठी विच सुटया  
मार मार के हथौडे नाल कुटया  
मैं फिर भी मुंह नहीं बोलया  
मुकुट बनके ते श्याम अगे जाइदा  
मैनु सावरे ने सिर ते सजा लिया  
मैनु सिर दा ताज बना लिया । मना .....



मैं तो आई फकत मेरे दीदार को,  
क्या खबर थी कि आते ही लुट जाऊंगी,  
फूल लाई थी मैं पेश करने को,  
क्या खबर थी कि दिल अपना दे जाऊंगी।

उनकी महफिल की रौनक कहूं क्या जी  
सारी जन्नत नाचा करती है  
घूट मैंने अभी एक दो थे पीये  
क्या खबर थी कि पीते ही बहक जाऊंगी।

उनकी नजरों में ऐसा जादू भरा,  
देखती ही रह गई एक बुत की तरह,  
मैं तो आई थी इक दो लम्हे के लिए  
क्या खबर थी कि हमेशा को बंध जाऊंगी।

उनका महखाना चलता ही रहता सदा,  
पीते रहते हैं हरदम प्याला नया,  
चैन पाने को आयी थी खोया हुआ,  
क्या खबर थी कि ज्यादा तडप जाऊंगी।





मेरी जिंदगी में क्या था, तेरी कृपा से पहले  
मैं बुझा हुआ दीया था, तेरी कृपा से पहले

मैं था खाक एक जर्जर, और क्या थी मेरी हस्ती  
यूं थपेड़े खा रहा था, तूफ़ानों में जैसी कशती  
दर बदर भटक रहा था, तेरी कृपा से पहले.....

मैं था इस कदर जहां में, जैसे खाली सीप होती,  
मेरी बढ गई है कीमत, तूने भर दीये हैं मोती  
मुझे कौन पूछता था, तेरी कृपा से पहले.....

यूं तो है जहां में लाखों, तेरे जैसा कौन होगा,  
तेरे जैसा बंदा परवर, भला ऐसा कौन होगा,  
मेरा कौन आसरा था, तेरी कृपा से पहले.....



मेहरां वाल्या साईया रखि चरणा दे कोल

ओगन हार दी वेनती, तुम सुनो गरीब नवाज  
जे मैं पूत कपूत, हां तो बौहड पिता नू लाज  
ओ मेंहरां.....

मेरी फरियाद तेरे दर आगे होर सुनावां केनू  
खोल ना दफ्तर ऐबा वाले, दर तो धक न मैनू  
ओ मेंहरां.....

तेरे जया मैनू होर न कोई, मेरे जये लख तेनू  
जे मेरे विच ऐब ना होदा, तू बक्शेंदा केनू  
ओ मेंहरां.....

जे ते सागर नीर भरया, ते ते ओगुण हमारे  
दया करो कुछ मेहर उपाओ, डुबदे पत्थर तारे  
ओ मेंहरां.....

ओखे वेले कोई न पूछे, बाबुल वीर ते मावां  
सबे धक्का देवदे, मेरी कोई न पकडे बावां  
ओ मेंहरां.....

एक ऐब मेरा बाबुल देखे, देदां देश निकाला  
लख ऐब मेरा सतगुरू देखे,वेख के करदा टाला  
ओ मेंहरां.....



महफिल रूहां दी मेरे सतगुरू लाई ए  
जेडा आ जांदा ओनू मस्ती छाई है

आओ संइयो जी धुट पीके वेखो जी  
पहले पीके ते फिर जीके वेखो जी  
जेडा पी लेंदा ओने होश गवाई ए  
जेडा आ वडया ओनू मस्ती छाई है। महफिल..

लोहा पारस बन सोना बन जांदा है  
मेरा सतगुरू अपने जया बनांदा है  
युक्ति दे नाल सतगुरू घुट पिलाई है  
जेडा आ वडया ओनू मस्ती छाई है। महफिल..

जेडा पी लेंदा ओदी दशा अनोखी है  
लेकिन संइयो जी ए पीनी ओखी है  
जेडा पी लेंदा ओने मुक्ति पाई है  
जेडा आवडया ओनू मस्ती छाई है। महफिल ..

सतगुरू मर्म न जेडे भर भर दें दे ने  
दुनिया मतलब दी कोई विरले लेंदे ने  
आशिक प्रेमी ने इक डिग लगाई है  
जेडा आवडया ओनू मस्ती छाई है। महफिल ..



मेरा जीवन तेरी शरण—२  
सारे राग, विराग हुए अब—२  
मोह सारे, त्याग हुए अब—२  
एक यही मेरा वंदन, मेर जीवन—२

अविरत रहा भटकता अब तक  
भटकू और अकेला कब तक  
पालूँ केवल तुझको ही मां  
एक यही है मेरी लग्न । मेरा....

तेरे चरणों पर हो अर्पण  
मेरे जीवन के गुण अवगुण  
सारी व्यथाएं दूर करो मां  
हो कुसुमित मेरा नंदन। मेरा ....



मुझे रास आ गया है तेरे दर पे आना जाना  
तुझे मिल गई पुजारिन, मुझे मिल गया ठिकाना।

मेरे दिल की ये जो महफिल, तेरे दम से सज रही है  
आ जाओ श्याम प्यारे, करके कोई बहाना,  
आ बैठो श्याम प्यारे, करके कोई बहाना। मुझे .....

तेरी सांवरी सी सूरत, मेरे मन में बस गई है  
ओ प्यार तेरी सूरत, मेरे मन में बस गई है  
ओ सांवरे सलौने, अब और न सताना । मुझे .....

दुनिया का गम नहीं है, चाहे रूठ दुनिया जाये  
मेरी जिंदगी के मालिक, कहीं तुम न रूठ जाना। मुझे ...

तेरी बंदगी से पहले, मुझे कौन जानता था  
सर अब तो झुक गया है, आता नहीं उठाना । मुझे ....

मेरी आरजू यही है, दम निकले तेरे दर पे  
अभी सांसे चल रही है, कहीं तुम चले न जाना । मुझे..



मैनू ता सतगुरू तेरी याद सतावे  
सारी सारी रात मैनू नींद न आवे  
मेरे तो वस विच नई सतगुरू प्यारया.....

नाम तेरे दा मैं बन लया गाणा  
लौकी तां मैनू मारन ताना  
लौका दी मैं न सुनी। सतगुरू प्यारया.....  
नाम तेरे दी मैं लालई मेंहदी  
लौकी तां मैनू पागल केंहदी  
मैं ता पागल सही, सतगुरू प्यारया.....  
नाम तेरे दा मैं पा लया चूढा  
तेरा ते मेरा सतगुरू प्यार है गूढा  
प्यार ये कटना नहीं। सतगुरू प्यारया.....  
नाम तेरे दी मैं पा लई माला  
सतगुरू मेरा सारे जग तो निराला  
किसी नू दसना नहीं। सतगुरू प्यारया...  
नाम तेरे दी मैं ले लई लावां  
छड के दस तेनू किधर जावां  
तेनू मैं छडना नहीं। सतगुरू प्यारया.....  
नाम तेरे दी मैं बै गई डोली  
सारी संगत जय जय बोली  
वापस जाना नहीं सतगुरू प्यारया.....



मेरे साकिया बता दे, वो शराब कौन सी है  
जिसे पीके सारी दुनिया, तेरे दर पे झूमती है।

फैलेगा मेरा दामन, सौ बार तेरे आगे  
पहले सफा बना दे, तेरे दर पे क्या कमी है  
मेरे साकिया.....

तू हजार बार ठुकरा, मेरा सर यहीं झुकेगा,  
है यही मेरी इबादत, मेरी जिंदगी यही है  
मेरे साकिया.....

तौबाह गुनाह मेरे, क्या क्या किया है मैंने  
इस पर भी तू निवाजे, तेरी बंदा परवरी है  
मेरे साकिया.....



माही मैं तो गोविंद के रंग राची

पचरंगी चौला पहन सखी, झिरमिट खेलन जाती  
वहां झिरमिट में मिलो सांवरो, खोल मिले पन दासी  
माही मैं तो .....

जिनके पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजे पाती  
मेरे पिया मेरे हृदय बसत है, ना कहू आती न जाती  
माही मैं तो .....

प्रेम हटी का तेल मंगाया, मन सागर लिए बाती  
सूरत निरत का दिवडा जोया, जगा रही दिन राती  
माही मैं तो .....

चंदा भी जायेगा, सूरज भी जायेगा जायेगा धरती आकाशी  
पवन और पानी दोनो ही जायेगें, अटल रहे अविनाशी।  
माही मैं तो .....

सतगुरु मिलया संशय छूटा, घट पाया प्रकाशी  
मोह—माया दोनों ही झूठे, गाये मीरा दासी  
माही मैं तो .....





मुझे मेरी मस्ती कहां लेके आई  
जहां मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है  
लगा जब पता मुझको हस्ती का मेरी  
बिना मेरे अपने, जहां कुछ नहीं है।

सभी में सभी से, परे मैं ही मैं हूं  
सिवाए मेरे अपने, कहां कुछ नहीं है  
न दुख है न सुख है नहीं शौक मुझको  
अजब है ये मस्ती, पिया कुछ नही है।

ये सागर ये लहरे, ये झाग और बुदबुद  
कल्पित है जल के सिवा कुछ नहीं है  
अरे मैं हूं आनन्द, ये आनन्द है मेरा  
है मस्ती ही मस्ती, पिया कुछ नहीं है।

भरम ये द्वन्द का जो मुझमें पडा था  
मिटायो जो मैंने खफा कुछ नही है  
ये पर्दा दुई का हटाकर जो देखा  
सभी एक मैं हूं, जुदा कुछ नहीं है।



मैं बलिहारी सतगुरू मेरे,  
सतगुरू आए साडे वेडे.....

जिन्हा राहां ते गुरूंजी आए ने  
ओन्हां राहां ते फूल बरसावां  
ओन्हां राहां ते खुद बिछ जावां  
बडे दयालु सतगुरू मेरे, सतगुरू .....

मेरे सतगुरूं दा रूप निराला  
दर्शन करदां ए करमा वाला  
बडे प्यारे सतगुरू मेरे, सतगुरू ....

सतगुरू नाम दा दान देके तारदे  
भव सागर तो पार उतार दे  
पार लगादे सतगुरू मेरे, सतगुरू ....

जेडे हर वेले नाम तेरा जपदें  
दुख ओना दे नेडे नहीं लगदे  
कष्ट मिटादें सतगुरू मेरे, सतगुरू ....



मेरी रसना से प्रभु तेरा नाम निकले  
हर घडी हर वेले, ओम—२ निकले

मन मंदिर में ज्योति जगाऊंगी  
प्रभु तेरे मैं सदा गुण गाऊंगी  
मेरे रोम—२ विच तेरा नाम निकले....

मेरे अवगुण चित्त से भुला देना  
मेरी नैया पार लगा देना  
तेरी याद विच सुबह और शाम निकले..

तेरी महिमा का सदा गुणगान करूं  
तेरे वचनों का नित में ध्यान करूं  
तेरी याद विच जीवन तमाम निकले.....



मैनु लादो शामजी, अपने नाम वाली मेंहदी—२  
नाम वाली मेंहदी.....  
मैनु लादो श्याम जी .....

ऐ मेंहदी दी चमक अनोखी  
ऐ न मिलदी सबनू सोखी  
लगन लगानी पैदी, अपने नाम.....

ऐ मेंहदी ना मिलदी बजारा  
ना मिलदी ऐ लखां हजारं  
जान गवानी पैदी, अपने नाम.....

ऐ मेंहदी सारी संगत नू ला दो  
जन्म—२ दी प्यास बुझा दो  
जन्मां तक जो रहन्दी, अपने नाम .....

ऐसी मेंहदी लगा दो सांवरिया  
जो ना उतरे सारी उमरिया  
ऐहयो गोपी कैदी, अपने नाम.....



मैं तो श्याम संग नेहा लगायो रे

कान्धे पे ओडे काली कमरिया  
सावरी सुरनियां मोहनी मुरलिया  
मैं तो हृदय बीच समायो रे,  
मैं तो श्याम संग..  
मैं तो श्याम संग अखियां मिलायो रे....

अब तो भयी मैं अपने श्याम की  
और शाम भये प्रभु मोर  
मैं तो लाज का पर्दा हटायो रे  
मैं तो श्याम संग.....

लोग कहे मीरा भई रे बावरी  
मैं तो अविनाशी वर पायो रे  
मैं तो श्याम संग.....



मेरा सतगुरू पीरां दा पीर मेरा मन रंगया गया—२  
होके शहनशाह ते नाले पकीर, मेरा मन रंगया गया।

सुध—बुध भुल गई सब तन की  
चिंता छूटी जन्म—मरण की  
तेरे चरण चे मेरी अखीर, मेरा मन रंगया गयाए मेरा.....  
ओ रंगया गया, मेरा मन रंगया गया मेरा.....

राम दे रंग विच गई मैं रंगी  
मन दिता मैं बन गई चंगी  
मैनु मुहब्बत दी मिली जागीर, मेरा मन रंगया गया मेरा..  
मेरा सतगुरू ..... ओ रंगया.....

हां पाठ प्रेम दा ऐसा पढया  
जिसदा नशा सदा लई चढया  
मेरे मन विच रही न लकीर, मेरा मन रंगया गया मेरा...  
मेरा सतगुरू.....

हां गुरां ने दिती ऐसी मस्ती  
हो भुल गई मैनु मेरी हस्ती  
मेरे मन विच तेरी तस्वीर, मेरा मन रंगया गया मेरा.....  
मेरा .....



मुझे रब मेरा मिलाया, ये कर्म नहीं तो क्या है  
खुद में खुदा दिखाया, ये कर्म नहीं है।

मैं गमों की धूप में जब, तेरा नाम लेके निकला  
मिला रहमतों का साया, ये कर्म .....

मेरी जिदंगी को बेहद, मिले आपके सहारे  
मैं गिरा तो खुद उठाया, ये कर्म .....

मुझे लखते जिगर करके, मेरी रूह में उतर के  
मुझे अपना सा बनाया, ये कर्म .....

खामोश जिदंगी की धडकनों में आकर  
नया साज एक बनाया, ये कर्म .....

इक साज सा बजाया, ये कर्म .....

इक गीत गुनगनाया, ये कर्म .....

जन्नत से यूं उतर के, मेरे दिल में यूं घर करके  
नया आशियां बनाया, ये कर्म .....

हारे हुए दिलों को इक तार में पिरो कर  
नया हार ये बनाया, ये कर्म .....

अपनी गोद में बिठाया, पलकों में छिपाया  
दिल में यूं सजाया, अपनी धडकनों में समाया।



मैं तां हो गईया, होर दी होर नी  
मेरे सतगुरां फड लई डोर नी.....

सतगुरू मेरे ते कृपा कीति—२  
हंसा दी मैनु पदवी दीति—२  
मैं तां भुल गईयां, कागा वाली टोर नी  
मेरे सतगुरां.....

अंदर बाहर वसदा जानी—२  
सतगुरू दी मैं रमज पहचानी  
बंद हो गया, जग वाला शोर नी  
मेरे.....

कर कृपा मैनु अपना बनाया  
दीन जान चरणां नाल लाया—२  
मैनु लेया अपने नाल जोड नी—२  
मेरे.....

सतगुरू जद मैनु ज्ञान सुनाया—२  
अंदर बाहर दा भेद मिटाया—२  
मैनु रही न जग दी लोड नी  
मेरे .....





मुझे गरज न और सहारो की,  
इक तेरा सहारा काफी है,  
मंझधार में डुबने वालों को,  
इक तेरा किनारा काफी है।

बन—र के सहारे टूटते हैं,  
ये रसम पुरानी है जग की,  
जो टूटे कभी और छूटे ना,  
वो तेरा सहारा काफी है.....

नजरो को धोखा देते है,  
दुनिया के झूठे नजारे,  
जो कायम हमेशा रहता है,  
वो तेरा नजारा काफी है...

जहां रिश्वत और सिफारिश से भी,  
काम नहीं बन सकता है,  
मेरी बिगडी बन जाने के लिए,  
इक तेरा इशारा काफी है.....

हंसराज पपीहे को मतलब क्या,  
नदियों और तलाबों से,  
स्वाती की बरसे बादल से,  
केवल इक धारा काफी है।



मेरे साहिब—२ तू, मैं माण निमाणी  
अरदास करीं प्रभु अपने आगे—२  
सुन—२ जीवां तेरी वाणी ए, मेरे साहिब—४  
तुद चित्त आवे, महा आनंदा—२  
जिस बिसरे सों मर जाई—२  
दयाल होवे जिस उपर करते—२  
सो तुद सदा ध्याई —२ मेरे साहिब —४  
चरण धूड़ तेरे जन की होवां—२  
तेरे दर्शन को बल जाई—२  
अमृत वचन हृदय उर धारी —२  
लौ कृपा ते संग पाई—२ मेरे साहिब —४  
अंतर की गत तुद पै सारी  
तुद जे वड अवर न कोई  
जिसनू लाये, लछे सो लागै  
भगत तुम्हारा सोई—२ मेरे साहिब —४  
दुई कर जोड़ मांगूं इक दाना—२  
साहिब तुढे पावां आ—२  
श्वांस—२ नानक आराधे.२,  
आठ पहर गुण गावां  
मेरे साहिब —



मन मेरो गज, जिब्हा मेरी काती  
मप—२ काटो, जम की फांसी—२

काह करूं जाति, काह करूं पाति,  
राम का नाम, जपुं दिन राति,  
मन मेरो————

रांगन रांगू, सीवन सीउं  
राम के नाम बिन, घड़िया न जीउ,  
मन मेरो ————

भगती करूं, हरि के गुण गाउं,  
आठ पहर, अपना खसम घ्याउं,  
मन मेरो ————

सोने की सूई रूपये का धागा  
नामे का चित्त, हर स्यों लागा,  
मन मेरो—————



मेरी हीरिये फकीरिये नी सोनिये  
तेरी खुशबू नशीली मन मोहनिये,

याद आवे तेरी, जदो देखा चंद मैं  
तू ही दिसे जदो, अखां करां बंद मैं  
मैनु लगे राधा तू ते लाल नंद मैं  
काश तेनू वी होवां ऐदा पसंद मैं  
कदो नींद तो जगाया नी परोनिये, तेरी—

देख गल तेरी करदे ने तारे वी  
नाले मेरे वल करदे ने इशारे नी,  
ऐही यार मेरे ऐही ने सहारे वी,  
पर चंगे तेरे लगदे नहीं लारे वी,  
सानू राहां च ना रोल, लारे लोनिये, तेरी—

केढ़ा पाया ऐ प्यार वाला जाल नी  
जिथे जावां तेरी याद जांदी नाल नी  
ऐं तां रोग मैं अवला लया पाल नी  
शाम पैदें ऐ देंदा दीवे बाल नी  
ए कि किता वेख दिल दा तू हाल नी  
मेरे मन अरजोई आग लोनिये,  
तेरी खुशबू—

मैं तां चिड़ियां नू पुछां कुज बोलो नी,  
कदो आओ मेरी हीर भेद खोलो नी,  
तुसी जाओ, सच्ची जाओ, ओनो टोलो नी,  
जाके फुलां वाला बाग फरोलो नी,  
ओ गुलाब दिया पत्तियां च होनी ऐ,  
तेरी-----

पहले भोले बन चैन तू चुरा लिया  
फिर निंद नू ख्वाबां दे लेखे ला लिया,  
साढ़ा दुनिया तो साथ वी छुड़ा लिया,  
फिर झलक जी देके मुंह घुमां लिया,  
किवें पुनां जजबात साढे पोणिये,  
तेरी -----

ऐ दिल जो गांदा ए ऐनू गान दे  
ऐ तां हो गया शुदाई रोला पान दे  
बस प्यार वाल छतीर तू तान दे,  
बाकी रब जो करेंदा करी जान दे,  
मैनू दिल च वसा ले पतोनिये,  
तेरी -----



मेरे सतगुरू रंगरेज, चुनर मेरी रंग डारी  
मेरे सतगुरू रंगरेज

वो हरियारो छुड़ाई के, जी दियो मजीठा रंग  
धोये से अब ना छूटे दिन—२ होय सुरंग जी  
मेरे सतगुरू रंगरेज...

सतगुरू ने चुनर रंगी जी, मेरे सतगुरू चतुर सुजान  
ओ सब कुछ उन पर वार दूं मेरा तन मन धन और प्राण जी  
मेरे सतगुरू रंगरेज...

कहे कबीर रंगरेज गुरू जी  
मुझ पर हुए दयाल और शीतल चुनरी  
ओढ़ के मैं मगन हुई निहाल जी  
मेरे सतगुरू रंगरेज...



मेरे सच्चे साहिबा, सब तेरा ही तेरा  
सब कुज तेरा सच्चे साहिबा  
इक तू है मेरा। मेरे ...

तू ते कोट ब्रह्माण्ड दा मालिक,  
सानू तेरा सहारा,  
तेरा हुक्म सदा सिर रखिए,  
तेरा हुक्म प्यारा  
तेरी रोशनी पाके साहिबा  
दूर होया है अंधेरा। मेरे ...

आपे मिटांदा आपे बनांदा  
तेरा खेल निराला  
तेरी करनी सदा भली है  
तू जग दा रखवाला  
ऐसी कृपा करो मेरे साहिबा  
रहे सदा ही सवेरा। मेरे ...

इस जीवन दा माली तू है  
हर बूटा तैनू प्यारा  
हर बूटे विच रस है इको  
इको सृजनहारा  
तेरी खुशबू सदा ही महके  
तू ही करे बसेरा। मेरे...

रे मन ऐस करो संयासा  
मन विच साहिब समाइये  
तेरी छत्र—छाया के तले  
सिमरण जीवन बिताइये  
तेरी ओट सदा सुखदाई  
तुझ विच सुख घनेरा। मेरे ...





मैं क्या जानूं तेरी रघुराई  
तू जाने मेरी किसमें भलाई  
सहारा तेरा रे, ओ साईं ...२

सारे जहान को देने वाले  
मैं क्या तुझको भेंट चढ़ाऊं  
जिसकी श्वासों से आए खुश  
मैं क्या उसको फूल चढ़ाऊं  
अपरमपार है तेरी महिमा,  
कोई न जाने पार...  
सहारा तेरा रे ओ साईं ....



मेरे साहिबा मैं तेरी हो चुकी हां ...  
मेरे साजना, (मोहना) मैं ....  
मन विच वसाया, तेनू मेरे साहिबा,  
दर तेरे दी मैं भूखी है।  
अवगुण हारी कोई गुण नांही ..  
वक्श करें ते मैं झुकी हां। मेरे ....  
जे तू नजर मेहर दी पांवे..  
चढ़ चौबारे मैं सुत्ती हां। मेरे ...  
जो भावे त्यों रख प्यारेया  
दाम तेरे ते मैं लुटी हां...  
मन विच वसाया, तेनू मेरे साहिबा,  
दर तेरे दी मैं भूखी हां ....  
कहै हुसैन फकीर साईं दा ....  
पैर तेरे दी मैं जुत्ती हां  
(इक तेरी बन चुकी है ...  
मैनू नां विसारी, ओ मेरे साहिबा,  
हर गलों मैं झुकी हां .....



मेरे हृदय ते वाहेगुरू नाम लिख दे—२  
मन मंदिर दे विच सत्नाम लिख दे  
मिट जाये दुनिया ते मैं मेरी  
हृदय, नाम दी लग जाये मोहर तेरी .  
मेरे ...

मेरे रोम—२ विच सतगुरू, प्यार समाया तेरा,  
मेरे साईं तेरे बाजू, दिसे जगत अंधेरा,  
सदा करां मैं सिफतियां तेरियां,  
हुन सफल घड़िया मेरियां। मेरे हृदय....  
लिख दे ... राम नाम लिख दे .. लिख ...

चंगे—मंगे तेरे सतगुरू, बक्शों अवगुण मेरे,  
जुड़े रहिये तेरे चरणां दे विच,  
कर लो अपने चरे।  
मेरी डुबदी तार दे बेड़ी जी,  
हल कर दे मुश्किल मेरी जी।  
मेरे हृदय ....

प्रेम दे रंग विच रंगया गया मैं,  
हर कीर्तन गुण गाये,  
सतगुरू मैंनूं तेरे बाजो,  
कुज वी नजर न आवे।  
हृदय लिख के मैं तेरा कीर्तनया  
रहिये करदा सदा सिफतियां तेरियां। मेरे हृदय...  
जद सी मेरी मैं मेरे विच,  
तू नहीं सी बसदा।  
हुन तां जिधर वेखा मेरे सतगुरू,  
तू ही तू ही दिसदा।  
तेरे चरणां दी मैं खाक होवां  
तेरे दासों दा मैं दास होवां  
लिख दे—२, राम नाम लिख दे ...  
ऐहो मेरी अर्ज गुरूजी  
तेरी मुशतत् कर—२ जीवां।  
हरीजी नाम लगे तेरा मिठ्ठा  
मैं रज—२ अमृत पीवां  
मेरी सफल होवे जिंदगानी ए  
तेरी लख—२ मेहरबानी है॥  
मेरे हृदय ते .....



मित्र प्यारे नू  
हाल मुरीदां दा कहना..

तुद बिन रोग रजाइयां दा ओढ़न,  
नाग निवासा दे रहणा। मित्र ....

शूल सुराही, खंजर प्याला,  
विंग कसाईया दा सहणा। मित्र ....

यारडे दा सानू थत्तर चंगा,  
पठ खेड़ेयां दा कहणा। मित्र .....



ये कैसी कसक तूने, मेरे दिल में जगा दी है  
सोचा था प्यास बुझे, तूने और बढा दी है  
सतगुरू को मुहब्बत है, लेकिन वो छुपाते है  
ये बात मुझे उनकी नजरों ने बता दी है —  
ये कैसी...

मैखाने क्यों जाए, हम पीकर क्यों आए  
मेरे सत० प्यारे ने, नजरों से पिला दी है  
ये कैसी...

तकदीर बदलने का, ये ढंग ही निराला है  
मेरे मीत, मेरे सजना, तूने रूह जो खिला दी है,  
ये कैसी...

तेरी वाणी सुनने का, मेरा दिल जो तरसता है  
ये प्रीत भी क्या दाता, तूने बना दी है,  
ये कैसी...

जब नजर मिली मेरी, मदहोश हुआ मैं तो  
अब तक न संभल पाया, तूने इतनी पिला दी है,  
ये कैसी...



ये तो सच है कि भगवान है  
मन न माने तो नादान है  
धरती पे रूप साकार का  
उस निराकर की पहचान है।

उनकी वाणी सुने, उसको अमल करे,  
उनकी आसीस से, सबका जीवन बने,  
उनको महसूस करें, उनको दिल में रखे,  
उनके उपकार से, मन को विजयी करे,  
दिया भगवान ने ज्ञान है

उससे बढकर दिया प्यार है। धरती.....

दादा के ज्ञान से आज होके पावन,  
बनाया है हमने अपना ये जीवन,  
नया जन्म मिला, नई राहें मिली,  
जो सोची न थी, वो खुशियां मिली,  
इतने उपकार हैं क्या कहें,

रोम—रोम से महिमा बहे। धरती.....

सबको प्यार करें, हम ना द्वेष करें,  
गुरु का ख्वाब है ये, क्यों न पूरा करें,  
मोह माया को छोड, मन का तोडेगें हम  
मीठ बोलेगें हम, आज निश्चय करें  
इतनी शक्ति दे हमको गुरु  
बंदो से हो गए उपराम हम  
धरती पे रूप साकार का  
उस निराकार की पहचान है।



ये सतसंग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला  
ये मीठा प्रेम प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला

प्रेम गुरु है प्रेम ही चेला,  
प्रेम धर्म है प्रेम ही मेला,  
प्रेम की फेरों माला, कोई फेरेगा किस्मत वाला

प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलता  
मन का कष्ट कभी नहीं टलता  
प्रेम करे उजियाला कोई करेगा .....

प्रेम का गहना प्रेमी पाये  
जन्म—मरण का दुख मिटाए  
काटे कोटि कर्म जंजाला, कोई काटेगा .....

प्रेम ही सबका कष्ट मिटावें  
लाखों से दुराचार छुड़ावें,  
प्रेम में हो मतवाला, कोई होगा.....





ये सैर क्या है अजब अनोखा,  
कि राम मुझमें, मैं राम में हूं,  
बगैर सूरत अजब है जलवा,  
कि राम मुझमें, मैं राम में।

- १ मुरूकाए हुसनो इश्क मैं हूं,  
मुझी में नाजो न्याज सब है  
हूं अपनी सूरत पे आप शौदा, कि राम मुझमें.....
- २ जमाना आईना राम का है,  
हर एक सूरत से है वो पैदा,  
जो चश्मे हक भी खुली तो देखो, कि राम मुझमें.
- ३ वो मुझमें हर रंग में मिला है,  
कि गुल से बूभी कभी जूदा है,  
हूबाबों दरिया का है तमाशा, कि राम....
- ४ सबब बताउं मैं बजद का क्या,  
है क्या जो दर पर्दा देखता हूं,  
सदा वो हर साज से है पैदा, कि राम.....
- ५ बसा है दिल में तेरे वो दिलबर,  
है आईना में खुद आईना गर,  
अजब तहयुर हुआ से कैसा, कि राम.....
- ६ मुकाम पूछो तो ला मका था,  
राम ही था न मैं वहां था,  
लिया जो करवट तो होश आया, कि राम.....
- ७ जहाज दरिया में और दरिया जहाज में  
भी तो देखिए आज,  
ये जिस्म कश्ती है राम दरिया, कि राम.....



यह मत कहां से पाई रे साधो,  
बन्ध मोक्ष की कल्पना मिटाई रे साधो।

द्रष्टा, दर्शन, दृश्य त्रिपुटी से न्यारा हूं  
सब कुछ मैं ही, करने हारा हूं  
गुरु ने यह मत बताई रे साधो।  
यह मत...

गुरु की संगत प्यारे अजब निराली है  
वो ही संगत कर सी जिसने हमता ममता मारी है  
अलख निरंजन अविनाशी रे साधो  
यह मत ...

मैंनू आत्म ब्रह्म, लखया गुरां ने  
वेदां विचों सार, पिलाया गुरां ने  
पीके मैं तां होई हां निहाल मेरे साधो।  
यह मत ....



राम नाम की नैया लेकर सतगुरू करे पुकार,  
आओ मेरी नैया में ले जाऊंगा भव पार।  
इस नैया में जो कोई चढ जाएगा,  
जन्म जन्म के पाप सभी धुल जाएगा,  
कटे, चौरासी के बंधन और पडे न जम की मार  
आओ मेरी नैया.....

पाप गठरिया सीस धरी कैसे आऊं मैं,  
अपने ही अवगुण से खुद शरमाऊं मैं,  
नैया तेरी सांची भगवन, मेरे पाप हजार।  
आओ मेरी नैया.....

जीवन अपना सौंप दूं मेरे हाथों में,  
श्वास—श्वास को पोत दो मेरी यादों में,  
पाप—पुण्य का बनकर आया मैं तेरा ठेकेदार,  
आओ मेरी नैया.....

करके दया सतगुरू ने चुनरिया रंग डाली,  
जन्म जन्म की मैली चादर धो डाली,  
दाग भरी थी मेरी चुनरिया  
करदी लालो—लाल । आओ मेरी नैया.....

बडे भाग्य से सतगुरू जी का ज्ञान मिला  
मुझ प्रेमी को जीने का आधार मिला,  
लगी डूबने बीच भंवर में आ गया खेवनहार  
आओ मेरी नैया.....



रहमता करदा ए झोलियां भरदा ऐ जी  
पीरां दा पीर मेरा शाही फकीर  
मेरा सतगुरू प्यारा ऐ—२

जद आन पडे जो शरणी  
कर देंदा मालो माल  
तुसी लुट लो संगदा लुट लो  
मेरा सतगुरू दीन—दयाल, भरे भंडारे जी  
ये कहदें सारे ने, पीरां दा पीर.....

ये रब है सतगुरू मेरा  
ऐनू समझ न कोई बंदा  
ओ मिटा दे विच कटदा  
चौरासी वाला फेरा, देर नहीं लादा ऐ  
निश्चय करांदा ऐ, पीरां दा पीर.....

मेरे सतगुरू जी दा द्वारा  
सारी दुनिया कोलो न्यारा  
सारे दुखां दी इको दवाई  
ऐ दसदा जांदा प्यारा,  
प्रेम ने वर्षा की, ऐ मस्त बनांदा ऐ,  
पीरां दा पीर.....



रंग वाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे  
और सारे रंग धोके प्रेम रंग रंग दे  
राम रंग रंग दे श्याम रंग रंग दे

कितने ही रंगों में मैंने आज तक रंगा इसे  
पर वो सारे फीके निकले तू ही गूढ़ा रंग दे

मैं जिधर भी देखता हूँ रंग है तेरा दिखता  
मैं भी प्रेम रंग में डूबा और गूढ़ा रंग दे

मैं तो जानूंगा तभी तेरी रंग अन्दजियां  
जितना धोऊँ ' उतना चमके ऐसा गूढ़ा रंग दे ...



रोम—रोम में लिखवा लो ओम हरि—२ ओम हरि  
तन के तंबूरे पर गा लो ओम हरि—२ ओम हरि  
ज्ञान के बंध जो द्वारा घड़ी में खुल जायेंगे  
जो भी किये हैं पाप वो सारे धुल जायेंगे  
हर धड़कन में लिखवा लो ओम हरि...  
नाव जो है मझधार खवैया मिल जायेगा  
पतझड़ घेरा बाग फलों से घिर जायेगा  
जीव के रस में मिलवा लो ओम हरि...  
मन में जलेगा दीप अनोखी एक आस का  
सुर में बजेगा साज तुम्हारी हर स्वांस का  
रंग महल में मडवां लो ओम हरि...  
आंख खुली जब हुआ सवेरा मिटा अंधेरा  
घर अपने का पता लगा हो गया बसेरा  
मन के भवन पर लिखवा लो ओम हरि...  
नाव जो है मझधार गुरू ने पार लगाया  
रंग बिरंगे फूलों से झंकार कराया  
नैन ज्योति में लिखवा लो ओम हरि...  
मन में है भ० हमें बस वो ही चलाये  
भेद मिटाकर वो हमसे निष्काम कराये  
सवांस—२ में लिखवा लो ओम हरि...

कोई ऐहो जई नमाज पढ़ा दे, कदी कदा न होवे

पढ़ना सुनना कसब है, जो ओर संवारे जीव  
जिस पढ़ने से शौह मिले, ओ पढ़ना किसे नसीब, कोई  
हद—२ करते सब गये, बेहद गया न कोच,  
अनहद ही के नाद में, रहे कबीरा खोये—२, कोई——  
आशिक ओही जेड़ा काफर थीवे, ला दिल ऐ कुफर कमावे  
बाजों यार न मने दूजा, भांवे खुद खुदा बन आवे, कोई——  
आशिक पढ़न नमाज इश्क दी, जिस विच हरफ न कोई,  
जीव न हिले, होंठ न झपके, अल्लाह असल नमाज सोई, कोई.  
अनहद दावा खून जिगर दा, आशिक मनिये सोई  
तद माशूक इश्क वल वेखे, गल इश्क दी होई—— कोई——  
नमाजे इश्क दा पढ़ना, बड़ज़ दुश्वार होता है  
जो आशिकों के सामने तलवार होता है  
उठा खंजर, कटी गर्दन, नमाजी वो कहलाता है  
जिसे दीदार होता है। कोई——  
दिल की हसरत जुबां पे आने लगी  
हर सूरत में उनकी सूरत नजर आने लगी,  
खुदा के खास बंदे, ये जलवा देख लेते हैं,  
रहो तुम लाख पदों में, पर वो देख लेते हैं, कोई——



श्वांसो की माला पे सिमरूं मैं पी का नाम



राम दा जहाज मेरे गुरां ने बनाया है  
आके टिकट कटा लो, जिन्हा पार उतरना—२  
मिठे—२ वचन, वेदा दा सार है  
नाम दी कमाई नाल होंदा बेड़ा पार है  
वचना ते अमल कर लो, जिन्हा पार उतरना—  
जग तो निराला, गुरू ने बनाया है  
अपनी रूहां नू, दर ते बुलाया है,  
सुंदर दर्शन पा लो, जिन्हा पार उतरना—  
मुक्ति दे धन नाल, कर दे निहाल,  
लोक परलोक विच, करदे सम्भाल,  
गुरू नू साथी बना लो, जिन्हा पार उतरना—  
नाम दा रंग, जीव ते पान्दे ने  
ब्रह्म ही है तू, इस नू बता दे ने  
सच्चा सौदा कर लो, जिन्हा पार उतरना—  
जो संता दी शरणी आये,  
बिछड़ी रूहां मेल कराये,  
बिछड़ा राम मिलाये, जिन्हा पार उतरना—  
कई जन्मा दे पुण्य होये,  
तां संगता दा दर्शन होये,  
संता दा संग बना लो, जिन्हा पार उतरना—





लगन सतगुरू से लगा बैठे, जो होगा जाएगा  
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा।

कभी दुनिया से डरते थे, जो चुप चुप प्यार करते थे  
कि अब बंधन छुड़ा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।

किया कुर्बान अपना दिल, प्रभु के कोमल चरणों में,  
जन्म की बाजी लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।

तुम्हारी बेबेसी से दिल जो मेरा टूट जाएगा  
रहेंगे हम न इस तन में, जो होगा देखा जाएगा।

तुम्हारी लगन लगा कर के, अनेको पापी तरते हैं,  
कदम आगे बढ़ा बैठे, जो होगा देखा जाएगा।

लगन सतगुरू से लगा बैठे, जो होगा देखा जाएगा  
तुम्हें अपना बना बैठे, जो होगा देखा जाएगा।



लगे जिन्दड़ी नू आन हुलारे  
जदो दा तेरा लड़ फड़या  
बेसहारया नू मिल गये सहारे, जदो दा तेरा...

जदो वी निहारी छवी तेरी तस्वीर दी, हां तस्वीर दी  
सुध बुध भुल गई अपने शरीर दी, हां शरीर दी  
ओ मेरा रोम—२ आरती उतारे, जदो दा ...

अखियां दे विच तेरा नूर समा गया हां नूर समा...  
मुदता दी सुति साडी आत्मा जाग गया हां जाग गया  
मेरी नस—२ आरती उतारे...

चड़या जदो दा तेरे नाम वाला रंग जी, रंग जी हां...  
नचदा प्यार विच मेरा अंग—२ जी हां अंग...  
बेसहारया नू मिल गये सहारे...

ऐसे छींटें मार दाता अपने प्यार दे हां प्यार दे  
भूल जान मैंनू सारे सुख संसार दे हां संसार दे  
मैंनू दुख वी लगन प्यारे जदो ...



लगियां ने मौजां, हुन लाई रखी, दातया  
प्रीत अपनी नूं वधाई रखीं दातया

जदों दा मैं चरणां दा बनया गुलाम हां  
सारे कैन्दे खास मैं, आमों का भी आम हां  
पर्दा जो पाया ही ते, पाई रखीं दातया

नाम तेरा लैके चन्ना पहचान पाई ए  
तेरे हथ डोर ते आपे तू चढ़ाई ए  
चड़ी हुई गुडडी नू चढ़ाई रखी दातया—२  
प्रीत अपनी नू ...

किसे नूं मैं अपना दुखड़ा सुनाया नहीं,  
तेरे बाजो किसे मैं सीने नाल लाया नहीं,  
लाया ही जो सीने नाल, लाई रखी दातया  
प्रीत अपनी...  
लगियां ने मौजा...



लख खुशियां पातशाहियां, जे सतगुरू नदर करे

वेमुख वेख हर नाम दे, मैरा तन—मन शीतल होए  
जिसको पूरब (प्रारब्ध) लिखिया,  
तन सत० चरण गहे—२,  
लख....

सबे (सब कुछ) थोक प्राप्ते जे आवे इक(वारी) कथ  
जन्म पदार्थ सफल है जे सच्चा शब्द कथ  
गुरू ते महल प्राप्ते, जिस लिखया होवे मथ(माया)  
एकस सेयू चित्त लाये, मेरे मन एकस सेयूं चित्त जाये  
एकस बिन सब धन्ड(धुंध) है सब मिथिया मोह माया,  
लख ...

सफल महूर्त, सफल घड़ी, जित सचे नाल प्यार  
दुख संताप ना लगाई, जिस हर नाम आधार  
बांह पकड़ गुरू कडैया, सोई उतरैया पार,  
लख..

थां सुहावा पवित है, जिथे संत सभा  
तोहि तिस नू मिले, जिन पूरा गुरू लभा  
नानक वड़ा करत हो, जिथे मृत, ना जन्म, जर्ग,  
लख..



वडे मेरे साहिबा गहर गंभीरा, गुणी गहीरा  
कोय न जाने तेरा किता केवड चीरा।

सुन वड आंखे सब कोय, एवड वडा डीठा कोय  
कीमत पाये न कहया जाये  
कहने वाले तेरे रहे समाये। वडे.....

सब सूरत में सूरत समाये  
सबकी मत मिलके मत पाई  
ज्ञानी ज्ञान गुरू गुरू गाई,  
कहना जाई तेरी तिल पडियाई। वडे.....

सिद्र पुरखा कीयां वडियाईया  
सब सत् सब जय सब वडियाइयां  
तुझ बिन सिद्धि किने ना पाइयां  
कर्म मिले नाहि ठाकुर माइयां। वडे.....

आवरण वाला क्या बेचारा  
सिफती करे तेरे गुण गाया  
जिस तू देवे तिसे क्या चारा,  
नानक सच संवारन हारा। वडे.....



वे मैं सद्के ललारिया जावां,  
चुन्नी नूं रंग देन वाल्या,  
वे मैं जिन्दगी नू घोल घुमावां, चुन्नी नू रंग..  
वे.....

जिनी राही मेरा आया ललारी  
उनां राहां तो मैं सद्के वारी  
वे मैं अखियां दा फर्श विछावां, चुन्नी नू...

ऐ ललारी मेरा सब तो निराला  
ज्ञान दा रंग चढ़ावन वाला  
नी मैं तन—मन ज्ञान विच रंगावां, चुन्नी.....

ऐसी सतगुरू ने चुन्नी रंगाई  
तार—२ विच होई रोशनाई  
वी मैं रीझा दे नाल हंडावा, चुन्नी...

पर उपकारी मेरे सतगुरू आये  
पर उपकारी मेरे ललारी आये  
दर्शन कर तन—मन हर्षाये  
जी करदा मैं तकदी जावां, चुन्नी नू..  
वे मैं सद्के — मैं उठके ना जावां

वैसे तो नरक जगद्वार है, वैसे नरक कुछ और है

साकी जो पिलाये इक बार जिसे,  
रहता सदा खुमार उसे,  
वैसे—

जीवन में वही खुश रह सकता है  
वचनों को जो अमल में लाता है  
गुरु भक्त वही कहलाता है,  
निष्काम जो करके दिखाता है,  
इक पल का अब तो भरोसा नहीं,  
समय को ना यूँ ही गवाना है,  
वैसे-----

इस राह में आने वालों को,  
अपनी ही लग्न की जरूरत है,  
दुनियां की जिसको चाह नहीं,  
जीते जी यहां तो मरना है,  
अपनी ही खुदी को मिटाना है,  
वैसे -----



शुकराने के गीत हम गाये—२  
गाते ही जाये जीवन में,  
कि वाह वाह की आदत ऐसी डाले,  
शिकवे न हो जीवन में।

दुख से तेरा क्या है नाता  
गुरु हर दम हमें है समझाता,  
ये दुनिया सपनों का है मेला,  
बड़ी मुश्किल है कोई जानता,  
के सपनों से जाग हम जाए,  
जब है हमने जाना। के वाह.....

हालत आए चाहे जैसी  
रूक न पाये मन की मस्ती,  
रातें कितनी भी हो चाहे लंबी,  
लेकिन फिर भी सुबह तो आएगी  
के मन में भाव जाग तेरा जाए,  
रोशनी आए जीवन में। के वाह.....

जीवन नैया बड़ी कमजोर है,  
पर साहिब मेरा बड़ा जोर है,  
रूकना कैसा, झुकना कैसा,  
जब सतगुरु मेरे सिर मोर है  
के हर पल वो साथ मेरे आए—  
मंजिल पाए जीवन में। के वाह.....





श्वासों की डोरी से तू सिमरन के मोती पिरो ले,  
मेरा हर श्वास तू ही तू ही बोले—

रसना बोले न बोले मन बोलता है,  
सिमरन के सच्चे हीरे मन बोलता है,  
मेरे जैसे न कोई धनवान होगा,  
हर पल प्रभु से जुड़ा जो ध्यान होगा,  
मीरा कबीरा जैसी मस्ती चढेगी होले—होले,  
मेरा हर श्वास.....

जैसे सिया के मन में राम बसे है,  
जैसे राधा के मन में श्याम बसे है,  
ऐसा बसा ले तू भी दाता को मन में,  
आनंद छाया रहे हर पल जीवन में,  
भक्ति में डूबा रहे, भक्ति का रंग जो घोले,  
मेरा हर श्वास.....

आज भी सतगुरु जी ने सिमरन दिया है  
प्यारा है उनका जिसने सिमरन किया है  
सारे दुखों की सिमरन एक दवा है  
ग्रंथो में प्यारे प्रेमी सिमरन लिखा है  
सिमरन करने वाले का मन कभी न डोले  
मेरा हर श्वास.....



श्वास—श्वास सिमरों गोंविद,  
मन अंतर की उतरे चिंत।

पूरे गुरू का सुन उपदेश,  
पार ब्रह्म निकट कर देख.२ श्वास...

आस अनित्य त्यागो तरंग,  
संत जनो की  
साध जना की छूटे मन रंग। श्वास...

आप छोडकर विनती करो,  
संत जना संग सागर तरी। श्वास...

सखा सबका एको स्वामी,  
सकल धटा का अंतर्धामी। श्वास ...

हरि धन के भर लियो भंडारा,  
नानक गुरू पूरे नमस्कार। श्वास ...



श्वासां दी माला नाल, सिमरा मैं तेरा नाम—२  
बन जावां बंदा मैं तेरा, हे कृपा निदान—२

संगता दी सेवा करदा रहां मैं—२  
चरणा ते मस्तक धरदा रहां मैं—२  
मेरी खल दे जोडे, गुरू दे सिख हंडाण। श्वासा.....

ठाडी हां मैं सतगुरू दे धर दा—२  
चंगा या मंदा हां बंदा मैं उसदा  
मेरा है तन मन ओना तो कुर्बान। श्वासा.....

ऐसी ही कृपा करो प्रभु मेरे —२  
छडिये जंजाला नू बन जाईये तेरे  
जिस पल तू बिसरे निकल जाये मेरी जान। श्वासा..

गुरू मैनु पिला दे, अमृत दा प्याला,  
रंग दे मेरे दिल नू मैं हो जा मतवाला,  
मैनु ए सतगुरू जी तेरे दर्शन दी तांग। श्वासा.....

कोटा ब्रहमडां दा मालिक तू स्वामी  
सबना नूं देंदा तू अंतर्दामी  
तू देंदा नहीं थकदा युगों युगों देंदा ऐ दान। श्वासा..

सदा पकडों मेरी बांह किथे रूल ना जावां  
सुखा विच रह के तेनू भुल न जावां  
चरणा नाल जोडो, गुरू जी मैनु अपना जान। श्वासा.



शुक्र रबा मैनु सतगुरू मिलया

जन्म जन्म दे अंधकूप तो  
बांह पकड के कडया। शुक्र....

सतगुरूजी मैनु चरणी लाया  
अज मेरा चन चढया। शुक्र.....

इक वारी सतगुरू शरणी आया  
फिर पल्ला नइयो छडया। शुक्र.....

ज्ञान दी ऐसी जोत जलाई  
देह दा भरम ही मिटया। शुक्र....

प्रेम दा ऐसा चोला पहनाया  
द्वेत नू पीछे छडया। शुक्र.....

सब विच उसदा नूर छलकदा  
ऐसा नशा है चढया। शुक्र....

सतगुरू जी दा मेल जो होया  
जन्मा दा पुण्य खटया। शुक्र.....

अपने मन की मैं जानूं और पी के मन की राम

यही मेरी बंदगी है, यही मेरी पूजा  
श्वांसों ....

इक था साजिन मंदिर में  
और इक था प्रीतम मस्जिद में, श्वांसों ....

प्रेम के रंग में ऐसी डूबी  
बन गया एक ही रूप  
प्रेम की माला जपते—२ आप बनी मैं श्याम  
श्वांसों ....

हम और ना ही कुछ काम के  
मतवारे पी के नाम के हरदम, श्वांसों ....

प्रीतम का कुछ दोष नहीं है  
वो तो है निर्दोष  
अपने आप से बातें करके हो गई मैं बदनाम  
श्वांसों ....



है प्रेम जगत में सार, और कोई सार नहीं,



जपो सतनाम—२—२, वाहे गुरू—२—२  
जपो सतनाम—२—२  
पल—२ जपां तेरा नाम, वाहे गुरू  
तू ही पिता, तू ही मां, वाहे गुरू, सतनाम

पढिये सवेरे वाणी जय साहिब दी,  
सुनदी है धुन तेरे ही रबाब दी—२  
अमृत वेले जदो मीठी—२ वाणी विच,  
गूंजदा सारा आसमां, वाहे गुरू  
तेरी ही बंदगी करां . वाहे गुरू,  
होर न दूजी कोई थां । वाहे गुरू  
हर पल.....

शाम वेले पढा रहसास गुरूजी  
हथ जोड करां अरदास गुरूजी  
दुखां ते कलेशा विच, सड—२ जादें भगतां दो  
तेरा सहारा ठडीं छां . वाहे गुरू,  
तेरे सहारे मैं तरां वाहे गुरू  
हर पल.....

मिटठी — तेरी वाणी कर दी ऐ जंजाल जी  
सुण—२ होए, संगता निहाल जी  
पापा देयां सागरां विच, कढ—२ लेदें,  
फडी तू दाता जी दी बांह वाहे गुरू  
चरणां तो करीं ना परां वाहे गुरू  
मंगा मैं मंगा तेरा नां, वाहे गुरू  
हर पल.....

जपया जिन्हानें तेरा सच्चा नाम जी,  
लख लख उनां ताई प्रणाम जी  
आपे तू बनावें दाता, आपे तू मिटावें दाता  
सारा जगत है सरां, वाहे गुरू  
बडा है दाता तेरा नाम वाहे गुरू  
फडी निमाणयां दी बांह वाहे गुरू ,  
हर पल जपां तेरा नाम वाहे गुरू



सतगुरु ने चुपके से मेरे कानों में,  
एक नया, राज नया बताया है,  
आत्म रूप हूं, मैं तो ब्रह्म रूप हूं—२

ब्रह्म हूं, विष्णू हूं, शिव भी हूं,  
आत्म रूप .....  
आनंद हूं अनंता हूं, एक ही हूं  
आ० .....  
निर्मल हूं, निश्चल हूं, निरंजन हूं  
आ० .....  
जड भी हो, चेतन हूं, पूर्ण हूं  
आ० .....

आओ तुम्हें कानों में सुनाऊं मैं  
राज नया, इक बात नई बताऊं मैं  
आ० रूप हूं, तुम भी ब्रह्म रूप हो,  
तुम भी ब्रह्म रूप हो।





सतगुरू पाया ते हो गईया निहाल नी संइयों,  
शीष निवाया ते सतगुरू मेरे नाल नी संइयों

नी मैं भजदी सा जंगला पहाडा  
नी मैं लबदी सा मंदरा मसीदा  
ओ अंदर बैठे दा आया न ख्याल नी संइयो। सतगुरू ...  
जदो पुछया ते कुछ वी ना बोलया,  
जदो बोलया ते भेद सारा खोलया,  
गला करदा है हस हस मेरे नाल नी संइयों। सतगुरू.  
ओखे वेले मैं जदो वी पुकारया  
बांह पकड के पार उतारया  
ओ ता सहदां ए अंग संग मेरे नाल नी संइयो। सतगुरू ..  
पुछना चावां ते वाणी विचो आ गया  
दसना चावां ते जवाब अंदरों आ गया  
मुस्करावां ते करा शुकराने नी संइयों। सतगुरू ....  
ओ ता रखदा है पल पल दा ख्याल नी संइयों  
ओ तां रहदा है हर पल मेरे नाल नी संइयों  
सतगुरू प्यारे दे नाल मेरा प्यार नी संइयों  
दर्शन पाया ते हो गईया निहाल नी संइयों। सतगुरू ....



सतगुरू मेरे हैं मस्ताने, लांदे सबनू ठीक निशाने  
मस्ती फिर एइयो झलकायें, न कोई इच्छा ते  
नो कोई चाह,  
हर वेले बोलो वाह भई वाह.....

मैखाने दी ताकी लाई  
पी गए इको डिग लगाई  
मस्ती फिर इको झलकाई  
न कोई इच्छा ते.....  
चाहे सुख दुख भी आ जाए  
इसे मैं मान समझ अपनाऊ  
फिर भी यही आवाज लगाए  
न कोई इच्छा.....

मिल गई सच्ची शहनशाई  
पास न होवे धेला पाई,  
मस्ता एयो आवाज लगाई,  
न कोई इच्छा ते.....  
सतगुरू मेरे है मतवाले, पीदे अमृत वाले प्याले  
पिलादे अमृत वाले प्याले  
पीकर यही आवाज लगाई, न कोई इच्छा ते न  
कोई चाह, हर वेले बोलो वाह भई वाह.....



संता दा संग बडे पागा नाल मिलदा,  
पादे ने कोई पागा वाले,  
संता दे घर विच मौज बहारा,  
लुटदे ने कोई पागा वाले।  
कई जन्मा दा जे पुन होवे  
ता संता दा दर्शन होवे,  
संता दे संग नाल तरे अनेका  
तरदे ने कोई पागा वाले। संता .....

जो संता दी शरणी आए  
बिछडियां रूहां मेल करवाएं  
युगा तो बिछडया राम मिलादे  
मिलदे ने कोई पागा वाले। संता .....

संत दी इच्छा ते तृष्णा है बुझ गई  
जग विच आए तारण दी सुझ गई  
मरदे दे संग नाल मरे अनेका  
मरदे ने कोई पागा वाले। संता .....

संत ते रब दा रूप ही है  
रूप विच ओ अरूप ही है  
उसका घडा ते छलके है हर पल,  
नहादे ने कोई पागा वाले। संता .....

नाम दा रंग इस जीव ते पाइये  
ब्रह्म ही है तू इस नू बता दे।  
सच दा सौदा देवन नू आंदे,  
लेंदे ने कोई पागा वाले । संता .....



साधो चुप का है विस्तार—२  
धरती चुप है, पवन भी चुप है  
चुप है चांद सितारा  
अग्नि चुप है, गगन भी चुप है  
चुप है सृजनहारा । साधो .....  
मंदिर चुप है, मस्जिद चुप है  
चुप है मंदिर भी सारा,  
वेद—पुराण ग्रंथ सब चुप है  
चुप है जहानू सारा। साधो .....  
पहले चुप थी, पीछे चुप है  
जाने जाननहारा,  
ब्रह्म चुप है, विष्णु चुप है  
चुप है शंकर प्यारा । साधो .....  
पर्वत चुप है, नदिया चुप है,  
चुप है गुरु का द्वारा  
ब्रह्मानन्द जो चुप में चुप है  
मिल जाये सुख सारा । साधो .....  
हम भी चुप है, तुम भी चुप हो,  
चुप है सकल संसारा,  
सर्वानंद जो चुप में चुप हैं,  
चुप में करें दीदारा। साधो .....



सतगुरू मैं तेरी पतंग  
हवा विच उडदी जावांगी  
ओ श्यामा डोर हथों छडी ना  
मैं कटी जावांगी।  
बडी मुश्किल दे नाल मिलया  
मैनु तेरा द्वारा ऐ—२  
मैनु इको तेरा आसरा नाल तेरा सहारा ऐ,  
हुन तेरे ही भरोसे हवा विच उडदी जावांगी  
ओ श्यामा.....  
हुन चरणा कमल नालो  
मैनु दूर हटाई ना—२  
इस झूठे जग दे अंदर मेरा पेचा लाई ना,  
जे कट गई ता सतगुरू फिर मैं लुटी जावांगी  
ओ श्यामा.....  
हुन मलया बुआ आके  
मैं तेरे द्वारे दा—२  
हथ रख दे तू इक वारी मेरे सिर ते प्यार दा  
फिर जन्म—मरण दे फेरे तो मैं बचदी जावांगी  
ओ श्यामा.....



सईयो नी सोहनी सूरत वाला  
सारे जग तो निराला मेरा पी

चन जय मुखडे तो वारी मैं जावां  
वारां मैं लाल ही लाल  
सौदा रूहां दा इक दारू मेरा सतगुरू  
रज के कर लो प्यार  
सईयो नी मेरे मन दे अंदर  
वस गई सोहनी तस्वीर.....

अम्बर इसदी आरती करदा  
लेके सूरज तो ताप  
लुक चंदा बदला तो झांतियां मारे  
पांदा ए प्रभु नू ज्ञात  
सईयो नी ऐना दा लड पकड लो  
करदे ने भव तो पार.....

रत्नमिल सारे गुरू शरणी आओ  
अपने मन दी ज्योत जगाओ  
सईयो नी मेरा सतगुरू प्यारा  
लांदा ऐ हृदय दे नाल  
सईयो नी गुरू बनके आया है साकार.....



सतगुरू प्यारे ने कितने बचाया है  
हंसने लगी जिंदगी, मन मुस्कराया है।

दिव्य दृष्टि देकर, अंधेरा मिटाया है  
नजरे नूरानी से स्वरूप लखाया है  
गिर गए थे हम तो, गुरू ने बचाया है। हंसने.....

अवगुण नहीं देखे, गले से लगाया है  
अनमोल खजाना देकर, बादशाह बनाया है  
विषयों के कीचड़ में, गिरने से बचाया है। हंसने.....

मुरझाया मन का चमन, गुरू ने खिलाया है  
भूल गये थे हंसना, गुरू ने हंसाया है  
संसार सागर से, गुरू ने तराया है। हंसने.....

मन पर जन्मों कर गफलत का पर्दा था  
दुई का पर्दा हटा कर, नींद से जगाया है  
कैसे भूलूं रहमत, तन मन चमकाया है। हंसने.....



साडे वेडे विच पैन लशकारे हां लशकारे  
साडे धर, राम आ गए कि साडे धर राम आ गए  
कदी वेडे टपां कदी टपां मैं चौबारे, कि.....

१ सुन के आवाज तेरी, आत्मा वी डोली ए  
साडे घर उतरी इक सतां दी टोली ए  
मैं ते वेख रहीयां अजब नजारें, कि साडे घर..

२ आज साडे वेडे विच, सतगुरू आए  
रहमतां ते खुशियां दा मीह बरसाए  
आज हो रही लीला अपरमपार, कि .....

गुरू महाराज मेरा कृष्ण मुरार है  
नीवां नीवां चोला उसदा जलवा कमाल है  
सारी संगत बोले जय जय कारे कि साडे.....

३ आत्मा मेरी ने वर फर पाया है  
मुदतां दा बिछुडया होया शाम घर आया है  
मेरे जग पये भाग सितारे, कि साडे घर.....





सानू रोग लान वालया—२  
कदी टकरे ते हाल सुनावा—२

अख लाई मैं जदों दी तेरे नाल.....  
अख लावा अख ना लगे।

गल मुकी ना सजन नाल मेरी—२  
रबा मेरी रात मुक गई—३  
मेरी खुल गई पटख देखो अख जी—२  
गली दे विचो कौन लंगया—२  
गली दे विचो मेरा प्यारा लंगया..

सानू मिल गई खुदाई चना सारी—२  
तेरे नही ख्याल भुलदे—२

आप यार बिना नइयो रहदा—२  
सानू कहदां चंगी गल नहीं  
वादा करके सजन नहीं आया  
उडीका विचो रात लग गई—२

राझां चौंदवी दे चंद नालो सोना—२

ओए नी एन्नु झांकदी रवां—२  
माय की करां मैं मनके तेरा कहना—२  
रांझा ते मेरा रब वरगा—२

कदी टकरे ते हाल सुनावां, सानू रोग लान वालया।



संझयोनी मैं प्रीतम पिया को मनाऊंगी

नयन हृदय का करूंगी बिछौना  
प्रेम की कलियां बिछाऊंगी  
तन मन धन की भेंट करूंगी  
हो मैं खूब मिटाऊंगी  
बिन पिया दुख बहुत होवत है  
बहू जून भरमाऊंगी  
भेद—भाव को दूर छोडकर  
आत्म भाव जगाऊंगी  
जो कहे पिया नहीं माने मेरा  
मैं आप गले लग जाऊंगी  
पिया गल लागी हुई बडभागी  
जन्म—मरण छुट जाऊंगी  
पिया गल लागे सब दुख भागे  
पिया विच लय हो जाऊंगी  
पल भर भी इसको न रूसाऊंगी।



साधो, सो सतगुरू मोहे भाये  
सत्य नाम का भर—२ प्याला,  
आप पिये और मोहे पिलाये

मेले जाई न महंत कहाए  
पूजा भेंट ना लेवे  
माया को सुख दुख कर जाने  
संग न स्वप्न चलाए

परदा दूर करे आंखो का  
ब्रह्म का दर्श कराए  
जाके दर्शन साहिब तरसे,  
अनहद शब्द सुनाए

निश दिन सतसंग में जो राचे  
शब्द में सूरत समाए  
कहे कबीर ताको भय नाहि  
निर्भय पद दशार्ये  
साधो सो.....



सतगुरू सतगुरू बोल मेरे मनवा  
इधर—उधर मत डोल मोरे मनवा  
भवसागर की गहराई में,  
मोती—२ रोल मोरे मनवा,  
मधुर—२ रस धोल.....

इस काया की प्याली में तू  
ओम नाम रस घोल मोरे मनवा,  
मधुर—२ रस धोल.....

दिल देकर दिलबर मिलता  
ज्ञान तराजू तोल मोरे मनवां,  
मधुर—२ रस धोल.....

गुरू श्रदा गुरू भक्ति प्रथम कर  
फिर निज हृदय टटोल मोरे मनवा,  
मधुर—२ रस धोल.....

गुरू मुख से जब ज्ञान मिले तब,  
कर आनन्द कलोल मोरे मनवा,  
मधुर—२ रस धोल.....



सुनो मेरे प्यारे, सुनो मेरे प्रेमी  
कबीरा बिगड़ गयो रे ..२

दूध भी बिगड़ो दहिया के संग में  
बिगड़—२ वो तो माखन भयो रे ..

लोहा भी बिगड़ो, पारस के संग में  
बिगड़—२ वो तो, कंचन भयो रे ...

मैं भी बिगड़यो संतन के संग में  
बिगड़—२ मैं तो संतन भयो रे  
जब मेरी प्रीत गुरू संग लागी  
नाम खुमारी तब से चढ़ी है  
कहत कबीर सुनो भई साधो ...



सब दे अंदर राम दिल न दुखाई किसी दां

दिल न दुखाइए ते आनन्द पाइए  
भली करे करतार। दिल न दुखाई किसी दा

मैं मेरे दे वल ना जाइये  
अंदर झाती मार। दिल न दुखाई...

मीठा—२ बोलिये ते नींवा—२ चलिये  
चित्त वचना दे नाल। दिल न ...

भला कहे कोई बुरा कहे जी  
तू रहना खुशहाल। दिल न दुखाई...

सिमर—२ तू राम हरि दां  
हो जा मालामाल दिल न दुखाई...

कहत कबीर सुनो रे लोई  
जहां रहना दिन—चारा। दिल न ....



सब गोविंद हैं —२ , गोविंद बिन नहीं  
कोई—२, सब...

अब तब जब कब तू ही तू ही—२  
ओत प्रोत प्रभ ओही सब गोविंद...

एक अनेक व्यापक पूर्ण  
जित देखूं तित ओई  
जल तरंग फेन बदबुदा  
जल तो बिन न होई सब गोविंद है....

कहत नामदेव हरी की रचना  
देखो हृदय विचारी  
घट—२ अंतर सर्वनिरंतर  
केवल एक मुरारी सब गांविंद है

गोविंद प्रीत लगी अति मीठी  
अबर बिसर सब जाई  
अन दिन आनन्द भया घट अंदर  
ज्योति ज्योत मिलाई सब गोविंद है ....



सुना है एक सौदागर आया,  
बेचे सुंदर लाल सखी  
घर—२ जा वो अलख जगावे,  
खुद है लालो लाल सखी

जो कोई लाल अमोलक चाहे  
ले जावे ततकाल सखी  
मैं भी लाल खरीद के लाऊं  
आया मन में ख्याल सखी — सुना ...  
झट ही उसने यह कह दीना  
यह है महंगा माल सखी  
इसकी कीमत दे न सके  
तू झूठा करे सवाल सखी — सुना...  
तुझ को कदर न लाल की प्यारी,  
कितने बीते साल सखी,  
सीस उसनों भेंट चढ़ावे,  
तब पावे यह लाल सखी, — सुना ...  
बात सुन मैंने सौदा किया,  
मैं तो भया निहाल सखी,  
प्रेमानंद जो सिर देने से,  
मिले तो सस्ता जान सखी, — सुना ...





हर श्वास में हो सिमरन तेरा,  
यूं बीत जाये जीवन मेरा,  
ऐसा सुंदर न्यारा, प्यारा जीवन हो मेरा  
वंदना तेरी में बीतें सांझ और सवेरा, यूं बीत..

नैनो की खिडकी से तुझे, पल—२ मैं नहारूंगी  
मन में बिठाकर तेरी आरती उतारूंगी,  
डाले रहूं तेरे चरणों में डेरा, यूं बीत.....  
हर श्वास.....

प्यार हो, सत्कार हो, एतबार बस तुम्हारा हो,  
सुख दुख आये जायें, तेरी याद का सहारा हो,  
हो आ० पे तेरा ही डेरा, यूं बीत जाये.....  
हर श्वास.....

मोहनी मुस्कान वाला, मेरे दिल का प्यारा है,  
मेरे सिर का ताज, मेरी आंखों का तारा है,  
सबमें निहारूं, रूप मैं तेरा, यूं बीत जाये,  
हर श्वास में.....



हमारे गुरु मिले ज्ञानी, पाई अमर निशानी

कागा करत गुरु हंसा कीना, दीनी नाम निशानी  
हंसा पहुचें सुख सागर में, मुक्ति भरे जहां पानी

जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी  
विकसे ओ कुंभ जल माही, समायो ये गत विरले जानी

है यथा साह सनतन में, दरया लहर समानी  
धीवर डाल जाल क्या करती, जब मीन पिघल भई पानी

अनुभव का ज्ञान उजवत्ता की वाणी  
ये है अकथ कहानी, कहत कबीर सुनो भई साधू  
जिन जानी तिन मानी।



हर गुरू मुख सतगुरू दी अखियां दा तारा है  
जिवें गली नू होंदा ए, हर बूटा प्यारा ऐ।

तक हासे संता दे ओ तूनां हसदा ऐ  
किसे अख दे विच हंजू, ओ वेख न सकदा ए  
वखरा इस दुनियां तो उसदा वरतारा ए। जिवें..

जद बोल कोई कडवा, मेरे भक्त नाल बोले,  
मेरे जोगी सतगुरू दा, उस वक्त हृदय डोले,  
कोई गल प्यार बाजों न इसनू गवारां ऐ।

युग बदल गये संतो, युग ही पहचान करो।  
खुश करके संता नूं तुसी जानी जान बनो  
उदे वचना विच लुकया साडा सुख सारा ऐ।

छडके वडियाईयां नूं, तुसी सेवादार बनो  
फिर उसदी रहमत दे भक्तों हकदार बनो  
भक्तां तू समझ लवीं कि उसदा इशारा ऐ।  
जिवें .....



हरि ओम हरि ओम गाइये—२  
किना सोडा मुख है दिता  
गुरु दी महिमा गाइये — हरि ओम .....  
किन्ही सोडी अंखा दितिया  
गुरु दा दर्शन पाइये — हरि ओम .....  
किने सोडे कान है दिते  
अनहद नाद सुनाये — हरि ओम .....  
किने सोडे पैर है दिते  
गुरु दे द्वारे जाइये, हरि ओम .....  
किने सोडे हाथ है दिते  
गुरुदी सेवा करिये, हरि ओम .....  
किना सोडा मन है दिता  
ज्योत से ज्योत जलाइये, हरि ओम .....  
किना सोडा हृदय दिता  
गुरु नू विच बिठाइये , हरि ओम .....  
किना सोडा जीवन दिता  
जीवन मुक्ति पाइये — हरि ओम .....  
किनी सोडी श्वासा दितिया  
सिमर सिमर सुख पाइये — हरि ओम .....  
किनी सोडी संगत दिती  
जोत से जोत जलाइये  
किन सोडा सतगुरु दिता  
सदके सदके जाइये — हरि ओम .....



हे दयालु प्रभु, हे कृपालु प्रभु,  
हृदय में सदा वास तेरा रहे

तेरे संग में रहे, तेरे रंग में रहे  
हर घडी हमको एहसास तेरा रहे

कोई शिकवा न हो, ना हो कोई गिला  
और मजबूत विश्वास तेरा रहे

मुख ये गाए प्रभु, तेरी महिमा सदा  
लब पे सुमिरन हर इक श्वास तेरा रहे

चाहे चेहरे हजारों ये देखे नजर  
सामने चेहरा इक खास तेरा रहे

तन से सेवा सदा, मन से सुमिरन तेरा  
जिंदगी कर हर इक श्वास तेरा रहे

है यही याचना, है यही प्रार्थना  
दाता बेजोड मन दास तेरा रहे



हीर प्रेम की डोली बै गई,  
सीने इश्क दी आग लई ला,  
हीर राझे नू तकदी चली होई, ओदे दिलदा मिलया खुदा—२  
ओखा पैदा पावे इश्क दा, मेरया राझणा—२  
प्रीतम दा सुख बडा—२  
हीर इश्क दी जोगन हो गई, सेज हंजुआ दी दिती बिछा—२  
तेरी प्रीत, तेरा इश्क, तेरी प्यार  
वेख हीर ने लिया कमा —२  
तेरी प्रीत नू दिल विच सांबया वे मेरया प्रीतमा—२  
तेरी प्रीत नू दिल विच सांबया तेरे प्यार विच मैं बिक गई हां—२  
जेडा इश्क विच तारी ला लवे, ओते हो जांदा ए फना—२  
तेरे इश्क दा जादू जिनू वी चढ जाए  
फिर वा रती वी बचया ना —२  
सइयो प्यार जद हद तो वद जाए, वे मेरया सजना—२  
सइयो प्यार जद हद तो वद जाए, फिर कोई दिसदाना—२  
जिधर वेखा मेरे प्रीतमा हर पासे तू दिसदा—२  
तेरे प्यार विच पैके सोडया सब कुछ ही दिता भुला—२  
रांझा हीर ते हीर रांझा होई वे मेरे प्यारया—२  
रांझा हीर ते हीर रांझा होइ इक दूजे विच गए समा—२  
ओखा पैदा है पावे इश्क दा, प्रीतम दा सुख बडा—२  
हीर रांझा ते रांझा हीर होई—२  
इक दूजे विच गए समा—२



हे गोपाल राधा कृष्ण गोविंद—२  
कृष्णा गोविंद—२,  
रसना पे अगर तेरा नाम रहे  
जग पे फिर नाम रहे ना रहे  
मन मंदिर में घनश्याम रहे  
झूठा संसार रहे न रहे  
दिन रैन हरि का ध्यान रहे  
कोई और फिर ध्यान रहे ना रहे  
तेरी कृपा का अभिमान रहे  
कोई और अभिमान रहे ना रहे—२  
गोपाल राधा कृष्ण गोविंद—२—२

तुम बंसी बजाओ, नचाओ मुझे  
पग घुंघरू न बांधू ये मुमकिन नहीं,  
आग तुमने लगाई मिलन की हरि..  
बिना तेरे बुझाए ये तो मुमकिन नहीं  
रंग दिया मुझे अपने रंग में मुझे सांवरे,  
रंग दूझा चढे, ये तो मुमकिन नहीं  
बागवा तुम मेरे,, मैं तुम्हारी कली  
फिर भी मैं न खिलूं ये तो मुमकिन नहीं—२,  
हे .....

तुम्हें दे दूं और दिल भी संभाले रहूं  
ऐसा कर पाउंगी ये तो मुमकिन नहीं  
फिर भी चित्तवन से तुम मुझको घायल करो,  
मैं खुद को बचा लूं, ये मुमकिन नहीं  
सामने तुम रहो, मैं निहारूं तुम्हें,  
फिर भी प्यासी रहूं, ये मुमकिन नहीं  
तुम नैना से नैना मिलाये रहो,  
मैं पलके गिरा दूं ये मुमकिन नहीं  
हे गोपाल ....

तुम दिलबर मेरे, मैं दीवानी तेरी,  
जान तुम पर न वारूं ये मुमकिन नहीं  
मिल जाए तेरा दर तो मैं सजदा करूं  
सर दर से उठा लूं, ये मुमकिन नहीं  
कृपा क्या ये कम है ओ सतगुरू मेरे,  
जो चरणों में तेरे ठिकाना मिला  
बड़े भाग्यशाली हैं वो तेरे बंदे,  
जिन्हें आपसा आशियाना मिला है  
हे गोपाल ...



मेरा यार नंद नंदन हो चुका है  
वो जान हो चुका है जिगर हो चुका है  
ये सच जानिए उसकी हर इक अदा पर —२  
जो कुछ पास था वो नजर हो चुका है—२  
जगत की सभी खूबियां मैंने छोड़ी  
जो दिल था इधर अब उधर हो चुका है  
वो उस मस्त की खुद ही लेता खबर है—२  
जो उसके लिए बेखबर हो चुका है—२  
गोपाल .....

असी अपना श्याम मनावार्गे  
सादो जगत मनाया नहीं जांदा  
असी अपना श्याम रिझावांगे—२  
सादो जगत रिझाया नहीं जांदा  
असी शाम दे हां शाम साडा ए  
ऐ भेद छिपाया नहीं जांदा  
इस दिल विच सूरत श्याम दी ऐ—२  
कोई होर बसाया नहीं जांदा—२  
गोपाल .....

सारे जग दी खुशियां इक पासे  
मेरा श्याम प्यारा इक पासे  
दुनिया दा चानन इक पासे—२  
मेरा श्याम उजियारा इक पासे—२  
की इसदा हाल सुनावा मैं  
कुजे विच दरिया नू पावां मैं  
लखां गहरे समुद्र इक पासे—२  
ऐदे दिल दा किनारा इक पासे—२  
गोपाल.....

सानू लोड की सारे जमाने दी—२  
इक श्याम प्यारा काफी है—२  
असी सारे सहारे छड दिते—२  
इक तेरा सहारा काफी ऐ  
प्रहलाद दी बिगडी बनाई सी  
नरसी दी हुंडी तराई सी  
तू चाहे ता पल विच पार करे—२  
तेरा इक इशारा काफी है—२  
गोपाल.....

आपके दर पे रख के उठाउ जो सर,  
ये इबादत को मेरी तराना मिला है  
ओ मुर्शिद मैं रहमत के सद्के तुम्हारी,  
जो चरणों में सर को झुकाना मिला है,  
मेरी हालत पे सतगुरू कर्म है किया,  
जो चरणों में तेरे ठिकाना मिला है  
वो क्या जन्नत की परवाह करेंगे  
जिन्हें आपका आशियाना मिला है—२  
हे गोपाल.....



है प्रेम जगत में सार, और कोई सार नहीं,  
तू करले प्रभु से प्यार, और कोई प्यार नहीं ...

कहा घनश्याम ने उधव को वृंदावन तनिक जाना,  
वहां की गोपियों को ज्ञान का कुछ तत्व समझाना,  
विरद की वेदना में वे सदा बैचेन रहती हैं  
तड़प कर आह भरकर और रो—२ यूं कहती हैं, है...

कहा उधव ने बढ़कर मैं अभी जाता हूं वृंदावन  
जरा देखूं कि कैसा है कठिन अनुराग का बंधन  
हैं वो कैसी गोपियां जो ज्ञान बल को कम बताती हैं  
निरर्थक लोक लीला का सदा गुणगान गाती है...

चला मथुरा से कुछ दूर वृंदावन निकट आया  
वहीं से प्रेम ने अपना आप अनोखा रंग दिखलाया  
उलझ कर वस्त्र कांटो में लगे उधव को समझाने  
तुम्हारा ज्ञान परदा फाड़ देंगे प्रेम दीवाने, है...

वृक्ष झुक—२ कर यूं कहते थे इधर आओ—२  
पपीहा कह रहा था पी कहां है ये तो बताओ  
नदी यमुना की धारा शब्द हरि—२ का सुनाती थी  
भंवर गुंजार से भी ये मधुर आवाज आती थी है...

गरज पहुंचा जहां यो गोपियों का जिस जगह मण्डल  
वहां थी शांत पृथ्वी वायु धीमी ओम था निर्मल  
सहत्र गोपियों के मध्य थी राधका रानी  
सभी के मुख से रहकर निकलती थी यही वाणी है...

कहा उधव ने हंसकर मैं अभी मथुरा से आया हूँ  
सुनाता हूँ संदेशा श्याम का जो साथ लाया हूँ  
जब कि आत्म सत्ता ही अलख निर्गुण कहलाती है  
तो फिर क्यों मोह वश होकर व्यथ में जान जात है, है...

कहा राधा ने हंसकर तुम संदेशा खूब लाये हो,  
मगर ये याद रखना, प्रेम की नगरी में आये हो,  
संभालो योग की पूंजी, न हाथों से निकल जाये  
कहीं विरह की अग्नि में ज्ञान की पोथी न जल जाये, है...

हो अद्वैत कायल तो फिर क्यों द्वैत लेते हो,  
अरे खुद ब्रह्म होकर, ब्रह्म का उपदेश देते हो,  
अगर निर्गुण हैं तुम हम तो कौन लेता है खबर किसकी  
अलख हम तुम हैं तो कौन लखता है खबर किसकी है...

अभी तुम खुद नहीं, समझे कि किसको योग कहते हैं  
सुनो इस तोर योगी द्वैत में अडेल रहते हैं  
उधर राधा बनी मोहन, कन्हैया की जुदाई में  
उधर मोहन बना राधा वियोगिन की जुदाई में, है...

सुनी जब अद्वैत की बातें खुली उधव की तब आंखे  
पड़ी थी ज्ञान—मंद की धूल जिस में वो धूली  
हुआ रोमांच तन में बिंदू आंखों से निकल आया  
पड़ श्री राधका पग पर कहा गुरु मंत्र यह पाया है प्रेम...

दिन रात बतेरा शुकर करां

पल—२ मैं तेरा शुकर करां



है हक हकीकी इश्क में पागल मुझे बना दे  
मोहब्बत का जाम भर—२ इतनी मुझे पिला दे ...

इतना पिला दे साकी, रहे कुछ न होश बाकी  
देखूं जिधर तू ही तू, अब गेरियत मिटा दे..

मुझे अकल हुनर की बिल्कुल नहीं तमन्ना .  
ओ प्यारे ..

जो इलम पास मेरे उसको भी तू भूला दे। ...  
चढ़कर नशा न उतरे, कयामत ही क्यों न आए,  
ओ प्यारे

हर दम रे ये कायम, ऐसा तू रंग जमा दे ...

दुनिया की दौलत ने बेशुमार हमको लूटा..  
ओ प्यारे

तेरे प्यार की दौलत को हम तो यूं ही लूटा दें ।

रहमत का अपनी इतना तोहफा तू हमको दे दे  
जब तक रहे जहां में तुझको न भूल पायें।



है राम नाम रस झीनी चदरिया  
झीनी रे झीनी — राम नाम रस ...

अष्टकमल का चरखा बनाया,  
पांच तत्व की यूनी—२  
नौ दस मास बुबन को लागे,  
मूर्ख मैली कीन्ही

जब मेरी चादर बुनकर आई,  
रंगरेज को दीन्हीं...  
ऐसा रंग रंगा रंगरेज ने,  
लालोलाल कर दीन्हीं

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने पहनी,  
शुकदेव ने निर्मल कीन्हीं,  
दास कबीर ने ऐसी पहनी,  
ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया,  
झीनी रे ...  
है राम नाम .....



हर वक्त हंसी, हर वक्त खुशी  
हर वक्त अमीरी है बाबा  
जब आशिक मस्त फकीर बना  
फिर क्या दिलगिरी है बाबा—२  
दिन को सूरज की महफिल है  
रात तारों की बारात बाबा—२  
हर रोज मेरे लिए होली है  
हर रात मेरी दीवाली है...  
हर रोज मेरे लिए शादी है  
हर रोज मुबारक वादी है  
हर रोज नई गुलजारी है  
ये ज्ञान की इक फुलवारी है...  
हम आशिक उसी सनम के है  
जो दिलबर सबसे आत्मा है  
दिल उसका ही दीवाना है  
मन उसका ही मस्ताना है  
धरती मेरा ये बिस्तर है  
आसमान मेरे लिये चादर है  
हर रोज मेरे लिए आजादी है  
हर रोज सुनहरी रात बाबा....





हम तेरे बिन अब रह नहीं सकते  
तेरे बिना क्या वजूद मेरा  
तुझसे जुदा अगर हो जाएंगें तो  
खुद से ही हो जाएंगें जुदा  
क्योंकि तुम ही हो, अब तुम ही हो  
जिदंगी अब तुम ही हो,  
चैन भी, मेरा दर्द भी, मेरी आशिकी  
अब तुम ही हो...

तेरा मेरा रिश्ता है कैसा  
इक पल दूर गंवारा नहीं  
तेरे लिए हर रोज है जीते  
तुझको दिया मेरा वक्त सभी  
कोई लम्हा मेरा न हो तेरे बिना,  
हर सांस ये नाम तेरा .... क्योंकि तुम..

तेरे लिए ही जिया मैं  
खुद को जो यूं दे दिया है  
तेरी वफा ने मुझको संभाला  
सारे गमों को दिल से निकाला  
तेरे साथ मेरा है नसीब जुड़ा  
तुझ पाके अधूरा रहा ना .... क्योंकि ..



अपना बना के तूने एहसास कर दिया है  
ये तेरा शुक्रिया है —२

दुनिया है ऐसा सागर, जिसमें जहर भरा है,  
नफरत को मिटाए, वो तेरा रास्ता है  
तेरी रहमतों ने आके, हमको बचा लिया है  
ये अपना बना .....

मैं क्या थी क्या बनी हूं, औकात मैं न भूलू  
तूने मुझे बनाया , ये बात मैं भूलूं  
जो कुछ है पास मेरे, तूने ही सब दिया ।  
ये अपना बना .....

अब इम्ताहान ना लेना, ऐसी ही बक्शी जाऊं  
बल दे दो सतगुरु इतना, तेरा प्रेम निभाऊं  
तेरी रहमतों का सागर, मैंने सदा पिया है।  
ये. अपना बना .....



ओ रे ज्ञान मिले, गुरु के मुख से  
गुरु मिले सतसंग से, सतसंग मिले प्रेम लग्न से,  
कोई जाने ना । ओ रे ज्ञान .....

मन से बुद्धि परे है बुद्धि से आत्मा —२  
तेरी हर श्वास में है, रमता परमात्मा—२  
ओ मनवा रे, तेरी हर श्वास में है रमता परमात्मा  
कैसे मन बुद्धि से तू बहा जाने न,  
ओ रे ज्ञान .....

सागर के तट पर पे खडा है, पानी तू पाये न—२  
मुक्ति की राह खडा है, मंजिल तू पाये न—२  
ओ मनवा रे .... मुक्ति की राह खडा है मंजिल तू  
ऐसे अचरज जीवन को तू, क्यों जान पाये न  
ओ रे ज्ञान .....

तेरी हर धडकन कहती, श्वासों की कीमत कर  
जीवन पूंजी को खाए, माया की दीमक—२  
ओ मनवा रे ..... जीवन पूंजी को खाए माया की दीमक  
बिना गुरु इसकी कीमत, कोई जाने न ।  
ओ रे ज्ञान .....



अजब प्याला इबायत का जो सतगुरू ने पिलाया है  
अजब रंगत, अजब मस्ती अजब नशा सा छाया है

नशा इक बूंद का काफी, लबालब पी गए प्याले  
भय में डूब गई आंखें तो दुनिया को भुलाया है।

जुंबा गूंगी हुई इस जान के दिल को होश है बाकी  
जिधर देखूं तू ही तू है जा हर शय मे समाया है

खुदी की वेख काटी है, दुई का हो गया खातम  
हुआ जब साफ आइना, अक्स अपना दिखाया है।

जुदाई और वसल यह था के दिल का वहम ही सारा  
गई जब होश उड सारी तो खुद में ही पाया है।

नशे में अक्ल गुम कर दी जब राम के कूचे  
सतगुरू आप में गोता डुबावों में लगाया है।



अखियों करो दर्शन, सतगुरू आये  
सतगुरू आए मेरे भाग्य जगाए  
अखियों करो.....

मैं मर जावां, मेरिया जीवन अखियां  
ऐ अखियों तो मैं गुरू दर्शन लई रखियां  
अखियों करो.....

ऐना अखियां तो मैं जिन्द जान वारा  
ऐना अखियां तो मैं गुरू नू निहारा  
अखियों करो.....

ऐना अखियां ने कर्म कमाया  
जग दा वाली अज साडे घर आया  
अखियों करो.....

दुनिया नू वेख वेख थक गई अखियां  
दर्शन कीत अज, रज गईया अखियां  
अखियों करो.....



आ श्यामा तेरे ते रंग पावां  
होलियां दा बदला मैं अज लावां

टाल मिटौल क्यों कर दे हो,  
खेलन से क्यों डरते हो—२  
जाने ना दूंगी मैं श्यामा—२ होलियां

ऐसी गल सुनके श्याम हसया—२  
गवाल बाल दे विच जाके छुपया,  
पकडो—२ दौड गए ने श्यामा  
होलियां.....

रल मिल सखिया ने श्याम फडया—२  
फड के गुलाल ओदे मुंह ते मलबा,  
फेर पुछया ने रंग होर लावां—२  
होलियो.....

छडदे लाल ते गुलाबी रंग नू—२  
सांवरे सलौने रंग रंगो मन नूं—२  
मैं सांवरे दे रंग विच रंग जावां—२  
होलियां.....



अमर आत्मा सच्चिदानंद में हूं  
शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम्  
अखिल विश्व का जो परमात्मा है  
सभी प्राणियों का वही आत्मा है  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्  
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये  
गलाए ना पानी ना मृत्यु मिटाये  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्  
अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया  
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्  
अमर आत्मा है मरणशील काया  
सभी प्राणियों के जो भीतर समाया  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्  
है तारों सितारों में प्रकाश जिसका  
है सूरज और चंद्रा में आभास जिसका  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्  
जो व्यापक है कण—कण में है वास जिसका  
नहीं तीन कालों में है नाश जिसका  
वही आत्मा सच्चिदानंद मैं हूं ... शिवोहम्



अलख धाम की है तू धारा जपले ओम—ओम प्यारा  
पांच तत्व का देखन हारा तीन गुणों का साक्षी प्यारा  
चेतन है चमकारा जपले ओम—ओम प्यारा

सत्चित आनन्द तेरा रूप तू ही साक्षी ब्रह्म स्वरूप  
तेरा तुझ में साई प्यारा जपले ओम—ओम प्यारा

जागो—जागो करो विचार अपने ज्ञान की करो संभाल  
ऐसा अमोलक श्वास न जाए जपले ओम—ओम प्यारा  
हरि ओम हरि ओम हरि ओम बोल

मन का मंदिर मन में खेल  
मन मंदिर में है भगवान  
वही देखे जो श्रद्धावान, हरि ओम...

मन में तीर्थ गंगा जमना  
वो ही नहाए जो है सतकर्मा, हरि ओम...

ब्रह्म ज्ञान तेरे मन मंदिर में  
वो ही पाए जो शरण में आये, हरि ओम...





अंदर सतगुरां दा डेरा अंदर जोत जगदी  
अंदर पूरे गुरां दा डेरा अंदर जोत जगदी  
अंदर जोत जगदी ते निर्मल जोत जगदी  
अंदर सतगुरां ....

जेड़ा जोत नूं जगावे पहले मन अपना समझावे  
पीछे भेद गुरां दा पावे अंदर जोत ...

अंदर जोत दे लश्कारे सूरज चमकन कई हजारे  
जिस दा अंत ना पारा वार अंदर जोत ...

नी तू अंदर पाले ज्ञात जोत जगदी है दिन रात  
अंदर बैठे सतगुरू आप अंदर ...

तेरे अंदर माल खजाना ना जा ढूंढन देश बेगाना  
अंदर पाले अब तू ज्ञात ... अंदर ...

नी तू प्रभू नाल पाले प्यार, तेरा हो जाये बेड़ा पार  
ये तो झूठा है संसार.... अंदर जोत ...



अमृत है सतगुरु का नाम पीजा घोल—घोल के

अमृत पी गई मीरा बाई हो गई श्याम से प्रेम सगाई  
वो तो हो गई मतवाली प्रेम में भीग—भीग के  
अमृत है सतगुरु...

पीके राम नाम दा प्याला नाचे हरदम बजरंग बाला  
वो तो दिखलाये सियाराम सीना खोल—खोल के  
अमृत है सतगुरु...

इसका नाम बड़ा अनमोल हमको सिखलाए सतगुरु रोज  
हो जा भवसागर से पार मुख से बोल बोल के  
अमृत है सतगुरु ...

सतगुरु नाम के हीरे मोती तेरे दिल में जगा दे ज्योति  
देने वाला है दातार, देता भर भर के  
अमृत है सतगुरु...

जितनी पी सकता है पी ले, पी के तू मस्ती में जी ले  
महिमा रोम राम गाये, अनुभव ले ले के  
अमृत है सतगुरु ....



आंखें बंद करूं या खोलूं  
दर्शन तेरा ही पाऊं

जैसे लहरें नदिया संग,  
हंस खेल सागर मिल जाए  
ऐसे ही मेरे सतगुरू प्यारे  
प्रभु से मुझे मिलाये।

जैसे पानी दूध संग  
घुल मिल एको हो जाए  
ऐसे ही मेरे सतगुरू प्यारे,  
प्रभु से एकाकार करायें।

जैसे ज्योति दीपक संग  
ऊपर की ओर उठ जाए  
ऐसे ही मेरे सतगुरू प्यारे  
जीव से ब्रह्म बनाये।



ओ रहमत के दाता तू बकशीश करता जा  
मांगू दुआ मैं —२  
सहारा देता जा, शरण में लेता जा,  
मांगू दुआ मैं, मांगू दुआ  
तेरे चरण कमल में डाल रहूं डेरा—२  
तेरी एक झलक को तरसे मन मेरा—२  
यह बढती प्यास रहे, तुम्हीं से आस रहे.  
मांगू दुआ मैं—२

श्वासों की माला, जपे नाम तुम्हारा  
कभी डोल न पाये, विश्वास हमारा  
ओ करते बंदगी, ये बीते जिंदगी  
मांगू दुआ मैं—२

वो कर्म करूं मैं, जो तुझको भाये—२  
जीवन जगत ये, तेरे लेखे लग जाये—२  
ये दामन छूटे ना, ये बंधन छूटे ना—२  
मांगू दुआ मैं—२



ओम् है कर्ता विधाता ओम् पालन हार है

ओम् है दुख का विनाशक, ओम् सर्वानंद है  
ओम् है बल तेजधारी ओम् करुणानंद है।

ओम् सब का पूज्य है, ओम् का पूजन करें  
ओम् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।

ओम् के गुरु मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन  
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन

ओम् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा  
ओम् का ये जाप हमको मुक्ति तक पहुंचायेगा।



ओम अक्षर बोल, मन में अमृत घोल, ओम

मूंद ले आंखें बाहर से भीतर आंखे खोल  
उठ माया के सपने से मन में अमृत घोल

काम क्रोध जन्मे माया से भेद भाव जन्में काया से  
कर्म न कर ये जान के तू बीज न बो अभिमान के तू  
कड़वे बोल ना बोल ...

तू ही नहीं तेरा सब कुछ क्या  
तू ही नहीं तेरा सुख दुख क्या  
इंद्र जाल है ये संसार सत्य रूप तेरा प्यार ही प्यार  
ज्ञान है ये अनमोल...

करता रहे ये यत्न ऐसा हो जाए मन ये मग्न ऐसा  
हो जा एक प्रभु के संग होंगी नहीं समाधि भंग  
ब्रह्मानन्द में डोल...



ओम जपा करो, सहारा मिल ही जायेगा  
मंत्र ये महान् है, ध्यान तो धरो  
किनारा मिल ही जायेगा, ओम...

क्यूं भटक रहे हो तुम, किस के वास्ते  
कौन है यहां तुम्हारा क्या तलाशते  
मुख पे ये सवाल है कुछ जवाब दो  
इशारा मिल ही जायेगा, ओम...

कैसे बातों बातों में ढल गई उमर  
वक्त वो कहां से आये, जो गया गुजर  
देर हो गई मगर फिकर न करो  
तुम्हारा दर्द जायेगा, ओम ....

मन है मीन जान ले मोह जाल में  
स्वांस है सुखों की आशा सि पे काल है  
जन्म ये अमोल है देर नो करो  
दुबारा फिर न आयेगा, ओम ...

प्रेम के बहाव में तैरते रहो  
जीव जीव में हरी को देखते रहो  
धैर्य की डगर धरो, डर अभी तजो  
सितारा जग मगायेगा, ओम ....



अरे लोगों तुम्हें क्या है,  
या वो जाने या मैं जानूं,

वो दिल मांगे तो हाजिर है  
वो सिर मांगे तो बेसिर हूं  
वो मुख मोड़े तो काफिर हूं। या ...

वो मेरी बगल छिप रहता  
वो मेरे नाज सब सहता  
वो दो बातें मुझे कहता। या ....

वो मेरे खून का प्यासा  
मैं उसके दर्द का मारा  
दोनों का पंथ है निराला। या ....





इक मेरे शाम दे बिना, सारी दुनिया बेगानी है,  
दुनिया वाले क्या जाने, साडी प्रीत पुरानी है।

दिल साडा ले ही गया, हारां वाला सांवरियां  
ओदा वी कसूर नहीं, ओदी रीत पुरानी है  
इक मेरे .....

दिल साडा जख्मी होया, लोकी कैन्दे इलाज करे  
मैं कैया रैन दयो—२, मेरे यार दी निशानी है  
इक मेरे .....

शाम सिर मुकुट सोहे, हथ जोडी कंगना दी—२  
दिल करे बंखदी रवां, ओदी सूरत नूरानी है  
इक मेरे

मेरे दिल में आ जाओ, मेरे दिलदार वनो—२  
दिल जान वार देवेगें, असां दिल विच ठानी है  
इक मेरे .....



इक नशा तन मन में छाया है  
जबसे प्रभु प्यार तेरा पाया है

कोई हमदर्द, हमराज नहीं था जग में,  
कोई हमदम, कोई सरताज नहीं था जग में  
अब तो रहमत की तेरी छाया है, जब से प्रभु

जो भी देखे तुझे इक बार मग्न हो जाये  
जो था वीरान वो गुलजार चमन हो जाये  
प्रेम का मेघ उमड आया है  
मीठी—२ फुहार लाया है, जब से प्रभु.....

तेरी मर्जी हो तो कतरे को समुंदर करदे  
मांगने वाले को इक पल में सिंकदर करदे  
सबसे अनमोल तेरा साया है, जब से प्रभु....

आपके नूर से इक चीज भी खाली न रही  
जशने बेदाग हुआ, रात भी काली ना रही  
नूर सैलाब हो—२, नूर सैलाव उमड आया है।  
जब से प्रभु.....



इबादत कर, इबादत करन दे नल गल बनदी ए  
किसी दी अज बनदी ए, किसी दी कल बनदी ए  
उंची सोच सिर नींवा, यार तू क्यों  
ओ ये सागर जिन्हा गहरा, उन्हीं ही छल लगदी ए  
इबादत ...

जो अहं करदा हे, वे इक दिन खाक हो जाना  
तेरे तो जानवर चंगे, जिन्हां दी खल बन दी ऐ  
इबादत ...

के पीतल ओ वी है जिसदो हथियार बनदे ने  
पर वो असल पितल, जो मंदिर दा ढल बनदी ए,  
इबादत ...

जे कर मुश्किलां आवन, तेरे रस्ते, तू डोली ना,  
के मुसीबत ही दुखां दा हल बनदी ए,  
इबादत ...

इक वारी दिल नाल तू अरदास तां कर वे  
के देखी फेर तेरी, गल उसी पल बनदी ए  
इबादत ...

इन्हा रस्तयां तेनू सतिंदरा पार नहीं लाना  
ओही पगडंडी फड़ जेड़ी गुरां दे घर जांदी ए  
इबादत ....



इश्क — इश्क — इश्क — इश्क  
ये इश्क की आग लगाते हैं  
मुस्करा कर बिजली गिराते हैं  
नजर मिलाकर कयामत ढोते हैं  
अब मेरा भी जी करता है,  
डूबकर मर जाऊं इस तूफान में,  
पहले खदा पता पूछ कर पछताई है  
हुण कहंदी हां रब सानू यार मिलाया  
यार कि मिलया, रब भी अपना हो गया  
इश्क तोहम्इ है, इश्क सौगात है,  
इश्क को कबूल, हर बात है  
इश्क वरदान भी है, खुदा मेहरबान भी है  
इश्क मशहूर भी पर आशिक बेकसूर है  
इश्क खुदा की पहचान है  
इश्क दिवानों के दिल की जान है  
तेरा इश्क मेरी चाहत है  
तेरे प्रेम में इस चाहत में राहत है  
आशिक इश्क के बिना जी नहीं सकता  
दर्द इश्क का पीकर वो जी नहीं सकता  
झलक यार दी पाकर खिल जांदा है  
फिर अंदरो—२ मुस्करांदां है, (सदके यार दे..)  
जिसने इश्क नू पीता, मीठा—२ सरूर विच जिंदा



इश्का—२ अल्लाह हूँ—२  
रूके न मुश्का अल्लाह हूँ

इश्क खिले जब इश्क खिले  
तन बदन में भर जाये खुशबू, इश्का....

छावै—२, यू परछावै, चुनते—२ चलते रहना  
मोम के जाम पहने—२ धूप लगे तो चलते रहो  
छावै—२ अपने ही परछावै, चुनते—२ चलते रहो।

अंबर के चरखे की धूँ—२, सुनते रहना—२  
धागे चुन के खाली करघा बुनते रहना—२  
कच्चे पक्के धागे चुनके खाली करघा बुनते रहना  
बात की बात है सब यारा,  
दिन उघड़े फिर अंधेरा दूर ...  
इश्का—२, अल्लाह—२ ...



इक राधा, इक मीरा, दोनों ने श्याम को चाहा  
अंतर क्या दोनों की चाह में बोलो  
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी, एक——

राधा ने मधुबन में ढूंढा  
मीरा ने मन में पाया  
राधा जिसे खो बैठी वो गोविंद  
मीरा हाथ दिखाया

इक मुरली, इक पायल, इक पगली, एक घायल  
अंतर क्या दोनों की प्रीत में बोलो  
इक सूरत लुभानी, इक मूरत न लुभानी  
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी——

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर  
राधा के मनमोहन  
राधा नित श्रृंगार करे  
और मीरा बन गई जोगन  
इक रानी, इक दासी, दोनों हरि प्रेम की प्यासी,  
अंतर क्या दोनों की तृप्ति में बोलो,  
इक जीत न मानी, इक हार न मानी,  
एक प्रेम दीवानी, एक दरस दीवानी——  
इक———



इस जन्म का सही सारांश है  
तू तो शिवा शिव है—२ तू तो शिवांश है

वो मेरा है, ये तेरा है  
इस मिथ्या ने मन को घेरा है  
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले  
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है

प्रश्न भी तू और उत्तर भी तू है  
पवन में खुशबु को किसने रोका है  
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले  
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है

जीवन बस इक सपना है  
जब तन को माटी होना है  
इस सत्य को तू जान ले, पहचान ले  
तू तो शिवा शिव है, तू तो शिवांश है



ऐ मेरे प्यारे गुरू, जन्मों से बिछडे गुरू  
तुझ पे मैं कुर्बान,  
तू ही मेरी जिंदगी, तू ही मेरी बंदगी  
तू ही मेरी जान

गुरू के आंचल से जा आये  
उन हवाओं को सलाम  
गुरू के मुख से निकली वाणी को  
मेरा शत शत प्रणाम  
जितनी प्यारी याद तेरी, उतना प्यारा तेरा नाम  
मैंने मांगी तुझसे खुशियां  
तूने दिया आतम आनन्द  
मैंने सुनाया रोग अपना  
तूने मुझे निर्मल किया  
द्वेष अब किससे करूं,  
सब जगह है तेरा धाम ऐ  
ज्ञान का दीपक सदा,  
मन में मेरे जलता रहे  
एक इच्छा ना रहे,  
ये भावना बढती रहे,  
और तो कुछ भी नहीं, बस रह गया है तेरा प्यार





ऐसा जाम पिला मेरे सतगुरू  
रहे न जग की लोड  
थोड़ी जई होर पिला दे होर .....

प्रेम प्याला मीरा पीता, प्याले विचो दर्शन किता,  
दर्शन करके मीरा कहंदी, जय जय नंद किशोर

प्रेम प्याला धन्ने पीता, पत्थरा विचो दर्शन किता  
साग रोटी खवा के कहंदा, चल खेंता दी ओर.

प्रेम प्याला भीलनी पीता, बेरां विचो दर्शन किता  
झूठे बेर खुआ के कहंदी, राम मेरे है कोल....

अजे वी होश है मैनु बाकी थोड़ी जई होर पिला दे  
प्रभु तेरे विच दौडी आवा, रहे ना जग की लोड

प्रेम प्याला मैं वी पीता, बांसुरी विचो दर्शन किता  
बांसुरी की आवाज सुनके, मैं अंदरो ही दर्शन कीता .



ऐसी पोशाक मेरे यार ने पहनाई है...  
जर्ने—२ में तेरी शक्ल नजर आई है—२  
मैं बार—२ यही सोचता हूं रह रह कर  
मैं क्या थ और मुझे क्या बना दिया तुमने। ऐस...  
ये क्या सिखा दिया है, तुमने मेरी नजर को  
सजदा कर दिया, तुमने मेरी नजर को  
पहले तो चूमता था, पर्दे को मैं नजर से  
अब चूमने लगा है, ये पर्दा मेरी नजर को। ऐसी...  
दिल में, जिगर में आंख में बस तू ही तू रहे  
इसके सिवा न और कोई आरजू रहे  
मेरा सनम हमेशा मेरे रूह बरू रहे  
जन्नत है मेरी रूह को तूने जो बक्श दी  
मेरे दिल में ऐ खुदा बस तू ही तू रहे। ऐसी...  
गैर मुमकिन है तेरा मुझसे अलग हो जाना  
तेरी तस्वीर मेरे दिल मे उतर गई है। ऐसी...  
कौन सा काम तेरे जात ने पूरा न किया  
तेरी नसीयत मेरे — हर हाल में काम आई है। ऐसी...  
दुनिया सलाम करती है, हैरत की बात है  
मैं कुछ भी नहीं, सब तेरी रहमत की बात है। ऐसी...



ऐ सनम तू मेरी जान ही जान है...  
तू ही यार मेरा, तू ही भ० है—२

कोई शाहकार नहीं, शाहकार से बढ़कर,  
किसी का यार नहीं, मेरे यार से बढ़कर, ऐ...

जैसे है लगता चांद सितारों में एक है—२  
वैसे हमारा पीहूं, दुनिया में एक है—२ ऐ...

तुझे क्यों न पूजूं, तुझे क्यों न चाहूं  
मेरे मन के मंदिर का तू देवता है—२ ऐ—

तेरे दर पे सजदा है किया, तुझे अपना काबा बना लिया  
ये गुनाह है तो हुआ करे, तुझे इस गुनाह पे नाज है, ऐ..

तू मिला तो मिला, राहें हक दा पता  
मेरा सब कुछ सनम, तुझपे कुर्बान है—२, ऐ...

देखकर उनको हम, देखते रह गये—२  
रूहे महबूब तू, मेरा ईमान है—२  
तुझसे पहले मुझे जानता कौन था—२  
तेरी रहमत से ही खुद की पहचान है—२



एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पून आध रे  
संतन सेती गोष्ठी जो किन्हो सो लाभ रे

१. कबीरा मन पंछी भयो, उड़-उड़ दह दिशा जाए  
जो जैसी संग करे वैसा ही फल पाए रे।
२. कबीरा जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द  
मरने से ही पाइये पूर्ण परमानन्द रे।
३. कबीरा सुमरनी काठ की क्या दिखलाए राम  
हृदय नाम न चेतिये यह सिमरण क्या होये रे
४. कबीरा कोड़ी-कोड़ी जोड़ के जोड़िया लाख करोड़  
चलती बार ना कुछ चले लियां लंगोटी टोड़ रे।
५. कबीरा राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट  
अंत समय पछताएगा जब प्राण जायेंगे छूट रे।
६. कबीरा वैद मरा, रोगी मरा, मरा सकल संसार  
एक कबीरा मरा जिसे कोई ना रोवन हार रे
७. कबीरा माला काठ की धागा लो पिरोये  
अंदर घुण्डी पाप की बाहर राम नाम होये रे।

८. कबीरा संगत दो जने एक कबीरा एक राम  
राम तो दाता मुक्ति के संत जपावे नाम रे।
९. कबीरा वैद कहे मैं हूं बड़ा दारू मेरे पास  
ये तो वश गोपाल के जब भावे ले जाये रे।
१०. कबीर माया डोलनी पवन झकोर न हार  
संतन माखन खाया छाछ पिए संसार।
११. कबीरा कुत्ता राम का, मोती मेरा नाम  
गले हमारे जेवड़ी ज्यूं खीचें त्यूं जाये।
१२. कबीरा संगत साध की साहिब आवे याद  
लेखे में वो ही घड़ी बाकी सब बरबाद रे।
१३. कबीरा मैं क्यों चिन्ता करूं मम चिन्ते क्या होये  
मेरी चिन्ता हरि करे मुझे ना चिन्ता होये रे
१४. कबीरा कसौटी राम की झूठा टिके ना कोय  
राम कसौटी सो साहे जी मर जीवा होय
१५. कबीरा चोट सहेली सी लगी लागत लियो  
चोट सहाय शब्द की तिस गुरु का मैं दास
१६. माया मरी न मरा मर मर गए शरीर  
आशा तृष्णा ना मरी कहे दास कबीर
१७. कबीरा ऐसा व्रत लियो जो ले सके ना कोय  
घड़ी एक बिसरू राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय



ऐसी मांग गोविन्द से  
प्रीत सतसंग की, संग साधू का  
हरि नाम जप होये परम गते।  
हरि की पूजा, आत्म शरणा  
ओहि चंगा जो प्रभु जिओ करना। ऐसी ..

सफल होये ऐ मानव देहि  
जाको सतगुरू कृपा करे ही। ऐसी ...

अज्ञान भ्रम बिन से दुख डेरा  
जाके हृदय बसे गुरू पैरा। ऐसी...

साधु संग रंग प्रभु ध्याया  
कहो नानक तिन पूरा पाया। ऐसी ...

प्रीत सत्संग की, संग साधू का  
हरि नाम जप होये परम गते। ऐसी ...



ऐ री मैं तो प्रेम दीवानी  
मेरा दर्द ना जाने कोय ...

घायल की गति घायल जाने  
और न जाने कोय ...

मीरा के प्रभु गिरधर नागर  
किस विध मिलना होये ...

मीठी पीर तो तब ही मिटेगी  
जब वैध सावरिया होय ...

गगन मंडल में सेज पिया की